बरिस-4 अंक-16

www.sirijan.com

सिरिजन

तिमाही भोजपुरी ई-पत्रिका

अप्रैल-जून 2022

/jaibhojpurijaibhojpuria @sirijanbhojpuri 9801230034

सिरिजन

तिमाही भोजपुरी ई–पत्रिका
अंक-16, अप्रैल-जून 2022

प्रबंध निदेशक	:	सतीश कुमार त्रिपाठी
संरक्षक	:	1. सुरेश कुमार, (मुम्बई)
		2. कन्हैया प्रसाद तिवारी, (बैंगलोर)
प्रधान सम्पादक	:	सुभाष पाण्डेय
सम्पादक	:	डॉ अनिल चौबे
बिशिष्ट सम्पादक	:	बृजभूषण तिवारी
उप सम्पादक कार्यकारी सम्पादक सलाहकार सम्पादक	: : :	तारकेश्वर राय संजय कुमार मिश्र राजीव उपाध्याय
सह सम्पादक	:	1. भावेश अंजन
		2. अमरेन्द्र कुमार सिंह
		3. माया चौबे
		4. गणेश नाथ तिवारी
		5. राम प्रकाश तिवारी
प्रबंध सम्पादक	:	माया शर्मा
आमंत्रित सम्पादक	:	चंद्र भूषण यादव
बिदेश प्रतिनिधि	:	रवि शंकर तिवारी
ब्यूरो चीफ	:	ज्वाला सिंह
ब्यूरो चीफ (बिहार)	:	1.अरविंद सिंह, 2. मिथिलेश साह
ब्यूरो चीफ (प. बंगाल)	:	दीपक कुमार सिंह
ब्यूरो चीफ (उत्तर प्रदेश)	:	1. राजन द्विवेदी 2. अनुपम तिवारी
ब्यूरो चीफ (झारखण्ड)	:	राठौर नितान्त
पश्चिम भारत प्रतिनिधि	:	बिजय शुक्ला
दिल्ली, NCR प्रतिनिधि	:	बिनोद गिरी
क़ानूनी सलाहकार	:	नंदेश्वर मिश्र (अधिवक्ता)

(कुल्हि पद अवैतनिक बाड़न स)

स्वामित्व, प्रकाशक सतीश कुमार त्रिपाठी के ओरी से : 657, छठवीं मंजिल, अग्रवाल मेट्रो हाइट, प्लाट नंबर इ-5 नेताजी सुभाष पैलेस, सेंट्रल वजीरपुर,पीतमपुरा, दिल्ली – 110001, सिरिजन में प्रकाशित रचना लेखक के आपन ह आ ई जरूरी नइखे की सम्पादक के बिचार लेखक के बिचार से मिले। रचना प बिवाद के जिम्मेदारी रचनाकार के रही। कुल्हि बिवादन के निपटारा नई दिल्ली के सक्षम अदालत अउर फ़ोरम में करल जाई।

अनुक्रम

संपादकीय

- संपादकीय - डॉ अनिल चौबे / 4
- आपन बात - तारकेश्वर राय / 6

कनखी

- चउपट दोस्त पड़ोसी चाईं, के के दिया देखाई ? - डॉ अनिल चौबे / 8

कथा-कहानी / दँतकिस्सा

- बतकूचन - विनोद सिह गहरवार / 58
- बेटी आत्म पिहरे - अभियंता सौरभ भोजपुरिया /68

कविता

- असीस प्रेम प्रत्यय - परिचय दास / 24
- सोने के चिरइया हमार भारत - बाबूराम सिह कवि / 34
- चइता - निरंजन प्रसाद श्रीवास्तव / 34
- एगो सूफी मौज - गुलरेज़ शहजाद / 37
- हमसफ़र - गुलरेज़ शहजाद / 37
- बुड़बक बखान - सुरेश गुप्त / 38
- भोजपुरी सरसी छंद - गीता चौबे "गूँज" / 41
- अबहूँ ना अइले सजनवा - संजय कुमार राव / 41
- ज़िदगी के सफर - अखिलेश्वर मिश्र / 42
- चुनावी कविता - मदनमोहन पाण्डेय / 45
- फगुनी दोहा - मदनमोहन पाण्डेय / 45
- अइलें बसंत - हरेश्वर राय / 46
- चिरई फेर से चहकी - हरेश्वर राय / 46
- याद बा - हरेश्वर राय / 46
- दीपशलभ - मार्कण्डेय शारदेय / 47
- जिनिगी हवा के झोका हs - देवेन्द्र कुमार राय / 50
- गाई कइसन लोरी - देवेन्द्र कुमार राय / 50
- लघु कविता - दीपक सिह / 55
- केहू रूठे त - कृष्णा श्रीवास्तव / 71

गीत/ गजल

- डॉ. जौहर शफियाबादी के कुछ ग़ज़ल / 11
- आँख उनकर त - विद्या शंकर विद्यार्थी /26
- केहू कइसे कही - विद्या शंकर विद्यार्थी /26
- सजन हो साजेला करेजवा - विद्या शंकर विद्यार्थी /26
- जा ना का बतिअइबऽ तूं ? - संगीत सुभाष / 33
- ए सँवरू - संगीत सुभाष / 33
- किशोर के ग़ज़ल - कनक किशोर / 40
- उचरऽ हो कागा - हरेश्वर राय / 43
- नया बस्ती बसावल जाव - गणेश नाथ तिवारी / 43
- मंगलमाया आधारित गीत - माया शर्मा / 63
- माई सब जानेली - माया चौबे / 64
- आवऽ हे मुरारी - माया चौबे / 64
- ज़िदा बा इंसानियत - शैलेंद्र कुमार साधू / 67
- किसान बाटीं हम - नेहा त्रिपाठी / 67
- बाँकुड़ा के बलिदानी - उमेश कुमार राय / 70
- मर गइला अस चित्त के भितरी - सुधीर मिश्र / 70

पुरुखन के कोठार से

- स्व पंडित धरीक्षण मिश्र जी के कविता / 9
- राधा मोहन चौबे "अंजन" जी के कविता /10

आलेख/निबंध

- करुण रस के अप्रतिम कवि ठाकुर विश्राम सिह -डॉ। जयकांत सिह 'जय'/12
- हुकहुकी लेत लोकगीतन के पारंपरिक गवनई शैली-घाँटो- उदयनारायण सिह /35
- मन के टीस - बाबूराम सिह कवि / 44
- हमार गाँव - तारकेश्वर राय "तारक" / 56

शब्द कौतुक

- ऊख-उखारी- दिनेश पाण्डेय / 15

संस्मरण

- शास्त्री नगर - मनोज कुमार वर्मा / 27

कहाउति

- भुलात कहाउति - -माया शर्मा / 51

हँसी-ठिठोली- निरंजन प्रसाद श्रीवास्तव / 65

सतमेझरा- 1-3, 5, 53-54, 66, 72-76

भाषा के संकट.....

डॉ. अनिल चौबे
सम्पादक, सिरिजन

भोजपुरी में जबरजस्त लिखला के काम बा,जबरजस्ती ना... अब भोजपुरी भाषा के महत्व आ लोकसाहित्य के लालित्य दुनिया के सोझा आपन लोहा मनवावल शुरू क दिहले बा। फिलिम से ले के टीवी सीरियल तक भोजपुरी भाषा क्षेत्र से आइल प्रतिभा के भोजपुरी टोन आउर सम्बाद अदायगी के मिठास के चलते खूबे प्रसिद्धि मिल रहल बा। जेकरा चलते कई गो भोजपुरी चैनल भी धड़ल्ले से चल रहल बा ।धीरे-धीरे भोजपुरी हर क्षेत्र में आपन पइठ बनवात अपना सोनहुला भभिस की ओर आगे बढ़त बिया। हर भोजपुरिया जिला में भाषा खातिर काम करेवाला संगठन, संस्था तइयार बा आ भोजपुरी के सम्मान में हर तरह के चर्चा-परिचर्चा के आयोजन हो रहल बा। ई सब भोजपुरिया समाज खातिर बहुत खुशी के बात बा। एक के बोझा अब सात पाँच के लाठी हो गइल बा। आज ज़रूरत बा भोजपुरी में जबरजस्त लिखला के, जबरजस्ती के काम नइखे। सभे कवि होखे आ कविते लिखे ई कवनो मजबूरी ना होखे त ढेर जरूरी नइखे। कहानी, संस्मरण, यात्रावृतांत, नाटक, लघुकथा, व्यंग्य, समीक्षा, छंद विधानयुक्त, छंदमुक्त, नया नया शोध प्रबन्ध, व्याकरण विधान आदि बहुत कुल्हि विधा से भोजपुरी साहित्य सरोवर के उपरवछा ले भर दिहला के ज़रूरत बा।

खाली पुरखा पुरनियाँ के नाम पर ढोल पीट के कबले मानर पुजाई? बाबूजी जवना खेत में सरसों बोवत रहलें ओ में अब गेंहूँ बोवे के समय बा। दादा हाथी पोसले रहलें त सिकड़ देखा-देखा के कबले सम्मान बटोरल जाई? सब भाषा भाषीलोग आपन शब्द सम्पदा आ साहित्य समृद्ध करे में एड़ी चोटी के जोर लगा दिहले बा आ हमनीं का आपसी जरतुआही में एक दूसरा की छान्हि पर के कोंहड़ा की बतिया के अंगुरी देखावे में व्यस्त बानीं जा। ए से आज ले ना कुछ भइल बा ना आगे होई।हमार बात तनी बाउर लागत होई बाकी इहे साँच बा। भोजपुरी क्षेत्र से आवेवाला कई गो बहुत बड़हन नाम कहानी आ समीक्षा के क्षेत्र में बा सब। हमरा जहाँ ले जानकारी बा दुकाहें ऊ सब भोजपुरी खातिर भा भोजपुरी में कुछवु ना कइल। या त भोजपुरिया लोग ओ सब के आपन ना मनात होई आ चाहे ऊ सब भोजपुरी के आपन ना मनात होखे। कारण जवन भी होखे। आज इहो धियान में रहो कि केहू हिन्दी के रचनाकार जदी भोजपुरी में कुछ रचत-लिखत बा त भोजपुरी भाषा के समृद्ध करेवाला महायज्ञ में ओ रचना विशेष के शुभ आहुति के रूप में खुशी खुशी स्वीकार क लिहल जाव। सभकर एकेगो उद्देश्य होखे कि भाषा के जइसे भी उन्नति होखे ऊ एक सुर स्वर से स्वीकार होई। त आईं, संकल्प लिहल जाव कि अब से भोजपुरी साहित्य के सजावे सँवारे खातिर जबरजस्त लिखल जाई, जबरजस्ती ना.....

सिरिजन के ई अंक कइसन लागल, अपना प्रतिक्रिया से, सुझाव से अवगत करावत रहीं। रउआँ सभे के स्नेहिल प्रतिक्रिया से सिरिजन परिवार के उत्साह दूना हो जाला। जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया

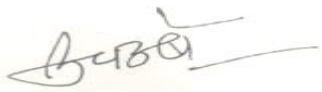

डॉ. अनिल चौबे
सम्पादक, सिरिजन

निहोरा

भोजपुरी भाषा के आत्मा गीत-गवनई में बसेला । ओ आत्मा के मुआवे-मेंटावे के बेवस्था भोजपुरी के तथाकथित स्वनामधन्य स्टार गायकलोग आ म्यूजिक कम्पनिन के साँठगाँठ से लगातार जारी बा । एम्मे दोसिहा खाली उहे लोग रहित त एकहक गवइया के चालीस- पचास लाख भिउअर (देखनिहार), फालोवर (लगुआ-भगुआ/पिछलग्गू) भा लाइकर (प्रशंसक/खुशामदी) ना रहितें। ए कुसंस्कारिन के एतना भिउअर (देखनिहार), फालोवर (लगुआ-भगुआ/पिछलग्गू) भा लाइकर (प्रशंसक/खुशामदी) बिदेसी भा गैर भोजपुरीभाषी लोग त नाहिए ह। ई सबलोग भोजपुरिया ह आ जाने- अनजाने ए लोग के लाखन- करोड़न रुपया हर महीना दे रहल बा । कचरा गीत-संगीत पर मिलल राउर रुपया ए लोग के मरजादाहीन बना दिहले बा। राउरे रुपया "फुहरपन बन्द करावेवाली" रउरी आवाज के दबा देबे में भरपूर सहजोग करता ।

रउआँ सही में भोजपुरी गीतन से फुहरपन मेंटावे चाहतानीं त "जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया" के निहोरा मानीं आ कहीं रउरा केहू का पेज भा यूट्यूब चैनल पर फूहर गीत मिलता त चार गो काम करीं:-

१) चैनल भा पेज पर फूहर गीतन के डिस्लाइक(नापसंद) करीं।

२) रिपोर्ट करीं।

३) पेज आ यूट्यूब चैनल के अनफालो करीं।

४) पेज आ चैनल के ब्लाक करीं।

भोजपुरी गीत-गवनई के मान सम्मान बचावे आ पुराना गौरव वापिस ले आवे खातिर ऊपर लिखल काम जरूरी हो गइल बा।

भोजपुरी हमार ह, राउर ह आ सबसे बढ़ि के हमरी आ रउरी पुरुखन के थाती ह। एकें हमनीं धनलोलुप लोगन का भरोसे ना छोड़ल जाई। बिना कवनो भेदभाव के आजुए से ई काम सुरू क दिहल जाउ आ हर भोजपुरिया अपना दस गो इयार दोस्त से ऊपर लिखल काम जरूर करावे। कुछुए दिन में परिणाम सामने आई।

निवेदक-

प्रधान सम्पादक,

सिरिजन

(जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया)

अभी यूरोप के दूगो देश रूस आ यूक्रेन के बीच जंग जारी बा आ दिन प दिन खतरनाक हो रहल बा। जान माल के क्षति त होइए रहल बा बाकी सगरो जहान तिसरका विश्वयुद्ध भा परमाणु युद्ध के आशंका में जी रहल बा। रूस अउरी अमेरिका के वर्चस्व के लड़ाई में यूक्रेन घुन नियन दुइ पाटन के बीच पिसा रहल बा। सौ बात के एक बात जवन संयुक्त राष्ट्र संघ के स्थापना बैश्विक संकठ के समय बीच-बचाव खातिर बनावल गइल रहे, ऊ दुनो महाशक्तियन के सोझा मुड़ी नवाके खाड़ बा, मजबूरी में हाँथ मल रहल बा। प्रासंगिकता पर सवाल उठ रहल बा, ऊ अनुचित त नइखे। अंतराष्ट्रीय कानून के उल्लंघन हो रहल बा लेकिन जेकरा ऊपर एकर पालन करावे के जिम्मेवारी बा, ऊ बेबस लउकता। ई चिन्ता के बात बा। संयुक्त राष्ट्र संघ के दंतहीन- बिषहीन के भूमिका से बाहर लियावे के जरूरत बा, ताकि अंतराष्ट्रीय संघठन के प्रासंगिकता बनल रहो।

तिमाही के पहिलका दिन यानी कि 1 अप्रैल के विक्रमी संवत के अनुसार साल के पहिला दिन होला माने एहि दिन से भारतीय सनातन समाज आपन नावा साल के शुरुआत करेला, एगो अउरी पहचान बा एह 1 अप्रैल क, सरकारी गैर सरकारी सब ब्यवसायिक प्रतिष्ठान आपन खाता बही के समहुत एहि दिन करेला। 1582 में पोप ग्रेगोरी एगो नावा कलेण्डर के ब्यवहार में लेवे के फरमान जारी कइलन जेमा साल के शुरुआत 1 जनवरी से होखे। कुछ लोग बिरोध कइल एके ना मानल, पुरनके रिवाज 1 अप्रैल से ही नावा साल के शुरुआत करे पर अड़ गइल लोग, ओह बिरोधी लोग के पहिला अप्रैल के मजाक उड़ावे शुरू भइल, समय के साथ 1 अप्रैल नावा साल के नावा दिन होखे के जगह "मूर्ख दिवस" बन के रह गइल। "अप्रैल फूल" भा "मूर्ख दिवस" के रूप में मनावे के रीत बा पढुआ समाज मे, ढेर प्रसिद्ध एहि नाव से बा ।

आकाश पताल सहित कुल्हिये लोक में जेकर डंका बाजात रहे, अस्त्र आ वेद शास्त्रन के प्रकांड पंडित, संसार के किसिम-किसिम के कला के मंजल खेलाड़ी, दसानन लंकापति रावण के अंहकार के मटियामेट करे वाला पराक्रमी मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम के अवतरण दिवस भी एहि पावन महीना में आवेला, जेके रामनवमी नाव भेटाइल बा लोककंठ से, तेव्हार के रूप में मना के उनके इयाद करेला सनातन धर्म के प्रति आस्था राखे वाला समाज। देखल जाव त अनठेकान बिपतन से ठकचल रहे रामजी के समूचा जिनिगी, बाकि कतनो बरियार बिपत काहे न आइल होखे, मजाल बा कि संयम भा मर्यादा के दामन उनकरा हाँथ से छूट जाव। कबो ना छूटल। आदर्श आ संघर्ष के श्रेष्ठ परतोख रहे उनकर जिनगी, आम चाहे खास टुकियो भर उनकर गुन के अपना जीवन मे उतार लेवे त सभ्य संवेदनशील समाज के सपना साँच हो जाई। जीवन के कवनो क्षेत्र काहे ना होखे मर्यादा के मान नपाता बा, अर्थ के अनर्थ होखत देखे खातिर मजबूर बा लोग। "मारे बड़ियारा रोवहुँ ना दे" वाला मुहावरा सही में साँच बुझाता आज के परिवेश में। सात्विक सोच आ जीव मात्र के कल्याण के भावना रामजी के सुभाव के अभिन्न अंग रहे, उनकरा कर्म में ई साफ लउके। अर्थहीन कोलाहल आ संवेदनहीन बेवहार का ओर डगरत समाज के अइसने सात्विक सोच बचा सकता। मानवीय मूल्यन के रक्षा खातिर जरूरी बा संयमित संस्कारित मर्यादित जीवन। सांस्कृतिक समाजिक सद्भावना राष्ट्र कल्याण आ जनसेवा रामजी के आदर्श ब्यक्तित्व के आधार रहे। राजा के रूप में उनकर बेवहार राजनीति से जुड़ल तबका खातिर मिसाल त बटले बा आम जन के भी नैतिक स्वार्थरहित ब्यवहार करे सिखावेला। उनकर हर निर्णय में ऊँच कोटि के संयम विवेक आ सदाचार के भाव लउकत रहे। आज पूरा बिश्व संक्रमण आ तिसरका बिश्व युद्ध के आशंका में दिन काट रहल बा, भय अउरी भरम से भरल माहौल में रामजी के जीवन आ मानवीय कल्याण से जुड़ल उनकर भाव सबसे अधिका प्रासंगिक लागता, खाली सांच मन से एके अपनवला के जरूरत बा ।

सुरुज भगवान मीन राशि से बहरिया के मेष राशि में ढुकेलन जेकरा चलते उनकर तेज बढ़ जाला आ प्रचण्ड गरमी के एहसास होखे लागेला, गरमी के तपिश से देह के बचावे आ ठंढा राखे खातिर लोक समाज आपन खान पान के बदल देला, जब रोजी रोजगार आ जीए के साधन खेतिए रहे आ घर परिवार के ढेर लोग गाँव जवार में ही रहत रहे, प्रकृति के साथे जीए के आदि रहे। भौतिक बैज्ञानिक सुख सुविधा के अभाव रहे, आजुवो छवि ढेर नइखे बदलल, त ऊ भोजन में अइसने चीझन के सामिल करेला जेकरा से देह के ठंढा राखल जा सके, ओमें सतुआ के नाव सबसे ऊपर आवेला, सैकड़न बरिस से सतुआ के सेवन करे के परिपाटी चलल आ रहल बा लोक समाज मे, सतुआ के रूचिगर बनावे खातिर हरियर आम के

टिकोरा के चटनी, आम भा भरुवा मरीचा के अचार के साथे नमक मिलावल जाला । कुछ लोग मीठा जइसे गुर, राब, चोट्टा भा चीनी स्वादनुसार मिलाके एकर सेवन करेला। ओकर सेवन से जीभ के स्वाद त मिलबे करेला साथे साथ देह ठंढा रहेला। सतुआन नाव के पर्व से ही एह सतुआ आम के टिकोरा के चटनी के साथे भा आम के पन्ना के साथे खाए के बिधिवत शुरुआत होखेला, आज ई पर्व के महत्ता पर भले गरहन लागल बा लेकिन कुछ लोग बा जे अपना जड़ से दूर देश विदेश कहीं भी होखे सतुआन मनावेला, एहि बहाने अपना संस्कृति संस्कार से जुड़ल रहेला।

आज जबकि पलायन भोजपुरिया समाज के कड़वी सच्चाई बा एकरा पाछे कारण कुछउ होखे, गाँव से पलायन के बाद बहुत बड़हन संख्या कल कारखाना खातिर सस्ता मजदूर के रूप में आपन सेवा दे रहल बा। केहू के लिखल लाईन ह "भूख से गरीबी से मजबूर हो गए, छोड़ी कलम-किताबे तो मजदूर हो गए, ऊँची ईमारत मेरी मेहनत का सिला है. बेनाम मेरे काम से मशहूर हो गए।" सभे अपना अपना काम मे मुकाम पावे खातिर मजदूर के किरदार निभावेला बस फर्क लिबास के होला केहू टाई बाँहेला त केहू अंगोछा। भले मजदूर के हाँथ-गोड़, देह माटी धुर-गरदा, करिखा में सनाइल रहेला लेकिन ऊ अपना मेहनत से राष्ट्र समाज के उथान में सबसे बढ़ चढ़ी के आपन योगदान देला। हर बरिस 1 मई के मजूरन के सम्मान में एह दिन के 'मजदूर दिवस' के रूप में मनावल जाल। ढेर जगह छुट्टियो रहेला जलसा के भी आयोजन होला, अपना क्षेत्र में बिशेष काम करे वाला कामगार के सम्मानित कइल जाला। काम के अवधी आठ घण्टा निर्धारित कइल जाव, कार्यस्थल के सुरक्षित बनावल जाव आ उहवा काम करे के मूलभूत सुविधा उपलब्ध करावल जाव, अइसने कुल माँग के लेके मजदूर आंदोलन भइल रहे, एकजुटता आ प्रचण्ड बिरोध के चलते अधिकत्तर माँग के मान लिहल गइल। ओहि जीत के खुशी में हर साल पहिली मई के "मजदूर दिवस" मनावे के परिपाटी चल निकलल। तेज भागत जिनिगी आ हाड़तोड़ स्पर्धा के युग मे पढुआ समाज आपन हुनर शिक्षा के चलते प्रतिष्ठान में नीक- नीक पद पर आसीन बा, तय समय के बाद इंसान ऑफिस छोड़ देता लेकिन काम नइखे छोड़ पावत। हमनी में से लाखों लोग घरे पहुँचला के बादो लैपटॉप भा कंप्यूटर पर घंटों काम करत लउकेलन।

कहल जाव त आज के पढुआ मजूर बीतल कालखण्ड के गत्तर खटावे वाला मजूरन के जगह ले ले बाड़न। घर-परिवार के समय के प्रतिष्ठान के काम भकोस रहल बा। असीमित काम के घण्टा के सीमित करे खातिर भइल आंदोलन जइसन आंदोलन के जरूरत बा, पढुआ मजूरन के भी आपन हिस्सा के जिनिगी जिये खातिर समय माँगे के चाही.... आवाज उठावे के चाही। मलिकार लोग के भी एह बिषय पर संजिदगी से सोचल जरूरी बा।

एहि तिमाही में चार दिन तक चलेवाला चैती छठ भी परी। छठ आज कवनो परिचय के मोहताज नइखे । साल में ई दू बेर मनावे जाये वाला परब ह। सूरज मल के अस्त होखत अवस्था मे अरघ देके उदय होखे वाला अवस्था मे भी बरती के लईका सवांग परिवार के सहयोग से अरघ देके एकर समापन होला। दरकल रिश्तन के दुरुस्त करे में परबन के बिशेष भूमिका रहेला, जमके मनवला के जरूरत बा।

साँच कहि त लोकभाषा जीयत रहे ,भोजपुरी जीयत रहे, हरियर रहे, एकरा खातिर संवैधानिक मान्यता से ढ़ेर जरूरी बा समाजिक मान्यता अउरी साहित्यिक मान्यता भी। केहू हमनीके लिखल भा पत्रिका में प्रकाशित रचना के पढ़ी कि ना? एकर फिकिर छोड़ के निरन्तर लिखत रहला के काम बा, ई सदा इंटरनेट पर मौजूद रही आ देर-सबेर पढहूँ वाला अइबे करिहन।

राऊर आपन,
तारकेश्वर राय
उप सम्पादक, सिरिजन

चउपट दोस्त पड़ोसी चाईके के दीया देखाईं? सादिक मियाँ के दुआर का ओर से काँख में गतान दबले भभूती बाबा चँवर में जात रहुवीं तले ओन्ने से साइकिल पर सवार हो के रामबरन जादो के तीसरका छँवड़ा भुटेलिया घंटी टुनटुनावत बाबा के बगल से सनाक दे निकलुवे। अब त बाबा खींसिन लाल पीयर हो के अपना गियान के बोझा सादिक मियाँ के सोझा पटक दिहनीं। ए सादिक ! ई सायकिल चलावेवाला देश की अर्थबेवस्था खातिर बड़ा नुसकानदायक बाड़न सन। ई सायिकल देश खातिर आफत बिया आफ़त।सादिक- 'कवनी तरह से ए महराज जी ! तनी खुल के समझाईं।'बाबा- 'सुनS ! सायकिल चलावेवाला कब्बो गाड़ी ना किनेला आ गाड़ी ना किनी त बैंक से लोन भी ना ली, बीमा भी ना करवाई, डीजल पेटरौल भी ना किनी त देश के (GDP) के नुसकान होई कि ना? ई त पंचर बनावेवालन के, हवा भरेवालन के भी दुश्मने बा लोग।' सादिक मियाँ— 'ए बाबा! रउआल त भुटेलिया की सायकिल पर अपना व्याख्यान के बुलडोज़र चढ़ा दिहनीं।' भभूती बाबा —'ए सादिक मियाँ बुलडोज़र से इयाद आ गइलें यूपी के बुलडोज़र बाबा। हई कैलास गौतम की कविता के दू गो लाइन सुनि लS—धइलस छूटल घाट धोबिनियाअब त पटक पटक के धोई कहो फलाने अब का होई.....?

ये कवितवा में जवन "अब का होई" बा इहे जनता के दर्द ह। जनता रोज सोचत बिया कि रोज रोज महंगाई बढ़ते जाता, अब का होई?'डीजल, डी ए पी के दाम सरग के तरई छूवत बा। सरकार कोहार के तरे अपनी मजबूरी के आँवा देखावत बिया। यूक्रेन रसिया की लड़ाई से उठेवाला बारूद के धुआँ में दुनिया अपनी मतलब के काजर पारे में तनिको कोताही नइखे करत। जनता सुतलि चूल्ह के जगावे में हाड़तोड़ मेहनत करत बिया बाकी नेता आ बेपारी लोग नमी पूजि के असली परब मना लेत बा। महंगाई की मार से आपन परछाई भी पड़ोसी के पोसुआ कुक्कुर खानी खाली कवरा खा के धोखा दे देत बिया। घर गृहस्थी के गाड़ी कइसे डगरो जब आमदनी झपसल रात के अन्हरिया जइसे सुझते नइखे? छोड़S, अब जात बानीं, गदबेर हो गइल।ओठे चइता माथ पे बोझाका लेके अगराईं।चउपट दोस्त पड़ोसी चाई,के के दीया देखाईं?

◆◆◆

स्व. पं. धरीक्षण निश्र जी के कविता कुक्कुर (अध्याय - 7)

भोजपुरी के आचार्य कवि
पं. धरीक्षण मिश्र

एकर दुर्दशा देखि करि के केहु देवी जी के दया भइल ।

दुख दुबिधा दूर गइल सगरे आ जनम फेरु से नया भइल ॥1॥

खेती के पशु के रखवारी कुक्कुर हमार अब पाइ गइल ।

बड़का कुकुरन से मेल जोल मोका पर कामे आइ गइल ॥2॥

ई कुक्कुर खूबे बूझता कुछ गोसयाँ रिसियाइल बाड़े ।

एसे बाहर कम निकलत बा, बा रहत सदा आड़े आड़े ॥3॥

बाहर निकले का नावें त अब बहुते अधिक सहमि जाता ।

एह कारन से मेला बजार में घूमे बहुते कम जाता ॥4॥

यदि जातो बा त साथे में राइफल कान्हा पर तान तान ।

आगे पाछे राखत बाटे दस पाँच मिलिटरी के जवान ॥5॥

जवना घरमें ई टीकत बा ओह घर का आस पास कगरी ।

हाथे में भरि भरि के बनूखि बा घूमत रहत लाल पगरी ॥6॥

सवैया :-

अब काटि दे ई कुकुरा केहु के तब मानीं अभागि ओके घेरले बा ।

एकरा कटला के दवाई इहाँ अबे ना कतहीं खोजले हेरले बा ।

अब जात न बा केहु का दुवरा पहिले जहाँ फेरी सदा फेरले बा ।

अब त सनकी बुझि के एकरा के पुलीस बनूखि ले के घेरले बा ॥7॥

◆◆◆

भोजपरी गीत सम्राट
पं० राधा मोहन चौबे
'अंजन जी'

जवान सुगना

बाबू ले ले जइह हमरो सामान हो कि पूछिहें जवान सुगना ॥
पानी में पनडुब्बी चढ़ि के करे सिन्धु रखवारी ।
रक्षा खातिर जागल होइहें ले बनूख तइयारी

उपरा गरजत होई नेटवा बिमान हो कि पूछिहें...

देखते तहके गले लगइहें, पूछिहें घर कुशलाई,
कइसे गाँव-नगर घर बाटे, कइसे बाड़ी माई,
कइसे बाड़ें घर लरिका-सयान हो कि पूछिहें...

सतुआ-चिउरा के गठरी जल्दी दिह पहुंचाई,
भरुआ मरिचा कोने ओइमें दीहनीं हम गठियाई,
पइहें नाँचे लागी खुशी से प्रान्त हो कि पूछिहें...

कहि दीह कि बीबी उनके मंगल रोज मनावें,
तुलसी जी के साँझ-सवेरे धूप-दीप देखलावें,
मांगे खुशिए के सँझिया-विहान हो कि पूछिहें...

मति कहिह कि मइया तहरी पाकल फल हो गइली,
चिट्ठी दीहली, काँपत पहली, जात-जात रो गइली,
ना त बेकल होइहें उनके परान हो...

एगो माई खातिर कहिह, मति तनिको अकुलइहें,
लाख करोड़न माई लो के गोदी लाज बचइहें
कहिह डोले नाहीं तनिको ईमान हो...

कहिह कि सावन में आके राखी लीहें बन्हाई,
बहिना उनके जोहत बाड़ी, कबले अइहें भाई,
कागा उचरेला सँझिया बिहान हो कि पूछिहें जवान सुगना...

◆ ◆ ◆

डॉ. जौहर शफियाबादी के कुछ गज़ल

डॉ. जौहर शफियाबादी
विभागाध्यक्ष (उर्दू)
डॉ. पी. एन. सिह महाविद्यालय, छपरा

ई का होता

खुलेआम दिन-रात बिकाता, ई का होता ।

महंगा-सस्ता बात बिकाता, ई का होता ।

प्रजातंत्र के मोल गवा के, छी-छी, थू-थू।

धरम आ देखीं जात बिकाता, ई का होता ॥

कहाँ सपना बापू के पुरल कवनो, बोलीं ना ।

उनके नाम से घात बिकाता, ई का होता ॥

कहाँ बा आपन देश खड़ा, बतलाईं ना कुछ ।

महंगा नूनो-भात बिकाता, ई का होता ॥

मरत बा किसानों भूख से, अब देखीं ना ई ।

सुखारो में बरसात बिकाता, ई का होता ॥

सत्ता के बा बाजार गरम तब, सोंची ना कुछ ।

अबो थाती सौगात बिकाता, ई का होता ।

◆ ◆ ◆

नदी के धार....

नदी के धार जे मरूथल का ओरी मोड़ देबेला।

उहे तरसत धरा के जल से नाता जोड़ देबेला॥

हिमालय के टपे के लग्न जेकरा के बढ़ावेला।

ऊ चिता गोड़ पीरइला के पीछे छोड़ देबेला॥

भरम बाँचल बा ओकरे दम से नेहिया के जगत्तर में।

जे दू टूटल सनेही दिल के देखत जोड़ देबेला॥

कबो ऊ याला के यातना से ना डरे राही।

जे चलते-चलते फोड़ा गोड़ के सब फोड़ देबेला॥

कबो दुनिया भला ओकरा के कहियो ना कही जौहर।

तनी सा बात पर जे कर के वादा तोड़ देबेला॥

◆ ◆ ◆

करुण रस के अप्रतिम कवि ठाकुर विश्राम सिंह

संस्कृत के एगो कवि ब्रह्मा से मिनती करत कहले रहे कि हे विधाता! जाने - अंजाने हमरा से भइल कवनो चूक का सजाय के रूप में हमरा लिलारे जवन लिखे के बा, लिख दिहऽ, बाकिर कबो अरसिक मतलब संवेदनहीन के कविता - गीत सुनावे के पड़े , ई कबो मत लिखिहऽ, कबो मत लिखिहऽ, कबो मत लिखिहऽ -

'इतर पाप फलानि यथेच्छया
वितर तानि सहे चतुरानन्।
अरसिकेषु कवित्व-निवेदनं,
शिरसि मा लिख मा लिख मा लिख।'

एकर अभिप्राय ई रहे कि कविता - गीत रसिक जन के चीज ह। कविता - गीत हृदयहीन आ मतिछीन का पल्ले ना पड़े। जवना संवेदनहीन मनई के मन - मुकुर साफ ना होखे आ जेकरा बरनन कइल विषय में गति भा तन्मय होखे के योग्यता ना होखे, ओकरे के अरसिक आ अहृदय कहल गइल बा। जे कवनो कवि - गीतकार खातिर साक्षात् काल जइसन होलन। बाकिर भोजपुरी का बखरा में कुछ अइसन कवि - गीतकार आइल बाड़न जेकर कविता - गीत पत्थरो का करेजा के पिघला के मोम बनाके पघिलावे के कूबत राखेलन। आ एकर वजह ई बा कि उनका कविता - गीत में कोरा बौद्धिक जुगाली आ कवनो विचारधारा से प्रभावित नारा भर ना होखे। ओकरा में पसंगी से पचाठी तक के ही ना ओकरा आगे - पीछे के महसूसल लौकिक - अलौकिक जीवन का अनुभूतियन के सहज - स्वाभाविक रसमय भावाभिव्यक्ति अनायासे पावल जाला।

भोजपुरी के ऊ कविता - गीत भलहीं व्याकरण आ प्रस्तुतिकरण का मानक पर खरा ना उतरत होखे, बाकिर ओकर अनुभूति आ सहजग्राह्यता अतुलनीय होला। ओकरा कवनो खास आलोचक का व्याख्याता आ टीका के दरकार ना होखे। ऊ त अपना लोक जीवन आ लोक चेतना का सोता से फूटल नेमनिया-निरइठ मिसिरियो से मीठ गङ्गाजल जइसन शीतलता लेले होला। ओहू में यदि करुण रस के कविता - गीत होखे तब का कहे के। अइसहूं जब कवनो कवि का कारुणिक हृदय से शोक भाव भभक पड़ेला तब ओकर अभिव्यक्ति प्रभाव के दिसाईं अचूक होला। करुण रस के अइसने अप्रतिम कवि बाड़ें ठाकुर विश्राम सिंह।

ठाकुर विश्राम सिंह के जनम सन् १९०६-०७ के आसपास उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जिला के सियारामपुर गाँव में भइल रहे आ सन् १९४७ ई. में मृत्यु हो गइल रहे। माई- बाप इनका के इस्कूली शिक्षा दिलावे के भरपूर प्रयास कइलें। बाकिर उनकर मन पढ़ाई-लिखाई में कवनो खास ना रमल त परिवार के लोग गिरहस्ती में मन रमावे वाला विश्राम सिंह के नवही होत-होत बिआह कर दिहल। ऊ अपना जीवनसंगिनी का संगे जीवन-यात्रा के कुछ डेग चललहीं रहलें कि उनका प्रियतमा के अकाल मृत्यु हो गइल। एह असमय अकल्पनीय आघात से उनकर भावुक हृदय अगाध शोक-सागर में डूबे-उतराये लागल। फेर जब ओह भाव-विह्वल हृदय से हठात् करुण काव्य के सोता फूटल त ऊ भोजपुरी के अप्रतिम अमर विरह काव्य बन गइल। जवना के भोजपुरी के साहित्य जगत बिसराम (विश्राम) के विरहा भा विरह काव्य कहेला।

अइसे ' विरहा ' भोजपुरी लोकगीत के एगो निजी छंद ह। जवना के विषय में कहल गइल बा कि -

' नाहीं बिरहा के खेती भइया
नाहीं बिरहा फरे डाढ़।
बिरहा बसेला हिरिदय में,ए रामा
जब उमगे तब गांव ॥'

ई ' उमगल ' ही हठात् भावोद्रेक के अवस्था ह। जवन आत्मीय जन का बिरह-बिछोह के कातर हालत में उमगेला। एकरा माध्यम से शोकाकुल कवि अपना हृदय के शोक भाव उड़ेल देला। बिरह-बेदना से आकुल-ब्याकुल कवि ठाकुर विश्राम सिंह के ' बिरहा ' भोजपुरी के अप्रतिम शोक काव्य भा शोक गीत बा। अप्रतिम काहे बा एकर वजह बतावत डॉ. कृष्ण देव उपाध्याय कहले बाड़न कि 'इनका रचना में कोरा शाब्दिक कलाबाजी ना होके हृदय का बेदना के तीव्र अनुभूति बा।' अपना प्रियतमा पत्नी का सान्निध्य से भइल बिछोह के असह्य आघात बा। अइसन अवस्था ना त भवभूति का उत्तर रामचरित का राम के प्राप्त बा ना कालिदास का मेघदूतम् का यक्ष का। आचार्य बलदेव उपाध्याय यदि विश्राम के भोजपुरी साहित्य के ' कीट्स ' कहत बाड़ें त इहो परतर अनुचित बा। काहे कि अंगरेजी साहित्य के कवि ' कीट्स ' ना त भोजपुरी कवि विश्राम का ओह मनोदशा से गुजरल बाड़ें आ ना उनका कवितन में ओह तरह के शोक भाव प्रकट भइल बा।

प्राण से भी प्रिय प्रियतमा पत्नी का शवयात्रा के हृदय बिदारक मनोदशा के कवि का शब्दन में महसूसल जा सकेला -

'आजु मोर घरनी निकलली मोरे घर से,
मोरा फाटि गइल आल्हर करेज।
राम नाम सत सुनि मैं गइलों बउराई,
कवन रछसवा गइलें रानी के हो खाई।
सुखि गइले आँसू नाहीं खुलेले जबनियाँ,
कइसे के निकारी मैं त दुखिया बचनियाँ।'

कवि दिन-रात अपना दिवंगत प्रियतमा के लेके तरह-तरह का भाव-लोक में बिचरन करत रहत बा। प्रकृति के लेके ओकरा मन में हर छन उदासीनता के भाव भरल रहऽता। एक रात ऊ एगो कउआ के अकेले बइठल देख के ओकरो के अपना कउवी से बिछुड़ल जान के समानधर्मी बूझत कहत बा-

' तोरे जोड़वा के कवनो मरले चिबिल्ला कउआ,
मोरे जोड़वा के मरलें राम।
उनके मनवा छन भरवा बहलेला कउआ,
हमनी के तड़पे नित प्रान॥'

पी-पी के रट लगावत पपीहा के बिरहानल में धनकत कवि समुझावत कहत बा कि अब पी से मिले के असरा छोड़ऽ। बिरही का जिनगी के दिन-रात बिछोह में भुभुर में जरहीं खातिर होला। बिरह के बाद मिलन के सुख कहाँ?

'रोअल धोअल अब छोड़ऊ हो पपीहा,
तनि सुनि लेव मोरिउ बात।
बिरहिन के सुख नाहि मिलत मोर भइया,
उनके जरत बितेलें दिन-रात।'

असमसान घाट पर केहू दोसरो के चिता जरत देख के कवि अपना पत्नी वाला दाह-संस्कार के इयाद करत भावाकुल हो जात बा -

'नदिया किनारे एक ठे चिता धुँधुआले,
लुतिया उड़ि - उड़ि गगनवा में जाय।
लहकि लहकि चिता लकड़ी जरावे,
धनकि धनकि नदी के सनवा जनावे।

चटकि चटकि के चिता में जरत बा सरिरिया,
नाहीं जानी पुरुस जरे या कि जरे तिरिया।
चितवा त बइठल एक मनई दुखाती,
अपने अरमनवन के डारत बाटे जारी।
कहे बिसराम लखिके चितवन के काम,
मोर मनवा ई हो जाता बेकाम।
अइसन चिता हो एक दिन हमई जरवलीं,
ओही सोगे फूँकि दिहलीं आपन अरमान।

कवि विश्राम का भावुक हृदय में हर महीना आ मौसम में पत्नी का सङ्गे बितावत ओह सुखल पल के इयाद बिरही विश्राम कवि का भीतर के उद्वेग बढ़त रहत बा, जवन उनका गीतन में अइसन उतरता कि रसिक श्रोता-पाठक के भाव-बिह्वल कर देता। जाड़ा-पाला के मौसम होखे भा जेठ का अगिआइल दिन के, फगुआ के दिन होखे भा दिअरी-दिवाली के कवि के हृदय अपना प्रियतमा धनी के सङ्गे जीयल एक एक घटी-पल के इयाद करके व्यथित हो जाता। बानगी का रूप में कवि का ओह शोक गीतन के कुछ डांड़ी नमूना के रूप में देखल जा सकेला -

' अइलें बसंत मँहकि फइलल बा दिगंत,
भइया धीरे-धीरे बहेली बयार।
फूलेलें गुलाब फूले उजरी बेइलिया,
अमवाँ के डढ़ियन पर बोलेले कोइलिया।

कहे बिसराम कुदरति भइले सोभाधाम,
चिरई गावत बाटे नदिया के तीर।
चलि चलि बतास उनके इयदिया जगावे,
मोरे मनवाँ में उठति बाटे पीर॥'

एगो खेतिहर किसान होखे के नाते कवि ठाकुर विश्राम सिह के हर मौसम में बदलत प्रकृति का मिजाज के बहुत बारीक बोध बा। जइसे बसंत में गुलाब आ बेली के फूलाइल- गमकल, आम का डाढ़ी पर कोइलर के कुहुकल, पपीहा के पिहकल, कलियन पर भँवरन के उड़ि-उड़ि बइठल, लता के पेड़न से लपटाइल, खरलिच के अपना देसे उड़ि चलल आदि के बीच अपना बिछुड़ल दिवंगत पत्नी के इयाद करेज में पीर उठा देत बा, ओइसहीं तपत जेठ का महीना के लूकर झकोर, नाचत दुपहर के बंवड़ेरा, पछुआ के झरक, ताल-तलइया आ नदी-अहरा के सूखल-सिकुड़ल, पेड़न का छाँह में मवेसियन के पगुराइल-सुस्ताइल, आदि के बीच प्रिया हीन बियोगी कवि का गरब-गियान के सोत सूखि गइल बा। एह जेठ का महीना के बरनन करत गीत के कुछ बानगी देखल जा सकेला –

'आइ गइले जेठ के महिनवाँ ए भइया,
लुहिया त अब चलेले झकझोर।
तपत बाटे सूरज, नाचत बाय दुपहरिया,
अगिया उड़ावे चलि चलि पछुआ बेयरिया।

अइसन समय में खरबुज्जा हरिअइलें,
अउरी हरा भइल बाय बोरो धान।

हमरे दुसमन बनके मन हरिअइले,
हमरा सूखि गइले हे गरब- गियान ॥'

अइसहीं दिवाली में सगरो अँजोर फइलल बा आ बियोगी कवि का मन में अन्हार छवले बा। जगमग जगमग दिअरी बरल बा आ कवि अपना प्रियतमा के अभाव में उदास गुमसुम अपना सून कोनहरी में बइठे खातिर मजबूर बा। सभकर धनिया अपना अपना घरे दिअरी बार रहल बारी आ हमार घर हमरा रानी का ना रहला से अन्हार बा -

' आयल बाय दिवाली जग में फइलल उजियाली,
मोरे मनवा में छवले बा अन्हार।
जुगुर जुगुर दिया बरे होत बाय अन्हरिया,
मैं तो बइठल बाटीं अपनी सूनी रे कोनरिया।

कहे बिसराम हमके दाना हौ हराम,
लखि के कूढ़ति भीतराँ बा जी हमार।
सबक त घरनी घर में दियवा जलावे,
मोरे रानी बिना मोर घर हौ अन्हार।'

सावन के महीना आइल बा। रह रह के मेघ घेरऽता। पपीहा गीत गावत उड़ऽता। मन में उत्फाल करेवाला हवा चलऽता। खेत में जोन्हरी के पतई आ मड़ुआ के फर वाला गूंथल चोटी हिलऽता, ऊंखि के झार खरखराता, आसमान में बकुलन के पाँति बेली का फूल के गजरा जइसन उड़त जा रहल बा, बगइचा में लागल झूला पर झूलत नारी लोग के गावल कजरी से कवि के हृदय घावाहिल हो रहल बा। सउँसे दुनिया आनंद मना रहल बा आ बन में मोर नाच रहल बा। बाकिर पत्नी का बिछोह में तड़पत कवि का करेज में ई मनमोहक प्राकृतिक छवि एह से हूक उठा रहल बा कि उनकर रानी स्वाती के बूँद हो गइल बाड़ी -

' आयल बाटे सावन के महीना मोरे भइया,
रहि रहि के उठे बदरा हो घनघोर।
उड़ेला पपीहा आपन गितिया सुनावत,
चलेले बयारि जियरा के लहरावत।
जोन्हरी के पात हिले, मड़ुआ के चोटी,
रहि रहि खहराली उखिया जे मोटि मोटि।
उड़ेलें बकुलवा जइसे बेइली के गजरा,
बदरा के टुकड़ी नभवा में करे झगड़ा।

कहे बिसराम दुनिया करति बाय आराम,
नाचत बाटे बनवाँ में खूब मोर।
राम मोरी रानी भइली स्वाती के पानी,
मोरा कयकेला करेजवा के कोर।'

एह तरह से हर मौसम से कवि विश्राम अपना बिरह-बेदना के जोड़ के अपना प्रियतमा का बिछोह के दरद अभिव्यक्ति देले बा।

कवि के गाँव सियारामपुर तमसा नदी के किनारे बा। एही तमसा नदी का किनारे अपना क्रौंच के बिछोह में क्रौंची चिरई आपन चोंच पटक-पटक के प्रान तेयाग देले रहे,जवना के देख के रिसि बाल्मीकि का भीतर के शोक श्लोक बनके फूट पड़ल रहे। ओही तमसा नदी से कवि याचना करत बा कि अब एह जीवन में त मृत्यु के प्राप्त हमरा प्रियतमा से मिलन ना हो सके, बाकिर हे नदी माई, हमरा मुअला के बाद हमरा हड्डियन के उहँवें बहा के ले जइहऽ जहँवा हमरा प्यारी का हड्डी के चूर पड़ल होखे -

' मोरी हडियन के माता उहवाँ ले जइहऽ।
जहाँ उनका हडियन के रहे चूर।'

कवि के ई इच्छा हर पाठक- श्रोता के हृदय के झकझोर के रख देता। ठाकुर विश्राम सिह के एह शोक गीतन के आजुओ कई गो गायक लोग का कंठ से सुने के मिलेला। एने आके जगदीश प्रसाद बरनवाल ' कुंद ', ' बिरही बिसराम ' नाम से ठाकुर विश्राम सिह का शोक गीतन के एगो संग्रह प्रखर प्रकाशन, नवीन शहादरा, दिल्ली से प्रकाशित करवले बाड़न। जवना के अध्ययन के उपरांत उनका शोक गीतन के सम्यक् मूल्यांकन हो सकेला।

◆ ◆ ◆

डॉ. जयकान्त सिंह 'जय'
मुजफ्फरपुर

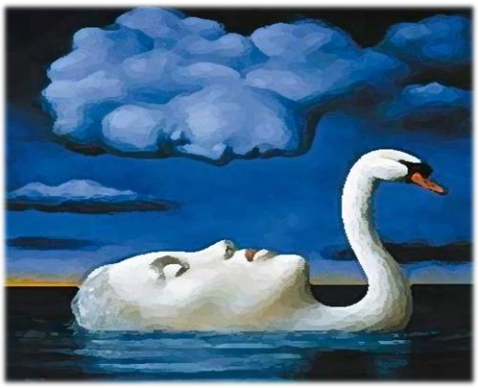

चित्र साभारः www.google.com

ऊख-उखारी

दिनेश पाण्डेय
पटना, बिहार

'ईख' के मूल वैदिक भाषा के 'इक्षु' ह, प्राकृत में एकर मौजूदगी 'इक्खु' के रूप में बा। मैक्डोनल आ कीथ (वैदिक इण्डेक्स) के अनुसार ई एह प्रजाति के पउधन के जातिवाचक नाँव ह जे सभसे पहिले अथर्ववेद आ बाद के संहिता सभ में मिलेला। ई शर जाति के एक घास ह जेकर डाँठि के रस मीठ होला। एह नाँव का पाछे मधुरता बढ़ावेवाला गुन मुख्य बा- 'इष्यतेऽसौ माधुर्यात्- इष् (गति)+क्सु।' एकरा के अंगरेजी में शुगरकेन (Sugarcane), उर्दू में गन, ओड़िया में आकु, गुडोदारु, कोंकणी में उन्य, कन्नड़ में इक्षु, इक्षुदंड, गुजराती में नैशाकर, सेर्डी, तमिल में पुण्ड्रय, कन्नाल, तेलगू में अरुकनूपूलारुनुगा, इंजू, बंगाली में गन्ना, आक, पंजाबी में गन्ना, ईख, मलयालम में दर्मेशु, इक्षु, मराठी में आओस, कब्बी, छड़ी आहेत, मणीपुरी में चू, नेपाली में उखू आ अरबी में कसबीशकर कहल जाला। इक्षु, अधिपत्र, अमृतपुष्पक, असिपत्र, गण्डीर, गुडपत्रक, गुडमूल, तृणराज, दीर्घच्छद, निस्सृत, भूमिरस, मधुतृण, महारस, विपुलरस, वेणु, लोहितेक्षु, ह्रस्वमूल, ई सब संस्कृत में ऊखि के समार्थी शब्द हवें। अर्धमागधी में ईख के इक्खु, तेकर रस के इक्खुरस भा इच्छुरस, खेत के इक्खुवन, बाड़ भा पेरे के जगह के इक्खुवाड (इक्षुवाट), बाड़ भा खेत के इक्खुवाडिया अभिधान हवें। हिंदी कोशन में ऊखि के पुंडिया, पोण्डा, गन्ना, ईख शब्द पर्याय के रूप में लिहल गइल बाड़न। उत्तर बिहार में ईख के कुसियर, पटना, गया आदि इलाका में केतारी, ब्रजभाषा में कुस, छत्तीसगढ़ी में कुसियार, मुंडारी में कोसेअर, कोसेयार नाँव प्रचलित बाड़े। राजस्थानी में एकरा साँटा, हो में गुड़दंडअ, मुंडा में गुड़डंडा कहल जाला।

इक्षु के समस्त पद के रूप में बिकसल इक्षुमूल एकर जरि, इक्षुदंड, इक्षुकाण्ड डंठल, इक्षुनेत्र पोर के गाँठि प होखेवाला अँखुवा, इक्षुरस एकर रस, इक्षुज, इक्षुसार भा इक्षुविकार रस से बनल विभिन्न पदारथ, इक्षुशर्करा चीनी, इक्षुपाक गुर भा राब, इक्षुभक्षिका गुर आ चीनी से बनल भोग के बोधक शब्द हवें। इक्षुशाकटम् ईख के खेती लाएक जमीन, इक्षुयंत्र कोल्हू, इक्षुवण ऊखि के खेत भा जंगल, इक्षुवाटिका ऊखि के बगीची अउरि इक्षुकीया ऊखि के कियारी, इक्षुकुट्टक एकर डाँठि बिटोरेवाला बेकती, इक्षुतुल्या ज्वार-बाजरा जइसन कास प्रजाति के एक पौधा जेकर तना मिठगर होला, इक्षुगंधा कास, गोरखुल, तालमखाना, इक्षुपत्रा ज्वार, मकई, बाजरा, इक्षुदर्भ एक तरे के घास, इक्षुबालिका कास भा मूँज के वाचक हवें। बौद्धग्रंथ 'महावस्तु' में 'इक्षुगंड' पद मिलेला जवन इक्षु (आधुनिक भारतीय आर्यभाषा सभ में ईख, आउख, आख, ऊख, ऊस < इक्षु, अक्षु, उक्षु) आ गंड के समास ह। गन्ना आ गँडेरी एही गंड से बिकसल शब्द हवें जवन इक्षुखंड के वाचक हवें।

ईख के खास जातिभेद के रूप में कृष्णेक्षु, कांतार (केतारा), काष्टेक्षु (लखड़ा), कोशकृत (कुसियर), तापसेक्षु, दीर्घपत्रक, नीलपोर (कालगेंड़ा), नैपाल, पौण्ड्रक (पौढ़ा), भीरुक, वंशक (बड़ौखा), शतपोरक (सरौती), सुकुमार, सूचिरपत्रक, रसाल हवें। ग्रियर्सन बिहार प्रांत में तात्कालिक तौर पर बोए जाएवाला ऊख के विभिन्न प्रभेद के इलाकावार लोकप्रचलित नाँवन्ह के पूरी सूची दिहले बाड़े ("Bihar Peasant Life" - George A. Grierson, Para 1005.)-

कुसिहार (गंगा के दखिन) बौना आ सख्त ह। केतार (गया आ दखिन-पूरुब), केतारा (पटना), केवाली (सारण), केवाही (शाहाबाद), रौंदा (दखिनी मुंगेर) ऊँच-पातर किसिम के ऊखि ह जवन अक्टूबर-नवंबर में पोढ़ाला। चिनियाँ बड़, मोलायम आ तनी उजरछहूँ प्रभेद ह जवन फागुन-चइत में चीभे जोग होला। एकरा के गया, शाहाबाद में पनसारी, सारण में पनसाही, पनछाही, दखिन-पछिम जिलन में आ पछिमी तिरहुत में पँसहिया, दखिनी भागलपुर में पौड़ी कहल जाला। बरौखी, बर ऊख (दखिन-पछिम तिरहुत) भा नरगोरी (सामान्य तौर प दखिनी बिहार) पातर, ललछहूँ खलड़ी के बड़ मीठ आ रसगर ऊखि ह। भुरली (उत्तर-पछिम बिहार आ तिरहुत) मोट, छोट आ रस से भरल किसिम ह जवन बइसाख में चीभे लाएक होला। मनगो छोट, सख्त आ लाल किसिम ह। रेंवड़ा (उत्तर-पछिम बिहार आ दखिन-पछिम शाहाबाद), सकरचीनी (पटना, गया) पियरछहूँ किसिम के ऊखि ह जवन चीभे में ओतिना मजिगर ना होखे। ललगेंड़ी लाल आ लमहर प्रभेद ह। साही (दखिन-पछिम तिरहुत) बौनी आ हथुनी (सारण आ पछिमी तिरहुत) एक मझोली-मोटी प्रजाति के ऊखि ह।

भोजपुरी में प्रचलित ऊख, ऊखि 'इक्षु' से व्युत्पन्न हवें। ऊख के ऋग्वेद के 'ऊक्ष' से भी व्युत्पत्ति संभव बा। ऊक्ष् वृद्धयर्थक आ

तर करे याकि सेचन के अरथ में ह। एह तरे, बढ़े, ओज बाढ़े, कंठ तर करे भा रसगर होखे के संबंध से ध्वनि आ अर्थ दूनो आधार प ई संभावना असंगत नइखे।

ऊख के गठान

ऊख के पौध के जमीन के तरे भा संपर्क वाला हिस्सा जरि, जड़ी, जड़िया, मूर, जड़खर, खूँटी या खुँटिया ह। एकर गाँठ (संस्कृत में ग्रंथि, पर्व, परुस्, काण्ड या संधि।) के पोर, पोई, गिरह कहाला। ईखि के दू गाँठन के बीच के रसगर आ चीभे जोग हिस्सा पोर ह। एक बेरि में जतिना ऊख के टुकड़ा चीभल जा सकेला ऊ गुल्ला, गुल्ली आ चीभ के फेंकल नीरस सिट्ठी खोइया, चेफुआ भा चोपा ह। ऊख के पौध में बढ़ोतरी से गाँठ के आकार साफ भइला प एकरा के पोराइल, गिरहाइल भा पोर छोड़ल कहल जाला। कटाई खातिर तैयार पोढ़ाइल ऊख अगरबन्धू, अँगेरबंधू या डाँड़ ह। ऊख के सिरा के पतइन आ ऊपरी हिस्सा के अगेंड़, गेंड़, अँगेरी, अगरा, पगार, छीप, पगरा कहाला। सूखल पतई पतैन, पतहर, पतलो, पतौरा, पतेल, पतहर भा पतहोर हवें। पौधा के नीचे से फूटे वाली हानिकर शाखा दोंज, पछखी, फुटना, गोभी, कनखी, गँवखा, जोंका, पगुड़ी, पहुँच या पोरनोवो ह। कीटग्रस्त पौधा के सीना, टाड़ा, कनाइल, रतड़ल, कनाह भा काना कहल जाला।

गुन-तासीर के नजरिए ऊखि मीठ, भारी, ठंडा, स्निग्ध, ओज-बल-बाढ़क, वातशामक, मूत्रल, कफ आ कृमीहर ह। ई जरि का ओरि मीठ, बीच में कम मीठ आ आगिल में नुनछाह होला। 'भावप्रकाश निघंटु' में ऊखि के अलग-अलग भेदन के औषधीय गुन के फरिया के कहल गइल बा। ललगेंड़ा ऊखि भारी, शीतल, दाह-पित्तरक्त-मूत्रकृच्छ नाशक, पौढ़ा आ कलगेंड़ा ठंडा, चिकना, धातुवर्द्धक, कफशामक, 'बड़ौखा' खार बाकी गुन में ओइसने, सरौती, वंशक जइसन व तनी गरम तसीर के, केतारा आ तापसेक्षु में अगते कहल सामान्य गुन, लखड़ा वातुल, शीतल, कासकार भारी, ठंडी, रक्तपित्त आ क्षय के दूर करेवाला गुन के प्रभेद हवें। सूचीपत्र, नीलपर, नैपाल आ दीर्घपत्रक ई चार नाँव नैपाल ऊखि के हवें। ई वादी ह, कफ आ पित्त के हर लेला, तनी कसैला होखे से प्रदाह पैदा करेला। चीभल ऊखि पित्तरक्त विनाशक, धातुवर्द्धक, दाहहर ह। ई कफदायक अउर भारी होखेला। कोल्हू में पेरल ऊख के रस गरीष्ठ, प्रदाही, मलरोधी होला। मत्स्यंडी (राब) मलरोधी, बलवर्द्धक, वात-पित्तशामक होला।

उखियारी

उखेरा ऊख, उखाँव ऊख के खेती खातिर तैयार जमीन, उखाड़ी भा उखारी ऊ खेत जवना में ऊख बोवल गइल होखे, उखर ऊख बोए के बाद हर पूजे के रीति, उखभोज, उखराज ऊख के फसिल बोए के पहिला दिन खेतिहर घरे मनावल जाएवाला उत्सव के बोधक शब्द हवें।

बुवाई से अगते शरद ऋतु में जमीन परती छोड़ दियाला, पौध के पोड़ा कहल जाला। ऊख बोवे के पहिले शरद ऋतु के फसिल लेवे के रीत के जरी, नारी भा चौमास के रूप में जानल जाला। जब बेगर सिचाई के ऊख के खेती कइल जाला त बीज के ऊपर घास-पात आदि के एक तह फेंक दियाला जवन एक तरह से गरम कियारी के काम करेला। एह रीत के खटिआवल, गोआ पटावल कहल जाला। खेत जोते बदे आमतौर प दू तरह के हर, सामान्य हर आ कान्ही के हर याकि भटौनी के इस्तेमाल होला। दोसरका किसिम के हर का चारो ओरि, हराई के चौड़ा करे खातिर घास के एक गट्ठर बान्हल रहेला जेकरा के कान्ही, सिराउर या रेह कहल जाला। खेत के पहिली जोताई चास, दोसरकी दोखार (द्विकर्ष) आ तीसरी तेखार (त्रिकर्ष) ह। तेकरा बाद हेंगा कहीं भा पट्टा, के सहारे जमीन चौरस क के कियारी आ मेंड़ के निरमान कइल जाला, जवना में ईख के गेंड़ा कतार में बिछा के माटी चढ़ावल जाला। ऊख के सघन बोवाई उपयुक्त ह।

ऊख के पहिली पटवन गंडाधार, छेंवका, पनगंडा या अंधरी पटवन ह। दोसरकी पटवन के कोड़ा आ तीसरी के आखिरी पटवन भा तेसर पटवन कहल जाला। पिछलके मौसम के बाद छोड़ल जरि से निकलेवाला ऊखि के पौध के खूँटी कहाला। ताजा बीज से उगल पनखी के बावग कहाला। पतझार के फसिल कटला प बोवल जाएवाला ऊखि जरिया के ऊख, नारी के ऊख, दोतुरी के ऊख भा चौमसिया कहाला। बीया खातिर काटल ऊख के टुकड़ा के गेंड़ा, गेंड़ी, टोना, टोनी, गुल्ली, पोहड़ा भा बीहन कहाला। जब बीया खातिर खाली ऊपरी सिरा काट देल जाला त ए के अंगेर, अंगेरा, अगारी, आगा, बधिया भा फुनगी कहल जाला। बोए के पहिले ऊखि के टुकड़ा के जवन गड़ही में रखल जाला ओकरा के खाद, खाता, गाड़ा, गेंड़सार, बलसार, टोनखाद भा टोनखावा कहाला।

ऊख के गाँठ के पास आँख के आकीरति होला जवना से अँकुआ फूटेला, एकरा के आँख, आँखि, अँखिया, अँखुआ, कनसी, गोंझी, कहल जाला। तुरत के अँकुरल ऊख के पुआरी, पौड़ी, पोई, अँकुराइल, अँखुआइल, सुइयाइल, टिब्भी, डिफी ह। ऊख के गट्ठर के पाँजा आ एक आदमी के ढो सके भर पाँजा बोझा ह।

ऊख के उत्पाद

शक्कर, शर्कर, शर्करा, खंडी, खंडज (खाँड़), कादंबर, गुड, मधुधूलि, रसज, राब, चीनी, मिश्री, कन्द ई सब ऊखि के रस से बनल उत्पाद हवें। संस्कृत में सिता, मत्स्यंडिका, पल्ली, ममाण्डी, बलक, विषपल्दगंधा, शिग्रुका, कृतिका, अमला, खण्ड, खण्डसिता, माधवी, मधुशर्करा, यवाशक्काथसम्भवा, पुष्पसिता, पुष्पसंभृतशर्करा, फाणित, क्षुद्रगुडक, गुड आ इक्षुरसोद्भव ई बीस नाँव राब, खाँड़ गुड़ आदि के हवें। ऊखि के उत्पाद बनावे के दरम्यान निकालल रस के कचरस, रस के उबाल के बनल गढ़गर-दानेदार सीरा राब या कि रावा, कुछ अवरि उबाल के जमे जोग भइले गुड़ भा गुर कहल जाला। गुर के गोला बान्ह के भेली आ गोल-चापुट साँचा में ढार के चकरी, चक्की, चाकी बनेला। राब के दबावे के बाद बोरा में जवन कच्ची चीनी रह जाला ऊ सक्कर ह। एकर सूखल रूप खाँड़ भा भूरा ह। राब के दाबे से जवन रस बोरा से बहरी गर जाला ऊ छोआ भा सिरा ह। चीनी भूरा के साफ, अमलिन रूप आ तेकर कड़ा पाग याकि डली, मिसरी ह।

केल्हुआड़ी

केल्हुआड़ी, कोल्हुआड़ी, कोलसार, या गोलउर ऊख पेराई आ पेरल गइल रस से गुर, राब आदि बनावे के काजथल भा कार्यशाला ह। एकर मुख्य तौर प दू भाग होला, एक त कोल्हू के, जहाँ उखि से रस निकालल जाला, दोसर, चूल्हा के जहाँ रस के अवँट के गुर बनेला।

ऊखि पेरे के यंत्र कोल्ह, कोल्हू (कोल्हुअ) भा कल ह। पुरातनकाल से आज तक ऊखि पेरे के जुगुति में जुग का संगे कतिना बदलाव होत रहल, ई अलहदा आ मुक्त बिचारन के मसला ह। आजु के कोल्हू के सरूप बहुते बदल चुकल बा। अब पेट्रोल-डीजल भा बिजुली से चलेवाला किसिम-किसिम के मशीन बाड़ी सन। एकरा से संबंधित शब्दावली में अंगरेजी के घुसपइस अधिका बा जवना के भाषा-विकास के लिहाज से गुनकारी ना कहल जा सके। प्रसंग बदे पहिले के कोल्हू आ एसे जुरल गति-बिधि के चरचा आगे बा।

कोल्हू

अगते के कोल्हू में लकड़ी के पोला कुंदा मुख्य आधार होत रहे। कुंदा के अंदरूनी गड़ही के, जवना में ऊख के गुल्ली रखाय, अलग-अलग इलाका में खान, घर, कुण्ड, कूँड़, हण्डा, हाँड़ा कहल जाय। एकर मथेला प किनारे के चौतरफे, ऊख के गुल्ली छिटके से रोके खातिर, माटी के पींड़ दियात रहे। कुंदा के चारो ओरि मजगूती बदे लोहा के पत्तर भा मड़रो बान्हल जाय। कबो-कबो कुंदा के भीतर, पेराई के मूसर के दूर रखे खातिर लोहा के छल्ला- मोरवार, मुड़वार, मूड़, मुरेरा, मुरवारी याकि चनवा -बान्हल जात रहे। खोखल के पेनी में लकड़ी के गोल पाचड़ रखल जात रहे जेकरा प मूसर घुमत रहे। लकड़ी के एगो अउरि टुकड़ा, रोड़ा (रोरा), चंदिया, भा खोंच के उपयोग खोखल में रस कूचे में मदद बदे होत रहे। कइ जगे कुंदा के सतह में एगो खाँच, जेकरा के रौन कहल जात रहे, काट दियात रहे जेकरा जरिए बहरी फेंकाइल रस कुण्ड में वापिस हो जाय। रस के बहरी टघरे खातिर कुंदा के पेनी में नरदोह, नरोह, नरोही, निरोह, रसेड़, गुजरुआ, जोहा, रसहा, रसधारा, छोनी, चोना याकि लरलो काटल रहत रहे। कठही टोंटी से रस पतनारी में गिरे। कुंदा में एगो खाँच बनावल जात रहे, जवना में घररा भा मांदर के फेंटा काम करे। जवन तख्ता से बैल जुतेलनि ऊ कतरी, कातरि भा कातर कहाय। मोहन, लाठ, जाठ मूसर के सोझ शहतीर, जवन चक्की के खोखल में ऊखि के कूचेला, के नाँव हवें। शहतीर के अंतिम छोर प ओखर-सन्हँ, जवन कुंदा के खोखल से जुड़े, मूँड़, मूँड़ा, मूँड़ी, कान्ह, कंधा, कन्हिया, पंजा, कान, लंगरा भा ढेंका कहल जाय। एकर ऊपरी सिरा चूर, चूरिया होत रहे। लकड़ी के घुमावदार कुंदा जवन मूँड़ से जुड़े तवन ढेंका, ढेंकुआ भा ढेंकुहा कहाय। ई घुमावदार कुंदा मूसर से सीध में जुड़ल होत रहे जेकि जमीन के बीच-बरोबर चालक-पट्ट से जुडे। सीधा-खंभा के हरिसा, मानिकथम, भा मनथम्ह कहल जाय। जीभा, जीभिया, फठा, कनैल, कन्हेली, कनैली काठ के ऊ टुकड़ा रहे जवन शहतीर के कुंदा के खोखल के आधार में रखाय। मूसर के सीधा क के सहारा देवे वाली पुअरा के जोर के नाधन, नधना, नधान, नाध बरता, बरह, सारंगी भा लेधा कहल जाय। जमीन के बीचबरोबर चालक-पट्ट से जुड़ल मनथंभ से तिरिछे ऊपर जाएवाला बाँस के टेक खरचाँड़ी, कमोरा, खँडचर, खड़चाली, कुडँड़िया भा खँरचारो कहात रहे। ई नारन, नाधा भा लारन के सहारे चालक शहतीर तक बान्हल जात रहे। क्षैतिज शहतीर के ऊ भाग जवना प चालक के बइठे के माँच होखे, कातर कहल जाय। शहतीर के जूआ से जोड़ेवाली चमड़ा के पट्टी नाधा, कन्हेली, माँझा, काढ़ कहात रहे।

बैल जवन गोल घेरा में घूमस ओकरा के गोरपौर, पौदर, पौर, पौरी, बही भा बड़हरा कहल जाय। ऊखि काटे से अगते ओकरा राखे बदे आमतौर प जमीन में एक खंदक बनावल जात रहे जेकरा के गेंड़ियारी, गेंड़ियार, टोनियाठी, टोनियार, टोनियासी, टोनखाद भा अँगरवार कहल जात रहे। कोल्हू में लकड़ी के मुँगरी भा थापी के सहारे ऊखि के भीतर दबावल जाय। कोल्हू के टोंटी से गिरत रस पतनारी का राहे जवन

बरतन मे एकट्ठा होत रहे ओकर नाँव खोर, खोरा, नाद भा कुंडा रहे। एकरा प अक्सर एक टोकरी या माटी के छनना रखल जात रहे जवना के स्थानीय नाँव तरौड़ी, छिट्टा, छिरहिरा भा डलिया रहे। खोर से रस कराह में पलटल जाय।

ऊखि के गुल्ली काटे वाला ठेहा के अलग-अलग इलाका में निसुआ, निसुहा, परियेठा, कुकाठ, परकठ, टोनकट्टा भा टोनकट कहल जात रहे। पेराई खातिर तैयार ऊखि के टुकड़ा के गेंड़ी, टोनी या अँगेरी नाँव ह। एक बेरि में ऊखि के जतना मात्रा कोल्हू में कूचे बदे डालल जा सकेला ओकरा के 'घानी' आ एक बेरि में कराह में जतना रस के मात्रा खउलावल जा सकेला ओकरा के ताव, खेपा, पाक भा रान्ह कहाला। ऊखि के पेरला के बाद बाँचल अंश खोइया भा चेफुआ ह। कइयक खेतिहर के बीच पेराई के काम पारापारी होखे जेकरा के भाँज, पारी भा पलटी कहल जाय। कोल्हू प एक से अधिका आदमी के मालिकाना हक होखे के स्थिति में बारी-बारी से भँजहरिया, सझिवैती, सबठैती याकि सझिया के अनुसार काम होखे।

खेत में ठाढ़ ऊख के डाँड़ काटे-छीले वाला मजूर अँगेरिहा, गेंड़वहिया, गेंड़छीला, पंजवाहा, पगरवाह, छोलवा, केतरपारा, परताहर, परनिहार, घुरकट्टा भा कटनिया आ ऊख के पेरे लाएक गुल्ली काटे वाला आदमी कानू, गेंड़िकाटा, पकवाह, अँगरवाह, टोनिकट्टा कहल जाला। कोल्हू हाँकेवाला कतरवाह भा हँकवा ह। कोल्हू में घानी डाले, मुँगरी से दाबे आ कुचात ऊखि के हाथ से हिलावे के काम मोरवाह भा घनवाह के जिम्मे रहे।

केल्हुआड़ी के पूर्वी छोर प माटी के छोट चउतरा बना के एगो पिडी के थापन होला जेकरा के 'महकार' कहल जाला। महकार के मूल संस्कृत के 'महाकाल' ह। उखियारी कठिन श्रम, कष्ट, अगियारी आदि खतरा के संभावना से जुड़ल चीज ह, ए से महाकाल के किरपा पावे के भाव एह परिपाटी के पीछे वाजिब वजह हो सकेला। ग्रियर्सन एगो किबदंति के उल्लेख कइले बाड़े जेकरा अनुसार कवनो काले, कवनो जगहे, कवनो केल्हुआड़ी में एगो डोम जाति के आदमी रस पीए के जाचना कइले त मालिक मनाही का संगे उनकर अपमानो क देले। छोभ में ऊ केल्हुआड़ी के भट्ठी में कूद के जान दे दिहले। उनुके अतृप्त आत्मा के शांति आ कवनो बिघिन से परिहार बदे केल्हुआड़ी में उनकर पिडी-प्रतीक के थापन होला। हर काज, अँगेरी के बाद ऊख, रस पेराई के समय रस आ गुड तैयार भइला प पहिला भोग अचवन का संगे उनही के अरपन कइल जाला। एह चलन का पीछे उखियारी के काम में सबके अनुकूलता पावे, शांति आ शुचिता के नजरिया के अनुमान कइल जा सकेला। एगो आन लाक्षणिक अरथो में एह शब्द के प्रयोग होला, एह अरथ में ई अफरात छुधातुर, बहुभोजी बेकती के वाचक ह। एह तरह के जीव के लोलुप नजर के निवारन या तुष्टि के कामना महकारोपासन के चलन के पीछू संभावित बा। का त बड़ी छरमताह होलें, आवभगति में चूक होइले कवनो तरह के अनिष्ट टारल ना जा सके।

चूल्हा

चूल्हा के आकार कराह के माफिक गोल भा चौकोर रखल जाला। चूल्हा में ईन्हन, जरना भा जरावन झोंके के छेद मुँह याकि मोहखा ह। छेद, जेकरा जरिए आग जरावल जाला, साँसी भा नँगड़ा ह। धुआँ के निकास खातिर चूल्हा के छोर प बनल छेद धुआँकस, धुँधुका, हिक्का या हींक ह। जरना के भीतर ठेले भा खोरे में प्रयोग होखे वाली छड़ी के खोरना, खोरनी, खोरनाठी, खोदौना, लहवाई भा अँचना कहल जाला। राख टारे वाली लकड़ी फरुही ह। चूल्हा झोंके वाला आदमी कानू, चुल्हझोंका, चुल्हअङ्गा, भा अँचवाह ह। कठही, कठखुरपी, सैक, सैका, सफई, सफैया, डोहरा, डपटी भा डब्बू के सहारे कराह से बहरी रस निकालल जाला। गाढ़ होत गुर के कराह में चिपके से बचे बदे खुरचे अथवा चलावे, उलटे-पलटे आदि काम खुरपा, खुरपी, कठखुरपी, पेड़नी या डपटन के सहारे होला। तैयार गुर के लपसी के चकरी बनावे खातिर उचित साँचा में ढार के गाढ़ होखे बदे छोड़ दियाला अथवा तनी भुरभुरा भइले गरमें-गरम हाथ से दबा के भेली पारल जाला।

चीनी-मिल

बड़ पैमाना प चीनी के उत्पादन-शोधन चीनी-मिल में होला। एकर कारखाना चीनी-मिल, चीनी के कारखाना, खँड़सार भा खँड़सारी ह।

पहिले के चीनी मिल में काँची चीनी बनावे खातिर हौज, नाली, बड़हन कुंड आ चलंत-फर्श के उपयोग होत रहे। हौज के हौद, हौदी, चहबच्चा, खँड़गरना, गुरहंडी, नाली के नारी, करहा भा खाता, कुंड के नाद, नाँद, डोभा, चरुआ आ चलंत-फर्श के पट्टा, पाटा, चबुतरा भा चट्टी कहल जात रहे। चीनी बनावे में नाली आ कुंड के शुरुआती इस्तेमाल होखे। चीनी के मोटरी, नारगी, थैया भा गाजा के कपड़ा में, जेकरा के लोथा या छलना कहल जात रहे, बान्ह के बाँस के ढाँचा प रख के पथल या धूप में सुखावल माटी से दाब दिहल जाय। बाँस के ढाँचा के खाँच, खाँचा, छँइटा, ठटरी, टिकठी, चचरी आ पथल के दाब के चाँपा भा थापी कहल जात रहे।

चूल्हाघर या भट्ठी में लोहा के बड़ कराह, फेन काढ़े बदे छनौटा (पौना, झंझरा), छनना के रूप में प्रयुक्त माटी के छेदिल नाद (ठेंठिवाल नाद), साफ चीनी के तह खँखोरे खातिर सितुहा या घुमावदार चाकू (सिहोरनी, सेहोरना), छानेवाली टोकरी (खाँची, डलवा, डेली), उबलत चासनी के ठंढ़ा करे खातिर लोहा भा काठ के करछुल (तामिया, डब्बू, गुरदन, झँझरा), कराह से चाशनी लेवे खातिर एकरा से बड़ लोहा के कलछी (तामा, खुरचनी, डोहरा, छोलनी, डोहला), कराह में चाशनी डाले खातिर माटी के जग (सैका, हत्था, पचनी), एकरे जइसन बड़ जग (निमड़ा, निबड़ा, परछा, तौला) के प्रयोग होत रहे।

छनना के लकड़ी के खूँटा बल्ला (सिड़ी, तिरपाई, टेपाई भा गोड़ी) के सहारे टिकावल जात रहे। आग बुतावे के फावड़ा फरुही, फउरा, कोदारी, खोरना, फरसा, कढ़नी भा अगकढ़ना आ गरम चाशनी के ठंढा करेवाली कड़ाही के कलछी तमियाँ, डब्बू, घोंटना भा दाबा रहे। चीनी के हरकावे वाली चटाई या कपड़ा के टुकड़ा के पाल, पाटा, टप्पर, टाट भा चट्टी कहल जात रहे। चाशनी के ठढ़ा करे खातिर लकड़ी के चापुट कड़ाही कठवत नाद भा ओसौनी कहात रहे।

आधुनिक चीनी मिल के सरूप में व्यापक बदलाव भ गइल आ सारा काम खुदचालित मशीन से होखे के कारण ई पूरा शब्दावली तकरीबन लोपित भ गइलें। एन्हनि के जगह अंगरेजी के शब्द सीधे प्रचलन में आवत जात बाड़ें।

कथा-कहाउति

ऊख के खेती निसंदेह उत्तिम ह। समृद्धि पावे के इच्छुक किसान बदे ऊख बढ़िया पसंद ह। कहाउति हवें कि 'बोईं त कपास भा ईख या फिर मांगीं खाईं भीख' अथवा 'सदा दिवाली संतघर जो गेहूँ गुड़ होय।' 'ऊख तक खेती हाथी तक बनिज' के संभावना से युक्त एकर खेती के दोसर बरोबरी नइखे। एकर खेती आसान ना, श्रमसाध्य आ कुकाठ ह- 'ऊख करे सब कोय, जे बीचे जेठ न होय,' 'जेठे जरे, माघे ठरे, तब जीभी प रोड़ा परे' जइसन लोकोक्तियन में एही बात के संकेत बा। ऊख मीठ ह, त ह, बाकी एकर खेती में साँसति एतिना कि ऊ किसाने जाने लें जे एकर अनुभव से गुजरेलें-

'माघ क पाला, जेठ क धूप,
बड़ी कसाला होले ऊख।'

ईहो कि-

'तपै मृगसिरा बिलखे चार।
बन बालक आ भैंस उखार।'

ऊख के खेती बदे सजग तैयारी जरूरी ह- 'तीन कियारी तेरह गोड़। तब देखऽ ऊखी के पोर।' बोवाई से लेके निकाई-गुड़ाई तक बेरि-बेरि माटी के मोलाएम रखे के जरूरत होला, कोड़ाई के एही बहुलता के लेके- **'ऊख तीसा, गहूँ बीसा'**

भा- 'सौ चास गंडा, पचास चास मंडा। तेकर आधा मोरी, तेकर आधा तोरी।' -के बात अक्सर कइल जाला। आलस भा आनंद के तेजे पड़ी। उत्सव-जसन त फिरो मनी बाकी खेती का राहे। घाघ के कहनाम ह- *'ऊ किसान मोरे मन भावे, ऊख पीड़के फगुआ गावे।' अउ कि- 'गेंहूँ बाहे, धान गाहे। ऊख गोड़े सेहो आहे।'* याने कि गेंहूँ के घनी छिटाई, धान के बिचड़ा तैयार भइले खेत के जोताई आ ऊख के गोड़ाई बाद में आह्लादकारी ह। एकर एगो उलट अरथ कइल जा सकेला, ऊ ई कि गेंहूँ ढोवे भा छींटे में, धान के अँटिआवे ढोवे में आ ऊख के गोड़ाई में कहँरबाई त उपटबे करी, देहि में दरद से भा ऊखि के पतई से चीरा के। ऊख के खेती सघन नीक, परिमान ह- *'हरिन फलांगन काँकरी, पेंगे-पेंग कपास, जा के कहऽ किसान से बोए घनी उखार',* ना कहईं पौध छेहर रह गइलें त हई परिनाम ह-

'फाँफर भला जौ चना, फाँफर भला कपास।
जिनकर फाँफर ऊखड़ी, उनकर छोड़ऽ आस।'

ऊखि के गिरह में रस ना होखे, माने ई कि अच्छाई के साथे कुछ कमियों हो सकेला, ई एगो तथ्य ह आ जानेवाला खूब जानेला। जे जानेला ऊ ईहो जानेला जे गिरह प दाँत पिजावे के का नतीजा ह। तब्बो केहू एह जिद्द में होखे कि ऊ गिरह के सवाद लेले बेगर ना मनिहें त उनकर मरजी। अब देखीं लीला, जहवाँ पोरे-पोर रस बा उहवें निपट निरसता के ठौर मौजूद बा, एसे गाँठ के निवारन जरूरी ह। रहिम खानखाना एह बात के ध लेले आ एह परतोख के ले उड़ले-

रहिमन जग की रीति, मैं देख्यों रस ऊख में।
ताहू में परतीति, जहाँ गाँठ तहँ रस नहीं॥

[हम रहीम, दुनिया के रीति रसगर ऊख में देखनीं। परतीति इहे कि जहवाँ गिरह बा तहवाँ रस ना होखे।]

रहिमन खोजे ऊख में, जहाँ रसन की खानि।
जहाँ गाँठ तहँ रस नहीं, यही प्रीति में हानि।

[रहीम ऊखि में एह जथारथ के जोह लेले कि ऊखि मे रस के भंडार बा, बाकी जहवाँ गाँठ बा तहवाँ रस नइखे। प्रीत में इहे खामी बा।]

जहाँ गाँठ तहँ रस नहीं, यह रहीम जग जोय।
मँड़ए तर की गाँठ में, गाँठ-गाँठ रस होय॥

[हम रहीम, कहत बानीं कि ई जवन दुनिया ह नू अदबद के ऊखि नियन, जहवाँ गिरह बा तहवाँ रस ना होखे, बाकी मँड़वा

में बान्हल गाँठ के त पोरे-पोर रस होला।] चलीं जाए दीं, हिहाँ खाननखाना जी कवनो डोलड्रम (दोलद्रुम) में नइखन कि हेने, कि होने, हई आ हइहो। बस ओह भिन्न परिस्थिति के जिकिर उनकर मकसद बा जवना में एके चीज, नीमन भा जबून होला। जे बा, से अपना जगे हइए बा।

परिस्थिति आ वक्त के नजाकत समुझेवाला कबो निहफल ना होखे। थोरिक से अधिका के अनुमान लगावे के जुगत कवनो नया चीज ना ह। अरे भाई, जब खदकत चाउर के एकइ दाना टो लिहनी त भर हाँड़ी हाथ हिड़ोरे के का दरकार? जे ऊखियारे ऊखि न देई का केल्हुआरे मीठा देई? कहे के मतलब, जे अइसन जगे जोर आजमाइश क के फुक्का बनल कवनो चल्हाँकी के काम ना ह, झुठहूँ माथ खराब होखी, मकसद त नाहिएँ सधी।

नीति-नियम जुग-जुग के अनुभव से आकार लेलें। जिनिगी में कुछ परिस्थिति अइसन पैदा हो जाली जवना में फँस के आदमी के अकबक काम ना करे। जवन सामने बा तेकरा के झेलहीं पड़ी, बाकी नीति के भान रहले एक हद तक तेकर निवारन हो सकेला, ना त तेकर असर आ तीव्रता के त कम कइले जा सकेला। अइसने कुछ हालात के बात घाघ कहलें-

घर के खुनुस औ जर के भूख। छोट दमाद बराहे ऊख।
पातर खेती भकुआ भाय। घाघ कहे दुख कहाँ समाय।

[घर के चखचख, जर उतरले के भूख, कन्या से छोट दामाद, सूख रहल ऊख, छेहर खेती आ बेवकूफ भाई, घाघ के कहनाम कि अइसन दुख के कहवाँ अंत?]

ऊख के दोसाल खेती प्रचलित ह। एह में पहिले के ईख के कटाई का बाद जरि से फूटल नया पचखी के निकाई-गुड़ाई-छँटाई क के आ रिक्त जगह नया गेंड़ा रोप के अगिली फसल तैयार कइल जाला। घाघ एह रीति से इचिको सहमत नइखन। उनुकर कहनाम ह-

'बाड़ी में बाड़ी करे, करे ईख में ईख।
ऊ घर जइहें ओसहीं, सुने पराई सीख।'

मतलब ई कि कपास के खेत में फिर कपास आ ऊख में फिर ऊख बोवेवाला गिरहस्त के घर ओसहीं चउपट हो जाई जइसे कि दोसर के सीख प अन्धड़ेके कान देवेवाला। ई 'कान देवेवाली बात' प एगो किस्सा मन परऽता।

जोलहा भाई आ महतो जी के घर अगले-बगल रहे। महतो जी खेती-बधारी में माहिर रहन, तेकर परिनाम ई कि घर में रमन-चमन रहे। एने जोलहा भाई रातेदिने करघा खटखटावस तबो हाथ सकेते रहे। बाकी करस त का? खेत अछइत खेती-बारी के कला के ज्ञान ना रहले एह काम में दिकदारी बुझाय।

पूस-माघ के महीना होई। महतो जी दिन भरि के काम-काज से निबट के घरनी का संगे अगवासा के चउतरा प बइठल भावी खेती के जोजना का बारे में मशविरा करत रहन। एह में ऊख के खेती के सरेखपन आ रीति के बखान रहे। जोलहा भाई के बुद्धि बिजुरी अस कउँधल। ऊ फौरी तौर प तय क लेले आ महतो जी से सुनल ऊख के खेती के बिधि के अगतहीं अनुशरण शुरू के देले।

महतो जी जबले चासे में अझुराइल रहन, तले उनकर तेखार हो चुकल रहे। ऊ जले गेंड़ा के बीहन तैयार करे में मशगुल रहन तले इनकर गंडाधार खतम। मतलब ई कि इनकर सब काज अगाते निबटे। अदबद के तरपर जुगलबंदी प महतो जी के ध्यान त गइल बाकी ऊ एकरा के महज संजोग मान के खास तरजीह ना देले। निकाई-गुड़ाई, खाद-पानी सब क्रम में आगे भइल, आ मन से भइल। परिनाम बढ़िया त होखहीं के रहे।

जोलहा भाई के ऊखि का आगू महतो जी के ऊखि फीका पड़ गइल। इनकर गेंड़ा बाँस अस उनकर तुतुही। इनकर खेती के जसगाथा चौतरफा फैलल त उनका मनभुँई में हीनताबोध का साथे इरिखा के कतिने ना खर-पतवार फफस अइले। ऊ तजबीज से सारा माजरा जान चुकल रहन कि जोलहा भाई के सफलता के सूत्र कहवाँ बा? ओह दिन चउतरा प महतो जी दूनो बेकत फेर से बइठले। फेर से बतकही भइल, बतकही में ऊखि के चरचा फेर से भइल। गुफ्तगू में कुच्छो गुपुत ना रहे। महतो जी के आवाज तनी टाँठे रहे, भावभंगी में अनुभव के ठाठ लहर मारे- "सुनत बाड़ू हो? सोचत हईं कि काल्ह ऊखि में बढ़िया से हेंगा दे दिहल जाव। एसे ऊखि के डाँड़ मजगूत होई आ पिलुओ-पताई मरि जइहें। ई बतिया त हम तहरा से कहलहीं ना रहीं।"

होत फजीरे सारा गाँव देखल बाकी केहू के समुझ में ना आइल कि जोलहा भाई ठाढ़े ऊख के हेंगा से रँउद काहे दिहले?

ऊख के खेती में उचित प्रभेद के चयन अच्छी पैदावार खातिर बहुत जरूरी ह। एह नजरिए पौड़ा ऊख के बहुते जस ह, ई मोट, लमहर आ रस से भरल होला- 'सौ गन्ना न, एक पौंडा।' कुसियार नाट आ चीमड़ किसिम के ऊख ह, साइद एही बात के जेहन में रख के 'बोवे कुसियार त रहे हुसियार', 'हाथ न हथियार, कामा काटे कुसियार' जइसन बात लोक-जुबान प आवेले। अइसे त पूसे-माघ में ऊखि पेराई बदे उपयुक्त हो जाला बाकी रस के मिठास आ गढ़गर होखे से बसंत में ऊख के गुन-तासीर निखार प होला- 'बसंत आइल आ ऊख पाकल।' समरथी के संगत के गुन-दोख के बात जब-तब होला, अइसन समान धरातल प होखे त का कहे के? ऊ आपन नसीब प केहे

ना इतरइहें जेकरा 'हाथी से ऊख खाए' भा 'हाथी के साथे ऊख चूसे' के अवसर उपलब्ध बा।

साहित्य में ऊखि

ऊखि के मिठास हर जुग में आदमी के ललचवलसि। मधुराई के चाहे कवनो सरूप रहे, तेकर तोलन बदे उखि से बढ़ के अउ कवन परतोख हो सकत रहे? अथर्व के एक ऋचा में नवब्याहुता बहुअरि संग बइठल पुरुख के हई कहनाम सुने-गुने लाएक बा-

"परि त्वा परितलुनेक्षुणागामविद्विषे। यथा मां कामिन्यसो यथा मन्नापगा असः।" -अथर्व 1.34.5 ।

(चारो ओरि से घिरल, मीठ ऊखि सरिस परस्पर प्रिय आ मधुरता का संगे रहे खातिर हे पत्नी, हम तहरा मिलल बानी। हमरे कामिनी बनल रहऽ, हमरा से जुदा जनि होखऽ, एही बदे हम नगीच आइल बानीं।) दाम्पत्य में हइसन सघन खिचाव का पाछू दैहिक लुनाई का संगे गिरहत्थ-जीवन आ त्रिया-पुरुख के बीच के संबंध के ऊँच आदर्श दोसर कुछ नइखे हो सकत।

जैन साहित्य में एह बात के जिकिर बा कि भोगजुग के खतम भइले कल्पतरु के कमी हो गइल, जवना से जीवन के सब जरूरत पूरन हो जात रहे। जीवन निरबाह के साधन कम पड़ले दुखी जन-समुदाय आपन रक्षक नेमिराज से जान बचावे के फरियाद कइले। राजा ढाढ़स दिहले कि दुखी होखे के दरकार नइखे तू लोग ऋषभदेव के पास जा, ऊ निदान करिहें। ऋषभदेव जन समुदाय के ऊख के पौध से परिचित करइले आ तेकरा चूस के भूख-पियास मेंटे के तरकीब बतइले। ऊहे जनता के ऊख के खेती करे के तौर-तरीका सिखवले। ऋषभदेव पहिले-पहिल 'इक्षु' शब्द के प्रयोग कइले एही से उनकर बंस 'इक्ष्वाकु' नाँव से प्रसिद्ध भइल- 'इक्षु इति शब्दं अकरोतीति, अथवा इक्षुमाकरोतीति इक्ष्वाकु इतिः।'

पानी के भेंटले पियास बूझ जाई, ई भइल सामान्य बात। पानी खार होखे त पियास कम होखी बाकी मन ओतना तिरपित ना होई। पानी के असर, पता ना कवन-कवन गुल खिलावे ला, तबे त ढेर लोग पानी बरकरार राखे के सीख दे गइल, ऊ चाहे ईजति होखे, चेहरा के पानी होखे भा मटाही सुराही के निरमल-ठंढ़ा जल। बढ़िया कद-काठी देखि के 'हुहाँ के पानी के नीमन' होखे के बात अक्सर लोक-जुबान प आइए जाला। अइसन अजहूँ होला, तबो होत रहे। अजोधा के पानी नीमन रहे, तेकर मधुरता के आदर्श उपमान खातिर ऊखि के अलावे कवनो आन चीज वाल्मीकियो जी के कहवाँ लउकल?

"गृहगाढामविच्छिद्रां समभूमौ निवेशिताम्।
शालितण्डुलसम्पूर्णामिक्षुकाण्डरसोदकाम्॥" वाल्मीकि रामायण 1,5.17

[चौरस जमीन प घर-पाँति के सघन बसावट से आबादी गझिन रहे। नगर धान-चाउर से परिपूरन रहे। हुहाँ के पानी त एतना मीठ रहे जइसे ऊख के रस।]

गीता के एगो उक्ति ह-

न कर्तृत्वं न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभुः।
न कर्मफलसंयोगं स्वभावस्तु प्रवर्तते॥ गीता 5.18

मतलब कि ईस्सर ना कर्ता हवें, ना कर्ता बनावस, ना कर्मफल के संजोग रचस। ऊ त बस्तु के सुभावे ह जवन सबमें रत बा। एही बात के संस्कृत के एगो सुक्ति में कुछ परतोख के सहारे बाखूबी कहल गइल बा। केहू के मन में ई सवाल होखे कि पानी के ऊँचाई-गहिराई के देखावल, चिरइँन के अनोखापन के सिखावल, ऊख में मिठपना आ नीम में कटुकता के भरल? वस्तुतः ई सब सुभावे से सिद्ध ह-

"निम्नोन्नत वक्ष्यति को जलानां विचित्र भावं मृगपक्षिणां च।
माधुर्यमिक्षौ कटुतां च निम्बे स्वभावतः सर्वमिदं हि सिद्धम्।"

जिनसेन के 'आदिपुराण' में कइयक जगह ऊख के जिकिर आइल बा जे से हर जुग में तेकर महत्व के बात सोपट बा। कामदेव के तीर के चरचा खूब ह, ईहो कि पाँच फर वाला ओहि तीर के सब नोक एकक गो फूल (अरविद, अशोक, आम्रमंजरी, नवमल्लिका, नीलोत्पल) हवें, बाकी उनुकर धनुही का ओरि कमें ध्यान जाला, ई अउर कुछ ना ई ऊखे ह-

"सुमनोमञ्जरीवाणैरिक्षुधन्वा किलाङ्गज।
जगत्सम्मोहकारीति कः श्रद्दध्याद्युक्तिकम्।" -आदि पुराण 16.26

[ऊखे जेकर धनुही ह वइसन कामदेव अपन पुहुप-मोजर के तीर से सारी दुनिया के संहार कर देले एह अयुक्त बात प भला के ऐतवार कर सकेला।]

जिनसेन के ध्यान जहवें कहईं, खास क के लोकजीवन प जाता, ओजा ऊख के सम्मोहन से छूट नइखन पावत। एक जगे गिरामिन जिनिगी के बखान करत कह गइलें कि-

अकृष्टपच्यैः कलमैः धान्यैरन्यैश्च सम्भृताः।
पुण्ड्रैक्षुवनसंछन्नसीमानो निगमाः सदा॥ -आदि पुराण 19.73

[ऊ गाँव बेबोवले पैदा होखेवाला धान के चाउर से आ आन खेती से हरियर रहेलें। उनकर सीवान पौढ़ा ऊख के जंगल से हरमेसे ढकल रहेला।]

महज ऊखि भा ऊखि के रसे के बात भर नइखे, एकर उत्पाद के बात करत-करत नकदम हो जाई बाकी बात ना ओराई।

मद्याङ्गा मधुमैरेयसीध्वरिष्टासवादिकान।
रसभेदांस्तातामोदान् वितरन्त्यमृतोपमान्। -आदि पुराण 9.37

[उत्तरकुरु में मद्याङ्ग जाति के पसरत सुगंध से भरल बिरीछ, अमरित सरीखे मधु-मैरेय, सीधु अरिष्ट आ आसव, अनेकन रस देले।]

हिहा ई मजिगर बात बा कि मैरेय. सीधु छोवा से बनल मादक पेय आ अरिष्ट-आसव औसध हवें जेकरा के अमरित ना त ओकरा से कमों नइखे कहल गइल।

पुष्पदंत के जसहर चरिउ (1.3) में यौधेय देश के प्राकृतिक सुंदरता आ संपन्नता के बखान में पवन के जोर से हिलोर मारत ना, नाचत ऊख के खेतन के चित्र उभरल बा- "जहँ उच्छुवणइँ रसदंसिराइ। णं पवणवसेण पणच्चिराइ।" एही तरे अवन्ति देश के मोट-मोट रसगर ऊख चर के डकार मारत आ जीभ से दुग्धा गायन के देह चाटत बरधन के मनोरम लोकचित्र उकेरल गइल बा-

"जहि गोउलाइ पउ विक्किरंति। पुंडुच्छुदंड स्यंडइँ चरंति।
जहि बसह भुक्कढेक्कार धीर। जीहा विलिहिय णंदिणि सरीर।" -जसहर चरिउ 1.21

बढ़िया चाल-चलन, ज्ञान आ कोमल सुभाव कुलीनता के चिन्हाँसी ह, एकरा बदे अउ कवनों पैमाना ना हो सके। सज्जन के संगति सुखद ह त एकर मुख्य वजह इहे ह कि ऊ मन-बचन आ कर्म से केहू खातिर तकलीफदेह ना हवें। बात हिहा नीति-पदेस के नइखे बलु बात बिगरले बात बनावे के जतन ह। 'गाथासप्तशती' के एगो गाथा ह, अगते निरादर भ गइल, बाद में भूल बुझाइल त ललोचप्पो शुरू-

"जीहाइ कुणन्ति पिअं भवन्ति हिअअम्मि णिववुइं कांडं।
पीडिज्जन्ता वि रसं जणन्ति उच्छू कुलीणा अ॥" -गाथासप्तशती 6.41

मतलब कि कुलीनजन आ ऊखि जीभ प नीमन होलें, हिरदा के ठंढक देलें आ पीड़ित होके रस देलें। कल्हांतरिता के कथन ह- "दाँते कूँचे का बादो ऊख रस देला, कुलीन निठुराई सहियो के अनुकूल रहेलें।" अब हेतना प केकर कोह ना काफूर हो जाई?

एक गाथा में कोल्हू हाँके वाला इयार से रसिकता पावे के कामना का संगे ई ताना परगट बा कि "गुड़ खोजेलऽ आ हमरा इच्छा से कोल्हू ना चलावेलऽ। ए अनरसिया, का तू ना जानेलऽ कि बेगर रस गुड़ ना होखे?" अब एह बात के जे बुझल ऊ ठीक, ना बुझले एकरा से बढ़के अउ का कहल जा सकेला?

"जन्तिय गुलं विम्मगसि ण अ मे इच्छाइ वाहसे जन्तं।
अणरसिय कि ण आणसि ण रसेण विणा गुलो होइ॥" -गाथासप्तशती 6.54

'पुरान चाउर के पथ पड़ेला' ई कहाउति अक्सर कहल जाला। एह तरे के कथन के प्रसंग आ परिस्थिति तनी अलगा होला। ढलान प गाड़ी के गति तेज ह, ई ह त सच्चाई बाकी हकीकत त ईहो ह कि एजा सम्हरे के जरूरत जादे होला, बरना खलेटी में लोंघड़ाए से ना बाँचल जा सके। ढलल बयस प लुबुध लंपट झेंप मिटावे बदे ईहे नू कही-

जो होइ रसाइसओ सविणट्ठाणं वि पुंडइच्छूणं।
कत्तो सो होइ रसो मोहासाणं अणिच्छूणं। -गाथासप्तशती उत्तरार्ध 734

(बेरि-बेरि बिनसल पोढ़ ऊखि में रस के जवन अधिकाई होखेला ऊ आन ऊखि में कहाँ।)

जायसी बिधाता के सृष्टि रचना में ऊख के जिकिर कइल नइखन भूलल- "कीन्हेसि ऊख मीठ रस भरी।"

'अखरावट' में जायसी सरबस साधना-बिधि के ऊख-उखारी के रूपक में बान्ह दिहले बाड़न। गुर आ गुरु के प्राप्ति मीठ परिनाम ह, जेकरा के कवनो जीवटवाला ही मन प जमा पावेला। एकरा बदे देह के प्रखर करे के होला, दिन-रात के जगार के बादे एह फर के सवाद नसीब होई। नीन आ भूख बिसरि जाई, चित्त ऊखे अस झूला खेली। सारी चिंता ऊख (रस-सोत) के रही। जमीन (चित्तभूमि भी) के कोड़-खन, तन-कोल्हू में कातर-मन के चकरघिन्नी, पंचतत्त हँकवा, दुनियादारी के भठी में निरंतर झोंकाई, खुदे के पेर के चेफुआ बिलगावे पड़ेला, तब जाके रस परिपाक होखी।

फा- फल मीठ जो गुरुँ हुँत पावे। सो बीरौ मन लाइ जमावे।
जौ पखारि तन आपन राखै। निसि दिन जागै सो फल चाखै।
चित झूलै जस झूलै ऊखा। तजि कै दोउ नींद औ भूखा।
चिंता रहै ऊख पै सारू। भूमि कुल्हाड़ी करै प्रहारू।
तन कोल्हू मन कातर फेरे। पाँचौ भूत आतमहि पेरे।
जैसे भाठी तप दिन राती। जग धंधा बारे जस बाती।
आपुहि पेरि उड़ावै खोई। तब रस औंट पाक गुड़ होई।
अस कै रस औटावहू जामत गुड़ होइ जाइ।
गुड़ तें खाँड़ मीठि भइ, सब परकार मिठाइ॥ -जायसी 'अखरावट', 28वाँ पारा

एकरा अगते ऊ कह चुकल बाड़े कि जेकरा सँचहूँ खेले के बा, त खेल लऽ बाकी जान लऽ कि एकरा बदे उखार में आगि लगा के झूमर गावे पड़ी। ई उख-उखार आउ कुछो ना, दुनियावी रस सँजोवले, ई देहिए ह नू-

खेलि लेहु जस खेलना, ऊख आगि देइ लाइ।
झूमरि खेलहु झूमि कै, पूजि मनोरा गाइ॥ जायसी, 'अखरावट', 22वाँ पारा

कबीरो बाबा त 'घरफूँक तमाशा' देखे के अइसने बात के

वकालत कइलहीं बाड़न- "जो घर फूँके आपना चले हमारे साथ।"

ई जानल बात ह कि ऊखि जरि देने जादे मीठ होला। ऊखि के एह बिसेखी का ओरि संकेत करत तुलसीदास जी के एगो नीतिपरक दोहा ह-

"अति ऊँचे भूधरन पर भुजगन के स्थान।
तुलसी अति नीचे सुखद ऊख अन्न रसपान।"

जादे ऊँच पहाड़न प साँपन के बसेर ह, ऊख, अन्न आ रसपान के सुख त तल्ली में भेंटेला। मतलब कि जे ऊँचाई प जाए बदे बेअगर होखे ऊ जान ले, तुलसी त नीचे रहन, नीचे रहिहें, एहा में आनंद। एगो अउ-

"सुजन सुतरु बन ऊख सम, खल टंकिका रुखान।
परहित बनहित लागि सब, साँसति सहसि समान॥" -तुलसी

हिहा तुलसी बाबा के ई कहनाम कि नीमन आदमी ऊखि आ जबून लोग कुल्हारी-रुखानी सरिस होलें। सज्जन परहित बदे का का ना सहे?

वृंद के बिचार कि दुरजन से पाला पड़ल एह वजह से ठीके मानल जाई कि एकरा बादे सज्जन संगति के सुख के समुझदारी पैदा होला-

"सुख सज्जन के मिलन कौ, दुरजन मिले जनाय।
जाने ऊख मिठास कौ, जब मुख नीम चबाय॥" -वृंद

ऊ त सहवास, वेद भा संगीत के सेवाय अउ के कुछ भैलुए नइखन देत, बाकी सुख त दहिने-बावें के चीज ह। उनका नजर में भौंरा कमलिनी के मजा लेवे के सिरी-गनेस एही बदे करेला कि आगू ओकरा ऊखि के आनंद भोगे के बा। अब ई त ऊहे जानस जे ऊखि के कठोर खलचोइया प भौंरा के दाल गलेला कि ना-

"रतिरस स्रुतिरस रागरस, पाय न चाहत और।
चाखत सदु अरबिद कौ, लेन ईख रस भौंर॥" -वृंद

केहू कहि गइल कि बेगर सवाद लेले कइ चीज के आनंद ना भेंटे-

देखे ते मन ना भरे, तन की मिटे न भूख।
बिन चाखे रस नहि मिले, आम कामिनी ऊख॥ अज्ञात

बातो सहिए ह, बाकी हेह लोग के का कहल जाई? द्व जने अइसन इलाका के रहन जहवाँ धान ना होत रहे। उनके बतकही ह, सुनींजा- एक जने- "अरे इयरवा, कादो गुड़ संगे चूरा-दही बड़ी नीक लागेला।" दोसर जने- "कइसे? खइलऽ ह का?" "ना भाई, ऊ त बाबूजी, शहर गइल रहलन त एगो आदिमी के खात देखले रहलन।"

बेनी के त बतिए अलग बा, कुछ लोग अइसने हइए ह, बात मनिहें बाकी बगल में दोसर डँड़ीर खाँच दिहें- "सब ते मधुर ऊख ऊख ते पियूख औ पियूखहूँ ते मधुर है अधर पियारी को।" चलऽ जवन नीक लागे तवने चाभऽ बाकी ई त मनलऽ नू कि ऊखि सबसे मिठगर ह। कवि लोग मूडी ह, झोंक में अइले सरग-पताल क जइहें। देव भद्र किसिम के कवि रहन। कवि लो' के लपक-झपक के आदत प कुढ़ जास- "कहीं, ईहो कवनों कविता ह? जब देखऽ मेहरारुन के आँख में मछरी, मिरिग, कमल आ खंजन खोजे में तल्लीन बाड़े लोग, कविता कवनों खेल ह का?" बाकी अपने रौ में अइले, त अइसन कहि गइले कि एकरा प का कहल जाव? का त अनार, किसमिस, आम, मिसरी, मध, ऊख आ अमरित अस जल, पीए के बा त पीयऽ, बाकी ई सब तरुनी तिया के होंठ से हेंठे रहिहें, ओतिना तृप्ति ना भेंटी-

दाड़िम दाख रसाल सिता मधु ऊख पिये औ पियूख सौं पानी।
पै न तऊ तरुनी तिय के अधरान के पीबे की प्यास बुझानी। -देव।

संदर्भसूचीः-

1. अथर्व 1.34.5, मैत्रायणी संहिता 3.7,9, 4. 2,9, वाजसनेयी संहिता 25.1, तैत्तिरीय संहिता 7.3,16,1 आदि।
2. 'उणादिसूत्र' -3.157
3. देखे जोग, भावप्रकाशनिघंटु 9.1, 9.3-4
4. शब्दकल्पद्रुम।
5. 'उदिक्षुवृश्चिकयो' (प्राकृत-प्रकाश 1.15) सूत्र से इक्षु के इ उ में, 'ष्कस्कक्षां ख' (प्रा०प्र० 3.29) सूत्र से क्ष ख में, 'शेषादेशयोर्द्वित्त्वम्' (प्रा०प्र० 3.50) से शेष व्यंजन (ख) के द्वित्व (ख्ख), 'वर्गेषु युजः पूर्वः' (प्रा०प्र० 3.51) से ख्ख क्ख में, 'सुभिस्सुप्सु दीर्घः' (प्रा०प्र० 5.18) से उकारान्त प्रतिपादिक उ ऊ में आ वर्णव्यत्यय से अन्त्यस्वर के जगह आदिस्वर के दीर्घीकरण- इक्षु > उक्खू (प्रा०, अप०) > ऊख।
6. भगवान सिंह, 'सोम लता की पहचान' नाँव के निबंध।
7. धातुपाठ।
8. "Bihar Peasant Life" -George A. Grierson,
9. देशी नाम माला 10 संस्कृत कोश- वा. शि. आप्टे।
11 वाचस्पत्यम्। 12 अमरकोश 13 वाल्मीकि रामायण
14 आदिपुराण- जिनसेन। 15 हरिवंश महापुराण- जिनसेन।
16 जसहर चरिउ- पुष्पदंत। 17 गाथासप्तशती- हाल।
18 अखरावट- जायसी 19 दोहावली- तुलसीदास। आदि ग्रंथन के सहारे साभार।

◆ ◆ ◆

असेस प्रेम प्रत्यय-परिचय दास

कई बेर सांझी के बेरा
बँसवारी के ललचौंह में चुपचाप बइठल
एगो छेड़ देईलाँ किस्सा कहनी
अढ़उल के फूल के गप्प
गुल्लर के पेड़ के अंतरंग अलाप
पृथिवी के शब्दहीनता के भाव
आत्मा के उड़ान भरत लइकन के उजास
अकास के इंद्रधनु के भित्तर बइसल एगो कोमल कविता के
कहीलाँ-
हे सारंगा, अब तू कथा-कहनी खाली ना बाड़ू
अब तू हऊ एगो स्पर्श, एगो मन के विस्तीर्ण वितान
एगो जूड़ा के मनोमय बंधन
एगो सुगंध विश्वास के
हे प्रियतमा,
हमनी के आपन सनेह
परे हऽ भाषा से
कवनहूँ दर्शन सिद्धांत से
काल, युक्ति, निन्दा, द्वेष आ चतुराई से
सगरो क्रिया पद आ विशेषण छूट जालें इहवां
सगरो व्याकरण आपन गति छोड़ देलें
हमनी के अनुराग के छाँह में।
कवनों सावन-अगहन के हरियरी तोहके उतार
दिहलस हमरा एक-एक पंक्ति में, ई पतो ना चलल
कवनों फगुनहट उतरि आइल
तोहरे रंग के कसक के साथे
हर पन्ना पर, हर पेड़ पर,
हर पुनुई पर, हर फूल में, हर कन में, हर भंगिमा में।
कवनो हाट बजार में अबीर आ गुलाल के पुड़िया में,
कवनो ताज़ा फल के सुगंध में सपनीले अकास में
उतरि आइल एगो बतकही-नीयन
एगो संवेदना नीयन
एक-एक छुवन में
एक-एक प्रतीक्षा में
दुपहरी के सन्नाटा में कोयल के बोल नीयन
शब्द-रस-गन्ध से उतरत आ समय के अनुवर्तन में समात
असीम के प्रत्यय में
कउड़ा के आँच जइसन भीतर के सच के तुहऊँ देखलू आ हमहूँ
ईहे सपना बनल तोहरा-हमरा अनुराग के बिम्ब

लगेला कि एतना शब्द के दबाव
सूचना के अधिकाई
ताकत के जबरजोत
भीड़ में बिलाइल अस्मिता
बावजूद एकरा के तूं उतर आवेलू टौंस, गंगा,
देवताल आ तुलसी ताल के अतल-अजस्र प्रवाह में
न तूं लउकलू हमके ना हम लउकलीं तोंहके
शब्द से परे खोजीलाँ तोंहके
कविता ओहिजू हवे
स्पर्श-भाव, स्पर्श-गन्ध, स्पर्श-अनुराग: भाव-स्पर्श!

(शेष अगिला पन्ना पर.....)

जवन सृष्टि हमरा भित्तर तूं कइलू
ऊ पुरइन पात नीयन निर्मल सुचिक्कन
दिगंत के प्रसार जइसन
सगरो राजा महराजा करिन्दा वज़ीर के चमकत
ऐश्वर्य से परे
ओके धक्का देत
काला-नमक चाउर नीयन झक्क शुभ श्वेत तोहार
आकर्षण
दूब नीयन पाथरो में उगि आइल लगाव
निर्जन आन्तरिकता में
दुनिया के सगरो भय आ संकोच से अलग

चन्द्रमा निहारेला पृथ्वी के
अइसन निर्जनता में
तोहार जुड़ाव के सुलभ्य छन्द
गाँव के पोखरी के भीतर खिलल एगो फूल के
सुन्दरता नीयन
निद्राविहीन समय में एगो लोरिकी के किस्सा
जइसन प्रीति
बड़हन लोगन के का पता कि आकर्षण आ प्रीति न
होखे
तऽ न कोयल के कूक होखे न पुरवाई बयार चले
मनई रहि जाय एगो निर्वाक खंडित मूर्ति
इतिहास में विलीन मनुष्य के गाथा, परीकथा,
लोककथा आ गाँव के कुंआँ के भीतरी स्वर
ना पता प्रेम के परिभाषा
देश समाज के साक्षी हवें भाषा-रहित हमनी के
हृदय के कम्पन के
अन्हियार साँझ में
सावन के हरियर बरखा में भीजल मन
भीजल माटी के सोन्ह गंध
आ
आरती के घंटी ध्वनि में डूबल सनेह में सुवासित
चन्द्रमा आ तरई
राती के झिंगुर के गान से समकालीन कविता
नीयन
एगो बिम्ब उभर आवेला नेनुवा के फूल नीयन
तोहरा प्रीति के
अखरतिजिया के त्यौहार नीयन
अमृत बेला में तोहार
कोमल गांधार अनुराग
सुक्खल मटियो पर एगो अभिमंत्रित अभिलाषा
आ चाह के रंग बोध के साथ
सपना में भरल कथा के साथ
मुट्ठी भर अच्छत के पवित्रता के साथ।

◆ ◆ ◆

परिचय दास

ग़ज़लः1

आँख उनकर त...

आँख उनुकर त भर गइल होई
नींद बिल्कुल त मर गइल होई

ओस भोरे पहर पता दिहलस
रात अनबन त बर गइल होई

भूल केहू गइल, गइल होई
काँट अचके त गड़ गइल होई

प्रेम में आँख लसर फसर होला
साध उनुकर सिहर गइल होई

बोल के चल गइल अवह जाला
आग सुनुगल ऊ धर गइल होई

रोज के चान बा, जगावत बा
लोर ढरकल पसर गइल होई।

◆ ◆ ◆

ग़ज़लः2

केहू कइसे कही...

घात के आँच में सहर लहकल
बात के बात में सहर चसकल

रोज सकदम कहाँ रहल एतना
जिदगी साथ में लहर धधकल

रोशनी रह गइल बिखर ओने
खोज के साँस में जहर जमकल

आदमी का रहल बुझाइल ना
लेखनी रह गइल डगर बहकल

केहू कइसे कही मगर विद्या
आज के लाग में सहर धधकल।

◆ ◆ ◆

गीत

सजन हो, सालेला करेजवा...

नेह के गेंठरिया जीवनवा में पइतीं,
खइतीं ना अइसन हिचकोर,
सजन हो, सालेला करेजवा में जोर।

नेहिया सललका के होला ना अंगेजवा
फाटेला बिहरेला आ दरकेला करेजवा
ममोरीला अंगुरी में कोर,
सजन हो, सालेला करेजवा में जोर।

अँखिया के कजरा सुसुकले धोआला
सपना धुँआला आ अगिया बोआला
बुते ना बरिसला से लोर,
सजन हो, सालेला करेजवा में जोर।

तोहरी अवनवाँ के तिकता जीवनवा
घरहीं में देले बाड़ऽ हमरा के बनवा
असरा पुराइ देतऽ मोर,
सजन हो, सालेला करेजवा में जोर

◆ ◆ ◆

विद्या शंकर विद्यार्थी

शास्त्री नगर

- मनोज कुमार वर्मा

शास्त्री नगर -1

अब जे सीवान के भूगोल से परिचित नइखे ओकरा के त बतावहीं के पड़ी। जेपी चौक से तनी आगे रजिस्ट्री कचहरी के मोड़ बा, जहाँ से सीधे दक्खिन सिमेंटेड रोड चल गइल बा। ओहि रोड में एक फर्लांग आगे बढ़ला पर ठीक हनुमानजी के मंदिर के सामने से पच्छिम के तरफ जात एगो गली मिली। गुरुजी के मकान से सटल गली अंदर गइल बा। गली अंदर जा के जंगली लत्तर जइसन फइल गइल बा। अंदर तीस-चालीस मकान के एगो भरल पूरल महल्ला बा। नाम ह शास्त्री नगर।

गुरुजी के मकान के उत्तरी दीवाल ध के जौन गली अंदर घुसेला ऊ जगदीश हलवाई के मकान के सामने से दक्खिन मुड़ जाला। कोना पर ठाकुर बसंत कुमार के मकान बा। साँप अइसन गली बल खा के दक्खिन मुड़ेला त एगो आउर कोना पड़ेला। ओह कोन पर ठाकुर बालेश्वर प्रसाद अधिवक्ता के मकान बा। इहाँ से गली सीधा हो जाला। गाँधी भैया वकील के मकान के आगे बाबू चन्द्रदेव नारायण लाल के मकान बा। कचहरी में उहाँ के टाइपिस्ट के काम करीं, एहीसे सभे टायपिस बाबू कहे। टायपिस बाबू हमार मकान मालिक रहनीं। हमनीं के उहाँ के सामनेवाला मकान में रहनीं सन। जौन मकान में टायपिस चाचा के परिवार रहे ओ में भी दू गो परिवार किराया पर रहे। रामबहादुर मामा के परिवार आ पुनपुन भैया के परिवार। ओह मकान से सटल लंबे पतले दू कमरा के मकान आउर रहे। ओ में अतुल के परिवार किराएदार रहे। अतुल हमार संघतिया रहलें। माने क्लासफेलो।अतुल आ पुनपुन भैया चचेरा भाई रहे लोग मगर अतुल अपना बाबूजी के चाचा कहस। बड़का बाबूजी के बाबूजी। एह महल्ला में हम अइनीं त सबसे पहिलका अचरज इहे भेंटाइल। हमनीं के अपना बाबूजी के पिताजी कहीं सन आ अतुल चाचा। चाचा पीडब्लूडी में काम करत रहनीं। ओ घरी हाजीपुर पोस्टिग रहे। हफ्ता पन्द्रह दिन में सीवान आईं। ज दिन सीवान रहीं अतुला के बहार रहे। रोज अठन्नी चवन्नी भेंटे। पाकिट में पइसा आवते अतुला हमरा के आवाज देवे, मनोज! चल, दीना के दुकान।

चार आना में प्रेम से सेव बुनियाँ खा के हमनीं के घरे लौट आईं सन। एही से अतुला के चाचा के आवे के इंतजार अतुला से बेसी हमरा रहे। एह तरह के दोस्ती लड़िकाईं में होला, सयान भइला पर ना।

महल्ला में जे रहे से भइया, चाचा, बाबा रहे। अलाँ बाबू फलाँ बाबू ना। महल्ला में एगो बहनोइयो रहलें। हमरा बहनोई के ममेरा भाई -फलिन्दर भाईसाब।उनकर बाबूजी बाबू रामबहादुर लाल के हमनीं मामा कहीं सन। मामा के गजब स्वभाव रहे। अपना गली में जहाँ कौनो मछरीवाला आपन ओड़िया ले के मछरी बेंचे घुसे मामा पहिले घर से बाहर निकलीं। ओकरा माथा से ओड़िया नीचे उतरवा के रखवा दीं। तब मोलभाव शुरू होखे। जौन भाव ऊ बोले ओकरा सीधा आधा भाव पर तय करीं। 'तू भाव ठीक कर ना।तोर सब मछरी बिका जाइ।' मछरीवाला पूछे, 'रउआ पूरा टोकरिए लेब का?'

मामा कहीं, 'तू का बुझतारS ! एक किलो दू किलो लेबे के बा!'

हमनीं के अपना घर में बइठल बाहर कान लगवले रहीं सन। अब मामा भाव तय कइनीं कि तब। जइसहीं भाव तय हो जाव मामा घर घर के लड़िकन के नाम ले के पुकारल शुरू करीं।

मुन्नाजी...मनोज...अतुल...राकेश...मछरी ले जा लोग। आवाज सुनते सभे आपन करवाँइन बर्तन ले के दउड़ जाव। देखत देखत ओकर टोकरी खाली हो जाव। अंत में डेढ़ दू किलो मछरी बच जाव। मामा पूरा टोकरी अपना घरे भेज दीं। मछरीवाला कहत रह जाव, 'मालिक! दू किलो से कम नइखे।' मामा एक किलो के दाम दे दीं। मछरीवाला चिल्लात रह जाव,'मालिक! घाटा होता।' मामा कहीं, 'तोर पूरा टोकरी बिका गइल। अभी माथा पर ले के घुमत रहते।'

मछरीवाला पइसा गिनत टोकरी झाड़त बुदबुदात चल जाव। हमरा लागे कि अब फिर ए गली के रुख ना करी। मगर हफ्ता बीतत फेर गली के चक्कर लगावे पहुँच जाव।

'मछरी लिआई....'

अइसन मुहल्ला में हमार बचपन बितल बा। 1965 से 1976 तक। पूरा ग्यारह साल। पिताजी एल आई सी में बड़ा बाबू रहनीं। मुजफ्फरपुर से ट्रांसफर हो के सीवान आइल रहनीं। दू साल सुकुल टोली में रहला के बाद शास्त्री नगर में शिफ्ट कइनीं सन। इहाँ से पिताजी के ऑफिस नजदीक पड़े। आज अइसन गली सिमेंटेड ना रहे। माटी के कच्चा गली। किनारे किनारे मोरी। बलेसर भइया के सामने एगो रूम में लकड़ी बाबू रहस। सबेरे त होश में ऑफिस जास। रात में नशा में लड़खड़ात गाना गावत आवस आ मोरी में गिरस धड़ाम! हल्ला होखे लकड़ी बाबू गिर गइलें। सभे दउड़ जाव। जहाँ सभे उनकरा के उठावे में लाग जाव टायपिस चाचा पॉकेट टोवे में। सबेरे हल्ला होखे लकड़ी बाबू के पॉकेट से सब रुपया पइसा गायब बा। टायपिस चाचा सूचित करीं, 'सब रुपया पइसा हमरा लगे बा।' महल्ला निश्चिन्त हो जाव। 'मिल गइल। मिल गइल। टायपिस बाबू रखले बानीं।'

रात में जहाँ सभे लकड़ी बाबू के मोरी से निकाले में व्यस्त रहे, टायपिस चाचा के ध्यान उनका पइसा के सुरक्षा में रहे।

शास्त्री नगर-2

1973 में हमनीं के मैट्रिक बोर्ड के परीक्षा पड़ल।

मैट्रिक में पहुँचते हमनीं के महल्ला के राडार पर आ गइनीं सन। महल्ला में गिना गइल कि अबकी के के परीक्षार्थी बा? पंडीजी के बेटी इंदु, रघुनाथ बाबू के बेटा सुरेश, पासपति बाबू के पोसपुत प्रमोद, बगेसरी बाबू के बेटा अतुल आ बड़ा बाबू के बेटा हम। अब हमनीं के हर एक्टिविटी पर महल्ला के नजर रहे।आउर कोई से त डर ना लागे लेकिन पुनपुन भइया आ बीरा भइया से बहुत डर लागे। बीरा भइया बलेसर भइया के छोट भाई रहलें। ए लोग के कॉलेज के पढ़ाई खतम हो गइल रहे आ हमनीं के अभी कॉलेज में घुसे के तैयारी में रहनीऔ सन। उमर के इहे फासला रहे।

महल्ला में सबसे बेसी भौंकाल हमरे रहे। हमार बड़ भाई (मुन्नाजी) आ दीदी (बीना दी) मैट्रिक के परीक्षा फर्स्ट डिवीजन से पास कइले रहे लोग। दू साल पहिले महल्ला में ई धमाका हो चुकल रहे। पूरा महल्ला ए उपलब्धि पर दंग रहे। 'बड़ा बाबू के लड़िका बड़ी सहेजल बाड़न सन। बताईं! दुनू भाई बहिन फर्स्ट डिविजन से बोर्ड पास कइले बाड़न सन।' पूरा महल्ला में इहे चर्चा रहे।

ओ घरी अखबार में रिजल्ट आवे। जहिया रिजल्ट आइल फलिन्दर भाईसाब मोड़ पर से अखबार खरीदले दउड़त अइलें। 'मुन्नाजी! मुन्नाजी! आपन रोल नम्बर ले आवS। रिजल्ट निकलल बा।'

सभे घर से बाहर ओसारा में इकठ्ठा हो गइल।फलिन्दर भाईसाब पहिले मुन्नाजी के रोल नम्बर ले के देखल शुरू कइलें। फर्स्ट डिविजनवाला लिस्ट में भइया के रिजल्ट उपरे दिख गइल।' इनकरा बारे में का सोचे के रहे! इनका त फर्स्ट डिवीजन से पास करहीं के रहे। 'फलिन्दर भाईसाब हमनीं से बेसी खुश रहले। 'बीना! तू अपन रोल नम्बर द त?' अब हमरा दीदी के बारी रहे। फलिन्दर भाईसाब पूरा सेकंड डिविजन देख गइलें। कहीं ना रहे। फेर थर्ड डिविजन में खोज गइलें। ओहू में ना रहे। उनकर मुँह उतर गइल। 'लागता बीना पास नइखी।'

भइया उनकरा हाथ से अखबार खींच लिहलें आ रिजल्ट देखल शुरू कइलें। फर्स्ट डिविजन में बीना दी के रोल नम्बर रहे। भइया कहलें, 'हई का बा। फर्स्ट डिविजन से पास बिया। 'फलिन्दर भाईसाब अवाक,'आँय! इहो फर्स्ट डिविजन से पास बाड़ी!' उनकरा विश्वास ना होखे।

अइसन भाई बहिन के हम भाई रहनीं। महल्ला के लागे कि हमूँ फर्स्ट डिवीजन से पास करेम। मगर इहाँ त किस्मत में सेकंड डिविजन लिखाइल रहे। मैट्रिक से ले के एम ए तक गलतियो से फर्स्ट ना कइनीं।

खैर! ई सब त भविष्य के बात रहे। वर्तमान में त हमार इम्प्रैशन तगड़ा रहे। लेकिन हमार संघतिया बाबू अतुल कुमार जी सबसे कमजोर कड़ी रहनीं। पूरा महल्ला के नजर उनकरा पर टिकल रहे। ई कइसे पास करी?

नागमणि के जमाना रहे। चोरी चकारी बंद रहे। आउर सब्जेक्ट में त पास करियो जाई, अंग्रेजी में कइसे पास करी? महल्ला अतुल के चिंता में रहे आ अतुल निश्चिन्त।

दिसम्बर में हमनीं के सलाना परीक्षा ले के स्कूल बंद हो गइल। मास्टर साहब समझा देहलें कि अब मार्च में बोर्ड के एग्जाम होई। घरे रह के तइयारी कर लोग।इहाँ तइयारी के करे? मस्ती होत रहे।

स्कूल जाए के ना रहे आ पढ़े में मन लागे के ना रहे। सुबह शाम पढ़ाई होखे। विशेषकर अंग्रेजी के ट्रांसलेशन बने। अंग्रेजी माने ट्रांसलेशन। हमनीं के कहे मास्टर लोग इहे समझावे। एहि में एक दिन ऊ घटना घटिए गइल जौना के हमनीं के डर रहे।

अतुल के 'चाचा' घरे आइल रहलें आ अतुला के रोज अठन्नी भेंटा जाव। सबेरे सबेरे ओकरा अठन्नी भेंटाइल त हमरा के इशारा कइलस। हम आपन कॉपी किताब बन्द कइनीं आ ओकरा साथे हो गइनीं। दीना के दुकान से एक एक प्लेट सेव बुनियाँ खा के जइसहीं अपना गली में मुड़नीं सन बलेसर भइया के कोना पर बीरा भइया भेंटा गइले।

'रे...रे...रुक!..रुक!...तोनी के मैट्रिक के परीक्षा नू बा?'

हमनीं के त खून सूख गइल। स्कूल में त प्री बोर्ड ना होत रहे, लेकिन महल्ला में प्री बोर्ड हो जाई ई के सोचले रहे?

मूड़ी गाड़ के खड़ा हो गइनीं सन। मुँह से काँपत मरल आवाज निकलल,'जी भइया।'

'इहे तइयारी होता? 'बीरा भइया हमनीं के देख के समझ गइले। 'दिनवा किहाँ से आवतारS सन!'

हमनीं चुप।

'ई मनोजवा त बिना पढ़लहूँ पास कर जाइ। तोर का होइ? उनकर इशारा अतुल की ओर रहे।

बिना पढ़ले त हमूँ पास ना करतीं। लेकिन बीरा भइया कहलें त हम तनी तन के खड़ा हो गइनीं। अतुला के मुँह से एतने निकलल, 'अबगे ट्रांसलेशन बना के उठनीं हँ।'

अब बीरा भइया के परीक्षा के विषय भेंटा गइल।

'त ट्रांसलेशन बनत रहल ह। तनी हेकर ट्रांसलेशन बनाव त?'

उनकरा ट्रांसलेशन पूछे से पहिले महल्ला के कुछ लोग खड़ा हो गइल। आठ दस आदमी के हुजूम के बीच में हमनीं के चोर अइसन खड़ा रहनीं सन।

बीरा भइया ट्रांसलेशन पुछलें, 'वह जाता है के ट्रांसलेशन का होई?'

अतुला कहलस, 'ही गोज।'

बीरा भइया अचंभित भइलें। वाह! ई त बना देहलस।

आगे पुछलें, 'वह जाती है के ट्रांसलेशन?'

अतुला एक बार सकपकाइल। ओकरा जइसे इयाद पड़ल। ही के शी हो जाला। जोर से कहलस,' शी गोजी।'

शी गोजी.....हा... हा... हा... बीरा भइया ठहाका लगवलें। साथ में महल्ला के लोग ठहाका लगावल....हा.. हा.. हा.. खूब बनवलस।...ई बबुआ मैट्रिक पास करिहें... शी गोजी....हा... हा.... हा....

ठहाका के गूँज अतुला के घर तक पहुँचल। अतुला के माई घबड़ा के घर से निकललीं। ए बाबू! हमरा लड़िकवा के काहे घेरले बा लोग?

चाची भीड़ चीरत अइली। अतुल के हाथ पकड़ के खीच ले गइली। क्रोध से भरल उनकर आवाज गूँजल,' बड़ी हँसनिहार भइल बा लोग! जहिया हमार बेटवा मैट्रिक पास कर जाइ सबका मुँह में करिखा पोत देम।'

सब के हँसी पर जइसे ब्रेक लाग गइल।

मैट्रिक के परीक्षा भइल। रिजल्ट निकलल। महल्ला में कोई के पास कइला के चर्चा ना रहे। एके गो चर्चा रहे। अतुला पास कर गइल। अब का होई?

होइत का! चाची त एही से खुश रहली कि उनकर बेटा पास कर गइल। मगर कई दिन ले बीरा भइया घर से बाहर ना निकललें।

शास्त्री नगर 3

शास्त्री नगर के जौन मकान में हम रहत रहनीं ऊ एक कठ्ठा के प्लॉट में दू हिस्सा रहे। दस दस धुर में दूगो मकान। एके नक्शा, एके छत, एके ओसारा। एक तरफ हमनीं के परिवार रहे, एक तरफ सुरेश भइया के परिवार। सुरेश भइया स्टेट बैंक में कार्यरत रहलें।उनका परिवार में उनकर पत्नी आ दू गो बच्चा के अलावा छोट भाई के पत्नी साथे रहत रहली। छोट भाई- दिनेश भइया बेतिया पोस्टेड रहलें। शनिचर के शनिचर सीवान आवस।

सुरेश भइया के घर के बाद एगो खेत रहे। खेत से सटल कबीरपंथी मठिया के चारदीवारी। पीछे गोपालजी के मकान रहे। हमनीं के शास्त्री नगर अइला के बाद हमार एगो फुआ भी सुकुल टोली से शास्त्री नगर आ गइली आ गोपालजी के घर में किराएदार हो गइली। फूफा के नाम रहे - देवता प्रसाद।

गली के केंद्र में एगो खाली जमीन रहे। ओ जमीन पर बेदाम के पेड़। महल्ला भर के गली ओ बेदाम के पेड़ के चक्कर काटत पच्छिम में जाके दाहा नदी में डूब जाव। पूरब में सड़क आ पच्छिम में दाहा नदी। बीच में शास्त्री नगर।

सुरेश भइया दिन में बैंक चल जास। भाभी टीचर्स ट्रेनिग करत रहली। उहो घर से निकल जास। दुनू बच्चा स्कूल। घर में रह जास छोटकी भाभी। गर्मी के दुपहरिया में छोटकी भाभी बेधरान सुतस। दुनू लड़िका स्कूल से आ के दरवाजा पीट पीट के थाक जा सन। का मजाल कि 'चाची' के नींद खुल जाव।हमार अम्मा बाहर निकल के आवे। 'ए बाबू! तू लोग छत पड़े चल जा लोग।'

दुनू लड़िका इहे कर सन। छत पड़े अपना आंगन में उतर के चाची के देह ध के हिलाव सन तब चाची के नींद खुले। अइसन सुतनिहार रहली छोटकी भाभी। अम्मा व्यंग में पुछबो करे, 'रातभर का करेलु दुलहिन! पहरा देबे लू का? लड़िका दरवाजा पीट के थाक जाले सन, तहार नींद ना खुलेला?'

महल्ला में अइसहीं दिन गुजरत रहे। गर्मी गइल। जाड़ा आइल। दिसम्बर के शुरुआती ठंढा रहे। शायद ओ घरी हम आठवाँ या नौवाँ में पढ़त होखेम तब के घटना ह। रात में चोर अइलन सन। जौन कमरा में छोटकी भाभी सुतल रहली ओहि में सेंध मरलन सन। भाभी के नींद काहे के खुले जाव। पलंग से सटल तीन चार गो बक्सा रखल रहे। सुरेश भइया सब बक्सा के लोहा के सीकड़ से बांध के पलँग से बांध देले रहलें। जब चोर बक्सा खिचलन सन त पलँग हिल गइल।पलँग हिलल त छोटकी भाभी के नींद खुलल। कमरा में अँजोर लउकल त अचकचा के पलंग पर बइठ गइली। देखतरी कि खेत के तरफ वाला देवाल टूटल बा। देवाल के ओने एगो आदमी के मूड़ी लउकल। समझत देर ना लागल। घबड़ा के बोललीं,' भैयाजी! चोर!'

चोरवा जइसहीं समझलस कि भीतर कोई जाग गइल बा, बाहरे से फुसफुसा के बोललस,' चुप! चुप! चोर ना हईं।'

अब त भाभी एकदम कन्फर्म हो गइली। अबकी आउर जोर से बोललीं, भैयाजी! चोर!

सुरेश भइया के नींद खुल गइल।

ऊ फट से दरवाजा खोल के बाहर निकल के हमरा पिताजी के आवाज दिहलें, 'बड़ा बाबू! चोर!'

अभी हमार पिताजी बाहर निकलती कि सामने से रामबहादुर मामा गली में निकल अइनीं। 'का सुरेश बाबू? कहाँ चोर?'

चोर.... चोर....चोर...

महल्ला में बेतार के तार दउड़ गइल। फटाफट दरवाजा खुले लागल। लोग अपना घर से बाहर गली में निकले लागल। ई कोई के पता नइखे कि कहाँ चोर अइल बा? केकरा इहाँ चोरी भइल बा? मगर सभे आपन हरबा हथियार ले के तइयार बा। चोर जेने लउक जाई पकड़ा जाई। चोर त हल्ला होते मठिया के चहरदीवारी छरप के भाग गइलन सन।

ठाकुर बसंत कुमार पुलिस विभाग के आदमी। फट से आपन बंदूक निकाल के अपना ओसारा में खड़ा हो गइनीं।

देवता फूफा के नींद खुलल। बाहर कुछलोग के भागे के आवाज सुननीं। फेर चोर चोर के हल्ला। उनका लागल चोर अभिए नदी के तरफ भागल बाड़े सन। घर मे एगो लाठी ना। खटिया के पावा रखल रहे। उहे लेके दउड़ गइनीं।

बसंत चाचा देखनीं एगो आदमी हाथ में मोटरी ले के बेदाम के पेड़ से मुड़ के नदी के तरफ दउड़ल जा रहल बा। अन्हारा में आदमी कहाँ नजर आवत रहे। ओकर छाया नजर आवत रहे। आव देखनीं न ताव फट से बंदूक तान दिहनीं। 'कौन है? खड़े हो जाओ।नहीं तो गोली मार देंगे।' पुलिसिया रोब से भरल कड़कत आवाज।

देवता फूफा के त थरथरी उपट गइल। काँपत आवाज में बोलनीं, 'हम हैं हम!'

'हम कौन?'

'हम....देवता..!'

'बसंत बाबू! गोली मत चलाएम।' बेदाम के पेड़ लगे परमेसर चाचा के मकान बा। अपना ओसारा से परमेसर चाचा चिल्ला के बोलनीं, 'देवता बाबू हउअन! देवता बाबू!'

बसंत चाचा बंदूक नीचे कर लेहनीं। आज त अनर्थ हो जाइत।

महल्ला के लोग देवता फूफा के घेर के खड़ा बा। फूफा सिर झुकवले खड़ा बानीं।

'ई हाथ मे क्या है आपके? 'बसंत चाचा देवता फूफा के हाथ देखतानीं। 'महाराज! आपके घर मे लाठी नहीं था कि खटिया का पावा लेके दौड़ गए!'

देवता फूफा का जवाब देस। देह के थरथरी अभी ले गइल नइखे।

महल्ला के लोग ठहाका लगा रहल बा।....हम हैं हम...हम कौन....देवता....आदमी ना देवता....हा.. हा.. हा...

ओने महल्ला के बड़ बुजुर्ग महिला लोग छोटकी भाभी के घेर के खड़ा बा।

'ई बताव दुलहिन! तहार नींद कइसे खुल गइल? 'ई हमार अम्मा के सवाल ह।

दुलहिन चुप। का बोलस!

टायपिस चाची पुछली, 'चोरवा का कहलस दुलहिन! चुप चुप चोर ना हईं। तू पुछलू काहे ना तू के हउव?'

'चोर ना नु रहलसन। इनका नइहर से इनकर भाई आइल रहलन सन। इनकर हाल लेबे। ई चिन्हबे ना कइली। हल्ला कर देहली।' पुनपुन भइया के माई कहली।

मेहरारू लोग के हँसला के ठिकान नइखे।

हा... हा... हा.... पूरा महल्ला हँसी से गूँज रहल बा।

शास्त्री नगर-4

अब ई किस्सा हम ना सुनाएम त शास्त्री नगर के आख्यान पूरा ना होई। हमरा दृष्टि से सबसे मजेदार घटना इहे रहे आ ए घटना के एकमात्र प्रत्यक्षदर्शी हमीं रहनीं। ए से आज भी ए घटना के इयाद पड़ला पर हमार हँसी छूट जाला। ए घटना के मुख्य पात्र टाइपिस चाचा के एगो नतिनी रहे आ साथ में हमार सबसे छोट भाई दीपू रहलें। अब त ई लोग एतना बड़ हो चुकल बा कि जौन उमर के ई घटना ह ओ उमर के त ए लोग के बाल बच्चा बा।

टाइपिस चाचा के नतिनी के नाम त हम सार्वजनिक ना करेम। हमरा संस्मरण से कोई आहत होखे या इम्बैरेसिग पोजीसन में पड़े ई हमार उद्देश्य नइखे। पढ़ के लोग आनन्दित होखे हम बस एतने चाहतानीं। मगर कहानी कहे के बा त एगो नाम त चाहीं। चलीं एगो नाम रखल जाव। कोई बच्ची के नाम ना मालूम रहेला त आदमी मुन्नी कह के पुकार लेबे ला। इहे नाम फाइनल रहल-'मुन्नी'।

मुन्नी आ दीपू लगभग सात-आठ साल के रहे लोग।एके साथे पढ़त रहे लोग। लेकिन पढ़ाई में मन लागत ना रहे। किताब से ओतने देर के साथ रहे जेतना देर के स्कूल रहे। घरे लौटते खेलाई शुरू हो जाव। दुनू बच्चा के गार्जियन परेशान। टाइपिस चाचा मुन्नी से आ हमार बाबूजी दीपू से। ई दुन्नू कइसे पढ़िहें सन ए बात के ले के दुनू गार्जियन में मीटिग भइल। तय भइल कि अइसन मास्टर के ट्यूटर रखल जाव जे पढ़ावे से ज्यादा अपना छड़ी खातिर मशहूर होखे। संजोग देखीं अइसन एगो मास्टर ओहि स्कूल में भेंटा गइलें जे में दुनू बच्चा पढ़त रहलन सन। पूरा नाम त हमरो इयाद नइखे मगर अपना सरनेम से मशहूर रहलें। सभे उनका के मरखाह मास्टर 'तिवारीजी' के नाम से पुकारत रहे।

तिवारीजी ट्यूटर रखा गइलें। मुन्नी आ दीपू के हालत खराब। बेचारा बच्चा सब के खेलल बंद हो गइल। तिवारीजी पढ़ावस कम होमवर्क बेसी देस। दुनू लड़िका स्कूल से लौट के आवSसन त होमवर्क करे बइठ जा सन। होमवर्क करत करत मास्टर साहब आ जास। पहिले होमवर्क देखस। फेर थोड़ा सा पढ़ावस। फेर होमवर्क दे के चल देस। होमवर्क में ज गो गलती होखे त छड़ी गिन के हाथ पर पड़े। बेचारा बच्चा सब पर बहुत ज्यादती होत रहे। आज के समय रहित त मास्टर साहब जेल में रहतें। मगर ओ घरी एगो सवाल पूछाव, 'छड़ी मीठ कि गुड़'? गुड़ चाहे केतनो मीठ होखे मगर जवाब में छड़ी कहे के रहे। छड़ी के ई आतंक रहे।

हमरा घर के आगेवाला कमरा में तिवारीजी पढ़ावस। चौकी पर दुनू बच्चा बइठ जा सन आ कुर्सी पर तिवारीजी। जहिया के बात ह तिवारीजी आ के कुर्सी पर बइठ गइलें। दुनू बच्चा आपन आपन बस्ता लेके सामने चौकी पर। कमरा में एगो खाट रहे। हमूँ बाहर से आ के खाट पर बइठ गइनीं।

तिवारीजी होमवर्क देखल शुरू कइनीं। पहिले मुन्नी के कॉपी उठवनीं। लड़िकन के इंस्ट्रक्शन रहे कि जेकर होमवर्क चेक होई ऊ आ के बगल में खड़ा हो जाई। मुन्नी चौकी से उठ के तिवारीजी के बगल में खड़ा हो गइली। तिवारीजी पहिले गणित के होमवर्क देखल शुरू कइलें। अभी पहिलके सवाल देखत रहलें कि मुन्नी धीरे से बोलल, 'माटसाब! सूसू करने जाएं?'

माटसाब मुड़ी हिला देहलें। मुन्नी अपना घरे चल गइल।

पाँच गो जोड़ पाँच गो घटाव होमवर्क में दियाइल रहे।तिवारीजी चेक कइल शुरू कइलें। पहिलका सवाल गलत। लाल पेन से बड़का क्रॉस लगवलें। दुसरका सवाल गलत। ओहू के कटलें। तिसरका सवाल गलत। फेर क्रॉस। चौथा गलत। पाँचवाँ गलत। छठा गलत।

मुन्नी सूसू करके लौट आइलि। तिवारीजी के कुर्सी से सट के खड़ा हो गइलि।

सातवाँ गलत।

तिवारीजी के तलवा लहरल शुरू हो गइल।

आठवाँ गलत।

अब लहर ऊपर उठल शुरू हो गइल।

नौवाँ गलत।

दसवाँ भी गलत।

तिवारीजी के ब्रह्मांड लहर गइल।

मुन्नी के झोंटा धइले आ दाँत किचकिचा के बोललें, 'जब ब्रह्माजी अक्ल बाँट रहे थे तब तुम कहाँ चली गई थी?'

बेचारी मुन्नी! ओकरा का पता! कौन ब्रह्माजी? कब अकिल बाँटत रहलें? ओकरा त एतने बुझाइल कि माटसाब पूछ रहे हैं, कहाँ चली गयी थी। रुआँसल आवाज में कहलस, 'सूसू करने।'

ओकरा बाद जौन भइल ऊ हम का बयान करीं।

तिवारीजी छत फोड़ ठहाका लगवलें।

'हा... हा... हा... तुम ठीक कह रही हो बेटा! तुम्हारा क्या दोष! तुमतो ऐन वक्त पर सूसू करने चली गयी थी। हा.. हा.. हा..'

तिवारीजी के साथे हमू हँसत रहनीं। हमनीं के हँसी रुकत ना रहे। दुनू बच्चा हक्का बक्का। भीतर से अम्मा निकल के आइलि। सामने से टाइपिस चाची दउड़ के अइली।...का भइल?...का भइल?....

के बतावे कि का भइल? जौन होखे के रहे ऊ त हो चुकल

रहे। ब्रह्माजी अकिल बाँट के चल गइल रहलें आ मुन्नी के ऐन वक्त पर सूसू लाग गइल रहे।
ना ब्रह्माजी के दोष।
ना मुन्नी के दोष।
सब किस्मत के दोष।

शास्त्री नगर-5

ई किस्सा शास्त्री नगर के ना ह। छपरा के किस्सा ह।
मगर शास्त्री नगर सीरीज में एही से सुनावत बानीं कि जब मुन्नी के किस्सा लिखत रहनीं त ई किस्सा इयाद पड़त रहे। एह कथा के मुख्य पात्र हमार छपरावाली मंजू दी आ अशोक भइया बाड़ें। ई कथा मंजू दी हमरा के सुनावतो रहली आ अपना बचपन के बेवकूफी पर हँसतो रहली। एह कथा में लगभग उहे सिचुएशन बा जौन मुन्नी के कथा में रहे।
एगो मास्टर साहब ट्यूशन पढ़ावे आवस। ओ घरी होमवर्क स्कूल से ना मिलत रहे। लेकिन सरकारी स्कूल के माहौल पढे पढ़ावे के रहे। लड़िका सरकारी स्कूल के पढ़ाई से ही जौन बने के रहे बन जाव लोग। जे गार्जियन के विशेष ध्यान रहे पढ़ाई पर ऊ घर में एगो ट्यूशन ठीक कर देबे लोग। मास्टर साहब के विशेष हिदायत दियाव कि खूब होमवर्क दिहल करीं ताकि बबुआ लोग के खेलल बंद हो जाव। पता ना ओ घरी लड़िकन के खेलला से गार्जियन के कौन परेशानी रहे। खैर! इहाँ भी एगो मास्टर साहब ट्यूशन पढ़ावे आवस। मंजू दी आ अशोक भइया में डेढ़ दू बरिस के छोटाई बड़ाई ह। एके क्लास में पढ़त रहे लोग। साथ ही ट्यूशन पढ़े लोग। माटसाब जौन पढ़ावस तौन पढ़ावस ओकरा बाद पूरे से होमवर्क दे जास। अंग्रेजी गणित विशेषकर एही विषय के होमवर्क होखे। कुछ वर्ड मीनिंग रटे के रहे कुछ गणित के सवाल बनावे के रहे। माटसाब आ के पहिले होमवर्क के कॉपी जमा कर लेस फेर चेक कइल शुरू करस।
ओ दिन भी इहे कइलें। सब कॉपी जमा हो गइल। माटसाब गणित के कॉपी देखत रहलें। एकरा बाद अंग्रेजी के वर्ड मीनिंग पूछतें। मंजू दी मने-मने वर्ड मीनिंग दुहरावत रहली। इन माने अंदर...आउट माने बाहर...बिफोर माने पहिले...आफ्टर माने....? फेर दुहरावल शुरू कइली। इन माने अंदर आउट माने बाहर बिफोर माने पहिले आफ्टर माने...? आफ्टर पर आ के अटक गइली। केतनो कोशिश करस आफ्टर के अर्थ इयादे ना पड़े। माटसाब अभी गणित के होमवर्क देखे में व्यस्त रहलें। ओकरा बाद वर्ड मीनिंग पुछतें। बगल में छड़ी रखल रहे। मंजू दी के ध्यान रह-रह के छड़ी पर जाव। आफ्टर के अर्थ भुला गइल रहली। अब का होइ? अभी माटसाब मूड़ी गड़ले बाड़ें। ए लोग के तरफ ध्यान नइखे। मंजू दी धीरे से फुसफुसा के अशोक भइया से पुछली, 'ए अशोक! आफ्टर माने?'
अशोक भइया घूर के मंजू दी के देखलें। इनकरा त कौनो मीनिंग इयाद ना रहेला। फुसफुसा के कहले,'बाद में।'
मंजू दी के बुझाइल ना। फेर फुसफुसा के कहली,'बताव ना?'
अबकी अशोक भइया झल्ला के तनी तेजे आवाज में कहलें,'बाद में।'
मंजू दी एकदम से चिढ़ गइली। माटसाब मरिहें त मरिहें। जोर से बोलली,'बाद में कौंची? अभिए बताव ना?'
मास्टर साहेब ठठा के हँसले।...'ए मंजू! आफ्टर माने बाद में ही होला। अशोकवा ठीके नू बतावता।
तब मंजू दी के बुझाइल।

◆ ◆ ◆

मनोज कुमार वर्मा
सम्प्रति - भारतीय स्टेट बैंक से सेवानिवृत्त, एच 1 गली नं 4 अयोध्यापुरी, श्रीनगर, सीवान (बिहार) 841226

जा ना का बतिअइबऽ तूं?

तहरा खातिर कइनीं का ना,
जा ना का बतिअइबऽ तू?
सहनीं दुनियाँ भर के ताना,
जा ना का बतिअइबऽ तू?

अपना खातिर रैन अन्हारी,
तहरा बदे बिहान।
एगो जोन्ही चहलऽ दिहनीं
नजराना असमान।
अब कुछ बचल-खुचल त बा ना,
जा ना का बतिअइबऽ तू?

इतर-फुलेल किनाइल कइलऽ
मलि-मलि के असनान।
हमरे टोपी माथ पहिन के
भेंटल सइ सनमान।
बनते-बनते बिगड़ल बाना,
जा ना का बतिअइबऽ तू?

घोरि पिआवल आखर-आखर,
शब्द, वाक्य-विन्यास
के ना देखल जे अँखिगर बा
केकर अथक प्रयास?
कहियो ना कहनीं बेगाना,
जा ना का बतिअइबऽ तू?

पैर पीठ पर रखलऽ गइलऽ
अब का पूछऽ हाल?
सब 'संगीत' भइल बा बेसुर
तहर बजे बेताल।
स्वर दरबारी उहे पुराना,
जा ना का बतिअइबऽ तू?

◆ ◆ ◆

ए सँवरू.....

कतना दिनन बिसरइबऽ ए सँवरू!
याद जब पड़ी, लरिकान के पढ़ाई
त रीसि बिसराइ चलि अइबऽ ए सँवरू!

सुरता प चढ़ी जब नन्हकी के सुसुकी
लखि के रिगावत बबुनवाँ के मुसुकी
आँखि भरि आई त धीर के धराई
झट टिकसि कटाइ उठि धइबऽ ए सँवरू।

नथिया पजेब हार मँगटिका टिकुली
झोंपदार झुमका लहरदार हँसुली
भोर परि जाई कबहूँ ना किनाई
हँसि-हँसि बतिआइ भरमइबऽ ए सँवरू।

धूरि के बनावत-बिगारत अटारी
दीखि जाई कवनो बाल मनहारी
जिया घबराई सोचि बोल तुतलाई
तब फोन लगाइ बतिअइबऽ ए सँवरू।

जोरि-जोरि तिनका खतोना बनावे
चिरई ले चुनि अन्न चुग्गा जिआवे
कौन बिसराई अपने जाया जाई
सच गाइ बजाइ पतिअइबऽ ए सँवरू।

◆ ◆ ◆

संगीत सुभाष

प्रधान सम्पादक- 'सिरिजन'

सोने के चिरइया हमार भारत

जेकरा खातिर हरदम हथेली पर जान बा।
सोने के चिरइया हमार भारत महान बा॥

गंगा-जमुना जी के बहत जहवाँ धार बा।
नहान-पान से सभके सुधरत विचार बा।
वेद-शास्त्र,क्षमानस-गीता के उजियार बा।
भगती-भाव से हरदम प्रेम पइसार बा।

दिन-रात हरदम बढ़त सबके ज्ञान बा।
सोने के चिरइया हमार भारत महान बा॥

ज्ञानी-ध्यानी, कवि-लेखक के भरमार बा।
भइल हरि जी के हरदम इहवें अवतार बा।
साधु-संत, योगी-यति शुभाशीष प्यार बा।
जेकरा से सुख पावत सगरो संसार बा।

सेवा, सुख, शान्ति के देशवा ई खान बा।
सोने के चिरइया हमार भारत महान बा॥

शिव त्रिशूल पर बसल काशी के नगरिया।
उहाँ जे मरेला मिले मोक्ष के दुअरिया।
सेवा सतसंग के सुहावन बा अँजोरिया।
सभ केहू पावे शुभ साँच के डगरिया।

विश्वगुरू भारत जानत सभ जहान बा।
सोने के चिरइया हमार भारत महान बा॥

वीरन के खान हउवे भारत के माटी।
जनमे असंख्य वीर अउवल खाँटी।
कबो ना खतम होई इहो परिपाटी।
आँख जे उठाई जीभी धूर उहो जाटी।

भारत सगरो भारतवासी के परान बा।
सोने के चिरइया हमार भारत महान बा॥

◆ ◆ ◆

बाबूराम सिंह कवि

ग्राम -खुटहाँ, पोस्ट - विजयीपुर (भरपुरवा) जिला - गोपालगंज (बिहार)

चइता

भोरे-भोरे पवनवाँ बहेला हो रामा
चइत महीनवाँ
रात भर गतर टभकेला हो रामा
चइत महीनवाँ

महुआ कोंचाइ गइलें,
मोंजर मँहकाइ गइलें
अमवाँ टिकोरा धरेला हो रामा
चइत महीनवाँ

टपकेला महुआ होत भिनुसारे
मादक गंध पवनवाँ पसारे
मँह मँह देह करेला हो रामा
चइत महीनवाँ

बोले कोइलरिया निशि अधिरतिया
पनकेला अंग अंग कोमल पिरितिया
अँखियाँ सपनवाँ बसेला हो रामा
चइत महीनवाँ

◆ ◆ ◆

निरंजन प्रसाद श्रीवास्तव
राँची, झारखंड

हुकहुकी लेत लोकगीतन के पारंपरिक गवनई शैली-घाँटो

"ए रामा सुमिरी ले शारदा भवानी,
कंठे सुरवा होखीं ना सहईया
ए रामा,कंठे सुरवा"

ई दूगो डांड़ी ओह पारंपरिक गवनई के ह, जेकरा के भोजपुरिया बधार घाँटो के नाम से जानेला। बीस से तीस गँवई लोगन के भीड़ आ ओह में से टाँसी निकलत एह गीत के बोल एह बात के इयाद करा देवेला कि चइत महीना अपना रवानी पर बा-जवानी पर बा।

साँचहूँ चइत के जे जानत होई ऊ ई जरूर मानत होई कि भोजपुरिया बधार खातिर ई महीना सोना के सहेजे के मौसम ह। पूस आ माघ के धरिआवल गेहूँ, माघ से फागुन ले खूब हरिहरा के चइत तक आवत-आवत सोनहुला रंग ले लेवेला।बहरसी के खेतवन में चउतरफा देखला पर लागेला कि सोना बिछल बा। किसानन के ठंढ़ के महीना में अगोरल आ पानी पटवला जस मेहनत के इनाम पावे के महीना ह चइत। फसल देख देख के किसान हुफनेला, अगराला। बधार के हर घर में खुसी हिलोर लेवे लागेले आ तब कंठ से फूट पड़ेला घाँटो के तान।

एह गवनई पर कुछ लिखे के पहिले ई जानल मजगर होई कि आखिर एतना टाँसी में काहे गवाला ई? एह महीना में पहिले मौसम पर एक हाली विचारल जाव- बारह बजे रात से आठ बजे दिन तक पुरुआ बहेला आ आठ बजे दिन से फेरु बारह बजे राति तक पछुआ हँउकेला जवन गरमी लेसेला। गरमी त गरमिए ह, चँउड़ गरमा जाला बाकिर रात के जब पुरुआ बहेला त देह में सिहरी उठेला। अइसे में दोरस बयार के चपेटा में रहेला हमनीं के किसान। कफ आ पित्त-दूनों तर ऊपर रहेला।

दिन में मन पितिआइल रहेला त रात में कफाइल रहेला। एह दूनो के बराबर राखे के उपाय ह जोर जोर से चिल्लाइल भा चिल्ला-चिल्ला के गावल। आयुर्वेद भी एह बात के मानेला। अब अइसे में ई बात त खुल के आ दावा राख के कहल जा सकेला कि हमनीं के पुरखा-पुरनिया के गवनई ह ई। ई आज के ना ह, सैकड़ो साल पुरान ह।

ई घाँटो, एही से अकेले ना गवाय। एह में बड़हन मुँहवाला ढोलक, छब्बीस जोड़ी झाल आ दू से तीन गो झाँझ, एकरा से जादा के साज-बाज ना रहे। आज नू लाउडस्पीकर बा, ढेर दिन ना, बीस साल पहिले तक जब सरजाम ना रहे आवाज के फेंके के, तब गाँव के लोग अपना छाती के टंठई से एतना दूर तक आवाज फेंक देत रहे कि दोसरो बधार के उदबास ले लेत रहे आ जवना के कारण बधार के बधार एह गवनई के गावे। दू बजे राति ले ई गवाए आ ओकरा बाद चूँकि पुरुआ बहे लागत रहे, गेहूँ के डाँठ मोलायम हो जात रहे, कटनी लाग जात रहे। भोर होते-होते पाँजा के पाँजा गेहूँ खेत में काट के बिछा दिहल जात रहे, माने दिन में आराम आ रात के रतजगा।

घाँटो के गवनई के खासियत पर जाइल जाव त इहे कहल जा सकेला- ई लय के खेलावाला गवनई ह। एक्के गो डाँड़ी के तीन गो लय-रुप में गावल, एगो अजगुत शैली ह ई। उप शास्त्रीय संगीत में दीपचंदी ताल-चउदह मात्रा, जवन उप शास्त्रीय संगीत के एगो अझुराइल आ असहज करे वाला ताल ह, ओकरा में बान्ह के गावे के कला हमनिए के बधार में संभव हो सकेला। लय के दोसरका अवस्था में थोड़ा लय बढ़ा के आ तिसरका अवस्था में कहरवा ताल में घुस के गावल कवनो साधारण बात ना ह।

पहिलका अवस्था में पलथी मार के गावल, दोसरका अवस्था में ठेहुनिया के आ तिसरका में खड़ा हो के गावे के परम्परा रहल बा एकरा में। जहाँ तक सुर के बात बा, एकरा में राग तिलक कामोद के स्वर लागेला। शुद्ध "नि" स्वर पर ठहराव एकरा के बुलंद बना देवेला। एह सुर से ही शास्त्रीय संगीत राग-तिलक कामोद के स्वीकार कइलस आ एकरा के मान्यता देहलख।

आज बधार में ढोलकहिआ नइखे लोग कि ढोलक बाजो। झाल आ झाँझ के आवाज के सोझा आज के गवनिहार लोग के बोली ना निकल पावेला। बिना लाउडस्पीकर के गवनई नइखे हो पावत त घाँटो कइसे गवाव? नवका पीढ़ी के एह सब गवनई में रूचि नइखे, ऊ अझुराइल बा लोग कवन सिह आ खेलारी के गवनई में। बहरसी में रहेवाला, कमाएवाला के यूट्यूब के लिक पसंद त आवता बाकिर गाँव के चौपाल पर चइता ठनकत नइखे। अइसे में ई कहल जा सकेला कि हमनीं के दादा-परदादा के सँजोवल, ई शैली अब मुँहकुरिए गिरल बिया। एकरा में हुकहुकी ही बा अब। ई आपन अंतिम साँस ले रहल बिया। एकर कबहुँओ अंत हो सकेला, जवन भोजपुरिया बधार खातिर बजर पड़ला जस होई।

जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया

◆ ◆ ◆

उदयनारायण सिंह

रिविलगंज, छपरा बिहार

एगो सूफी मौज

मिलल बा खबरिया
कि जतरा बनल बाटे
पिया घरे अइहें
कि असरा पुरइहें

चढ़ि के हिंडोलवा पर
मने मन झूमीं
पियवा के पतिया के
रहि रहि चूमीं

उबटन लगाईले
मेंहदी रचाईले
चउका पुराईले
ढोलक बजाईले
सोरहो सिंगार करि
मंगल गाईले

लूर सहूर सब
अटपट भइल बाटे
बिसरा गइल बाटे ढंग
रे सखिया
मनवा भइल बा मलंग

◆ ◆ ◆

हमसफर

रात भर रात कटनीं
मगर केहू पुछलस
ना हाँके लगवलस जे
"बा केहू जागल"
नाहीं नींन के कतहूँ
मिलल बिछवना
घवाहिल भइल बाटे
अँखिया पियासल
ना सपना के पानी
मिलल, नाहीं कउनो
सीतल दिरिस के
सहारा मिलल बा
मगर आस बाकी
भरम बाटे काएम
कि छिटकी अँजोरिया
पुकारी त केहू
हमरे नियन
रात भर रात कटले होई
केहू इहवाँ
ऊ आई आ साझा करी
नींन आपन
अगर रतजगा काटे के होई तबो
बनी हमसफर ऊ
कटाई ई जवरे
समय के सियाही

◆ ◆ ◆

गुलरेज शहजाद

नकछेद टोला, वार्ड संख्या-04, मोतिहारी, पूर्वी चम्पारण बिहार

बुड़बक बखान

भइया के ससुरारी: हाँ माई जी ना माई जी

रहले एगो मूर्ख चन्दर
हुसियारी में बड़ा सिकन्दर
करिया देखस लाल बतावस
चाउर देखस दाल बतावस
बपसी हरदम सोचस इहे
बबुआ हम्मर कइसे जिहें
एक दिन बपसी सोचत रहले
तबले आके बबुआ कहले
बाबूजी हमरा बतलाईं
भइया के ससुरारी जाईं ?
बपसी कहले मन मुरझा के
उल्टा सीधा सब समझा के
जा तारऽ त हम ना रोकब
एके गो ई बतिया टोकब
केहू कवनो बात जे पूछे
रहिअ मत भकुआइल छूछे
"हाँ" चाहे "ना" में बात बतिअइ
एह से बेसी कुछ ना कहिअ ।

बबुआ जी तब चालू भइले
भइया के ससुरारी गइले
सासु जी उनका बइठवली
नीमन नीमन चीज खियवली
पूछे लगली घर के हाल
बबुआ जी के भइल कमाल।

सासु पूछली- ठीक बानीं नू ?
बबुआ कहले- हाँ माई जी
भइया राउर ठीक बानीं नू ?
बबुआ कहले- ना माई जी
का उनका बोखार भइल बा ?
बबुआ कहले- हाँ माई जी
डॉक्टर लगे केहू गइल बा ?
बबुआ कहले- ना माई जी
घरहीं में ऊ रहऽ ताड़न ?
बबुआ कहले-हाँ माई जी
तनिको चलत फिरत बाड़न ?
बबुआ कहले- ना माई जी ।
लागता ऊ मरिहे जइअन ?
बबुआ कहले- हाँ माई जी
अब त ऊ बचिहे ना पइअन ?
बबुआ कहले- ना माई जी ।

सुनके सभके हियरा काँपल
रोअन पीटन पड़े लागल
भागल भागल सभे आइल
अइला पर सब बात बुझाइल
बपसी कहलें- जानत रहनीं
एही से समझा के कहनीं
जा हो ए खकबानर बोका
निमनो काम बनवलऽ चोखा ।

(2)

अपना ससुरारी: थरिया में परतिस्ठा

रहले एगो मूर्ख चन्दर
हुसियारी में बड़ा सिकन्दर
लोहा देखस काठ बतावस
सोरे दूनी आठ बतावस
होखे लागल उनकर सादी
समझवली तब उनके दादी
ससुरारी जब जाइल जाला
खाए में सरमाइल जाला
परतिस्ठा कुछ छोड़ल जाला
तब लइका हुसियार कहाला

बबुआ जी चलबिदूर भइले
दुलहा बन ससुरारी गइले
दादी के सिखलावल कइले
रात भर कुछऊ ना खइले
सभका छप्पन भोग भेंटाइल
इनका दुगो चमचम आइल
चमचम रहे टइरी अइसन
ऊंट के मुंह में जीरा जइसन
जइसे तइसे रात बितइले
पेट दबा के सादी कइल

(शेष अगिला पन्ना पर....)

(पछिला पन्ना से आगे)

बुड़बक बखान....

भतखउकी के आइल बारी
अँगना में बइठल पटीदारी
रात भर के पेट सोन्हाइल
बबुआ रहले बड़ा भुखाइल
जस परोस के थरिया आइल
दादी जी के बात भुलाइल
ना आगु ना पाछु तकले
हाबुर हाबुर खाए लगले
साली सरहज हक्का बक्का
कहवाँ के आ गइल उचक्का
कहले-पहुना धीरे खाईं
बोलीं त कुछ अउर मंगाईं
बबुआ जी कुछऊ ना कहले
गाड़ के मुड़ी खाते रहले
तीन हीस भोजन के खाके
बपसी ओरिया लगलन ताके
कहलन एगो बात बताईं
बोलीं त परतिस्ठो खाईं
बपसी ठोंकले आपन कपार
उनका चढ़ल डबल बोखार
डांट के कहलें जा ए मल्लू
तोहरा से नीमन बा उल्लू
दादी जी एतना समझवली
तोता अइसन पाठ पढ़वली
अब केतना बदनाम करइबऽ
परतिस्ठा दोहरा के खइबऽ
बाकी भोजन पेट में डालऽ
मन करे त थरियो खा लऽ
बबुआ जी परतिस्ठा खइले
कनिया लेके घरे अइले

◆ ◆ ◆

सुरेश गुप्त
बेतिया,पश्चिम चम्पारण

किशोर के ग़ज़ल

१

दिगर के बात छोड़ीं, आपने काटि खा रहल
बिना मतलब के केहू, कहाँ बाँटि खा रहल।

कंस मामा दुआरी पर बइठल,अँगना मउसी
चाचा चाय के तरसत,मामा जाँति खा रहल।

करेली राज ससुरा पर,गीत नइहर के गावेली
कहेली का बा ससुरा में,करज जब आ रहल।

पति कुत्तो से बदतर बा,ससुर ह माथ के बोझा
सास किनार अब धइली, घरे तब का रहल।

फुटानी मुफ्त के उनकर,जरावे धन ससुरा के
मोबाइल हर घड़ी हथवा, सरम अब ना रहल।

मेम सुनि इतराली, सखा जब डोरी डालेला
इज्जत बेंच खा गइली, धरम जब ना रहल।

किशोर अंधा बनल बइठल,कान रहित बहिरा
मउवत के भीख मांगेलन,इज्जत जब ना रहल।

२

बात बढ़ जाई तू जाने लऽ,बाते बतंगड़ बन जाला
समय बदलेला इतरा जनि,समय काल बन जाला।

माघ के घाम ह, सुहावन बा,ठिठुरन भागि पराई
पतझड़ चरम पर,अब भागी,आस बसंत बन जाला।

धरती बिहँस रहल, धानी चुनरी प पीयर गोटा देख
साँस महकत बा किसान के,साँसे आस बन जाला।

किस्मत के धनी किसान ना होला, दुनिया जानेला
राज योग हाथ में नइखे, मेहनत ईमान बन जाला।

लूट के नीति ओकरा ना भावे,ऊ राजनीति ना जाने
बाकिर मरद ह बुझेला दरद,दरद पी शिव बन जाला।

शिकवा केकरा से करे, के सुनी,सभे त बहिरा बा
तिकवत ले आस के थरिया,आसे जहर बन जाला।

किशोर ना रहले खुद में, खुद बेईमान बन गइलन
बेंच के देस के इज्जत, बेईमान इमरान बन जाला।

३

असरा के फूल ना उगल, भरोसा टूट गइल
सपना पूरा ना भइल, देखते नींन टूट गइल।

तू चैन से सुतऽ, नीन आँखि से भागल बा
मौत अब ठाढ़ माथे प,मौन खुद टूट गइल।

भूख के गठरी, माथे अब ढोआत नइखे
खिसे हाथ का छुटल , गाँव छूट गइल।

प्रवास रास ना आइल, दोहन ना रूकल
सपना अँखुआइल ना, परिवार छूट गइल।

राजा बनके रउवा, मन के खूब पढ़नीं
दिन में सपना देखनीं, चैन सब लूट गइल।

कवन हम पाप कइनीं,सभे हमरा के लुटल
दोष केकरा दिहीं,जब किस्मत फूट गइल।

रात अब करवट लिही,मुकुट किशोर के माथे
हम अँजोर खूब बाँटब,किरिन अब फूट गइल।

◆ ◆ ◆

कनक किशोर
राँची (झारखंड)

भोजपुरी सरसी छंद

(1)
काजर कइनीं टिकुली सटनीं, झरनीं आपन बार।
टह-टह चमके मांगे सेनुर, कइनीं सभ सिगार ।
ललकी साड़ी बाकस में से, निकलल नौलख हार।
पहिन-ओढ़ के रस्ता देखत, धड़के जिया हमार ॥

(2)
आज सजन से कहि देबो हम, अपना दिल के बात।
याद पराइब उनका के हम, वचन ब्याह के सात।
मिनट- मिनट करि घंटा बीतल, बीतल सँउसे रात।
अभियो ले ना अइलें साजन, जियरा डूबल जात।

(3)
बइठल-बइठल असरा ताकत, लागल हमरा नींन।
भोरे-भोरे आँख खुलल तब, तड़प उठल मन मीन।
गहना-गुरिया खोल-खाल सभ, उठ के भइनीं खाड़।
खटखट-खटखट बाजे लागल, तब खोलनीं किवाड़॥

(4)
भक्क हो गइनीं देख के हम, ई के आइल गेह।
तीन रंग कपड़ा लपटाइल, आइल पी के देह।
वचन तूर के भइले रजऊ, देसवा प कुर्बान ।
हे काली जी! इनके साथे, हमरो लेलीं जान॥

◆ ◆ ◆

गीता चौबे "गूँज"
राँची, झारखंड

अबहूँ ना अइले सजनवा (चैता)

अमवा मोजराइल कोयलिया पुकारे ।
गंध मदमाइल बयरिया छितारे ॥
उठत बा मन में हिलोरवा हो रामाऽ चइत महिनवाँ ॥
अबहूँ ना अइलें सजनवा हो रामाऽ चइत महिनवाँ ॥

सरसो झरत बाऽ गेहुआँ गदाइल ।
गोंयड़े के बारी में महुआ कचराइल ॥
जोहत बा खेत खरिहनवा हो रामाऽ चइत महिनवाँ ।
अबहूँ ना अइलें सजनवा हो रामाऽ चइत महिनवाँ ॥

मादक बसंती बहेलेऽ बयरिया ।
सर सर सरकेलेऽ हमरी चुनरिया ॥
भइल मोर गलवा गुलाल हो रामाऽ चइत महिनवाँ ।
अबहूँ ना अइलें सजनवा हो रामाऽ चइत महिनवाँ ॥

थावे के मेला लगल मनभावन ।
तरकुलही माई के मंदिर सुहावन ॥
दरसन के लागल कतार हो रामाऽ चइत महिनवाँ ।
अबहूँ ना अइलें सजनवा हो रामाऽ चइत महिनवाँ ॥

सुन्दर पलाश लाले लाल बा फुलाइल ।
हरियर सुग्गा बा ओपर मँड़राइल ॥
राम जी लिहलें अवतार ऊ पावन चइत महिनवाँ ।
अबहूँ ना अइलें सजनवा हो रामाऽ चइत महिनवाँ ॥

◆ ◆ ◆

संजय कुमार राव
गोरखपुर

जिंदगी के सफ़र

जिदगी के सफर में बहुत मोड़ आई,
कहाँ ले ई जाई केहू ना बताई।
संभल चले के पड़ी रास्ता में,
कहीं नेक मिलिहें कहीं आतताई॥

केहू रास्ता में अनायास रोकी,
बेढंगा के जइसन बेमतलब से टोकी।
केहू मीठ बोली, केहू साथ हो ली,
केहू कुक्करन जस बेमतलब के भोंकी॥

केहू बन के छलिया छली बेतहाशा,
केहू बन के आपन भरी खूब आशा।
बड़ी सावधानी जरूरी बा इहवाँ,
केहू ले के पेंड़ा थमाई बताशा॥

केहू ये सफर में गलीचा बिछाई,
केहू काँट बो के ऊ मन भर सताई।
मगर हमनीं डगमग ना होखेम जा कबहूँ,
चाहें केतनों राहे में बाधा भेंटाई॥

जे बड़ भागी होला मनुज देह पावे,
उहे कुछ करेला जे जिनगी में धावे।
उहे ए जिनिगिया के आनन्द लूटे,
जे दुःख के समय मन के ढाढस बन्हावे॥

जे जिनगी में दुखिया के सेवा करेला,
ओ मनई के जिनगी में मेवा फरेला।
सजा अपना जिनगी में तय बा ऊ भोगे,
गलत राह जिनगी में जे भी धरेला॥

◆ ◆ ◆

अखिलेश्वर मिश्र
शांति नगर, बेतिया,
प.चम्पारण, बिहार

उचरऽ हो कागा

उचरऽ
उचरऽ हो कागा।

ना कादो के पंजरा गइनीं
राख धूरि में ना लसरइनीं

चुनर में
दाग कहाँ से लागा?

नइहर मे रतजगा कइनीं
ससुरा में ना घूघ उठइनीं

बेसर
के लूटि भागा?

◆ ◆ ◆

नया बस्ती बसावल जाव

आव एगो नया बस्ती बसावल जाव,
सुनर एगो नया दुनिया बनावल जाव।

मजहब के कवनो देवाल ना रही उहवाँ,
मानवता के एगो नया घर बनावल जाव।

जातियन के कुल करम भरम तूर के,
इसांनियत के बस्ती सजावल जाव।

देहला के औकात जदि बा हमनी के तऽ,
चलऽ कुछ लो पर खुशी लुटावल जाव ।

प्यार मोहब्बत से तऽ सभे खुस रहेला,
दुनिया से नफरत के दूर भगावल जाव।

भोजपुरिया लो तऽ एक दूसरे में भिड़ल बा लो,
चली मिलजुल भोजपुरी के मान बढ़ावल जाव।

गोली बम बारुद,विरोध में फिरत बा सब लो
चलऽ 'गणेश' बिना एकरा जहाँ बनावल जाव।

हरेश्वर राय

सतना मध्य प्रदेश

गणेश नाथ तिवारी 'विनायक'

सहायक सम्पादक-सिरिजन
श्रीकरपुर, सिवान

भोजपुरी में एगो कहावत बा कि-"मन चंगा त कटौती में गंगा"। संत रविदास जी चमड़ा धोवेवाला कठौती में से गंगा माई से सोने के कंगना मंगा दिहनीं, ई बात दुनियाँ जानता बा। कहे के मतलब बा कि मन चंगा बना के कथा- कहानी, गीत - गजल चाहे कुछऊ लिखल जाई त ओ से समाज के, माईभाषा भोजपुरी के भलाई होई लेकिन कवि- लेखक आपन मन नंगा क के कुछ लिखी त ओ से केहू के भलाई होखेवाला नइखे। भोजपुरिया समाज में जे भाई-बहन जागल नइखे, सूतल बा, अलसाइल बा, भुलाइल बा ओ के जगावे के काम भोजपुरिया कलम ही करी त ए सगरो बात पर ध्यान दे के कवि लेखक जे बा ओकरा कलम चलावे के पहिले सोच-विचार क के तब लिखल जरूरी बा। समाज के सामने अइसन कविता कहानी लिखे के बा जवन से समाज में सुधार होखे, नकारात्मक सोच सकारात्मक होखे, भोजपुरी माईभाषा से फुहड़पन रूपी गंदगी एकदम साफ हो जाऊ।

आज कल के कविताई, लिखाई देखि- पढ़ि के मन में ए गो टीस जागल कि जे समाज सुधारक बा ऊ समाज के साफ -सुथरा विचार देउ ताकि समाज आगे बढ़े। दसरो के आदमी बने में मदत करो ताकि भोजपुरिया समाज ए गो अइसन मिसाल कायम करे कि आवेवाली पीढ़ी ओ पर गर्व करे। भोजपुरी गायक, गायिका भाई- बहिन से हमार हाथ जोड़ि के निहोरा बा कि रउआ सभन अइसने गीत गवनई समाज की सोझा राखीं कि भोजपुरिया समाज के मान सम्मान आगे बढ़ो।

जे भोजपुरी नइखे जानत उहो भोजपुरी पढ़े-लिखे- सिखे के कोशिश करो। भोजपुरी के इतिहास सुदृढ होखे। रउआ सभन के गीत-गवनई से भी भोजपुरी इतिहास में फेर बदल हो सकता त ए पर पूरा ध्यान दे के भोजपुरी भाषा के आगे बढ़ावे में मदत करीं सभे। भोजपुरिया समाज में भलाई, सज्जनता, अच्छाई, नुमन गुन के प्रचार प्रसार कइला के जरूरत बा। एही से आदमी के झुकाव भोजपुरी में भइल सम्भव बा त एइपर पुरहर ध्यान दिहल जाउ।

इहे सबसे निहोरा करत इ लेख के विराम देता बानीं।

जय भोजपुरी जय भोजपुरिया।

बाबूराम सिंह कवि

ग्राम –बड़का खुटहाँ, पोस्ट - विजयीपुर (भरपुरवा) जिला -गोपालगंज (बिहार)

चुनावी कविता

गह-गह भइल सिवान,
उमगि के नाचे लागल गाँव।
कि अबहिन हलहीं बितल चुनाव॥

ना केहू धनसेठ बुझाइल,
ना लउकल केहु कंगला।
दारू के गोदाम बनल बा,
पण्डित जी के बंगला॥

दिन डुबते सब खोजे लागल,
आपन-आपन ठाँव॥
कि अबहिन हलहीं बितल चुनाव॥

बुधिया भउजी, गोबर भाई
आ होरी बो काकी।
घूना फूआ, जीरा मउसी,
बचल न केहू बाकी॥

हाथ जोरि के दार्ही धइलें,
झुकि-झुकि छुवलें पांव,
कि अबहिन हलहीं बितल चुनाव॥

केहू के आवास मिली
आ केहू के शौचालय।
बज-बज नारी साफ हो जाई,
चमकी खूब देवालय॥

जुम्मन चाचा के महजिद में,
ढाँपल जाई उदाँव॥
कि अबहिन हलहीं बितल चुनाव॥

केतने-केतने भूत उपटलें,
केतने रीसिन भूत।
बकरी,बाघ एक संग बइठल,
दिखल न छूआछूत॥

केतने मरहम लगल ,भरल तब,
जाके सबकर घाव॥
कि अबहिन हलहीं बितल चुनाव॥ ◆ ◆ ◆

फगुनी दोहा

मोजर अमराई दिखे, चुवे मदनरस रोज।
भौंरा घूमें मस्त हो, नवका देखि उरोज॥

रोज दुआरे फगुहरा, खूब बजावें झाँझ।
बाट निहारत हम रहीं, रोज सबेरे, साँझ॥

पोरे-पोरे रस भरल, बस में नाहीं जीव।
का फागुन के जोर ना, जहवाँ बाड़ें पीव॥

टप-टप महुआ रस चुवे, आम गइल बउराय।
टुकुर-टुकुर ताके मटर, कब मसुरी मुसकाय॥

बासन्ती रस बहि चलल, डूबि रहल सब लोग।
कागा बचन उचारि दऽ, कब होई संजोग॥

कहाँ धधाइल जाति बा, महकावति ई देंह।
केकर अगवानी करें, पियरी रंगल सरेह॥

लोग कहेला आ गइल, चारू ओर बसन्त।
लउके ना हमके कहीं, सखी गाँव में कन्त॥

भौंरा भरल उछाह से, गावे मांगर गीत।
कलियन के मुस्कान के , समझे आपन जीत॥

गदराइल गोहूँ सखी, तीसी नाचे झूमि।
मटर फुलाइल देखि के, पछुआ जाला चूमि॥

सरसों तीसी सब कहे, आइल सखी बसन्त।
हम बउराहिन का करीं, आइल घरे न कन्त॥

◆ ◆ ◆

मदनमोहन पाण्डेय
कुशीनगर

अइलें बसंत

अइलें अइलें बसंत बाह बाह
हँसीं जा हाहा हाहा।

तिसिया फुलइली मटर गदराइल
झुंड तितिली के उड़ेला इतराइल
बनल भँवरा बनल बदसाह
हँसीं जा हाहा हाहा।

आम मोजरइले कली मुसुकइली
कंठा में मिस्री कोइल लेइ अइली
भइली पुरवा बड़ी नखड़ाह
हसीं जा हाहा हाहा।

हरियर चहचह भइली बँसवरिया
सरसों के रंगवा रंगइली बधरिया
होता भुईं सरग के बिआह
हँसीं जा हाहा हाहा।

◆ ◆ ◆

चिरई फेर से चहकी

पुरवा
फेर से बहकी।

हर पत्ता पियराइल बा
कतहूँ गंध हेराइल बा
टेढ़ परीक्षा आइल बा

फूलवा
फेर से महकी।

अबहीं रात के डेरा बा
सब समय के फेरा बा
धीरज धरे के बेरा बा

चिरई
फेर से चहकी।

याद बा

पहिल फागुन के हमरा छुअन याद बा
फूल - भँवरा के हमरा मिलन याद बा।

केहू कनेआ कहल केहू भउजी कहल
कुल्ह बालम के घर के चलन याद बा।

हमके कोयल के बोली ना बिसरी कबो
हमरा सरदी के भोर के गलन याद बा।

कहियो चुल्हवा में अंगुरी सेंकाइल रहे
आजु ले हमरा ओकर जलन याद बा।

याद बा हमके ननदो के नखड़ा कइल
हमके गोदी में आइल ललन याद बा।

◆ ◆ ◆

याद बा

बा आइल बसंता दुआरी प, ए गोरी! खोलऽ केवारी।
उठल बा ताल ठकुरबारी प, ए गोरी! खोलऽ केवारी॥

नखड़ा देखावऽतिया पुरवा बेयरिया
पिअरे पियर भइल दिल के बधरिया
मन लट्टू हमार फुलवारी प, ए गोरी! खोलऽ केवारी।
उठल बा ताल ठकुरबारी प, ए गोरी! खोलऽ केवारी॥

कलियन से भौंरा करत बा ठिठोली
जिया के छेदऽतिया कोइलर के बोली
तनि ढरीं ना एह ब्रम्हचारी प, ए गोरी! खोलऽ केवारी।
उठल बा ताल ठकुरबारी प, ए गोरी! खोलऽ केवारी॥

◆ ◆ ◆

हरेश्वर राय
सतना मध्य प्रदेश

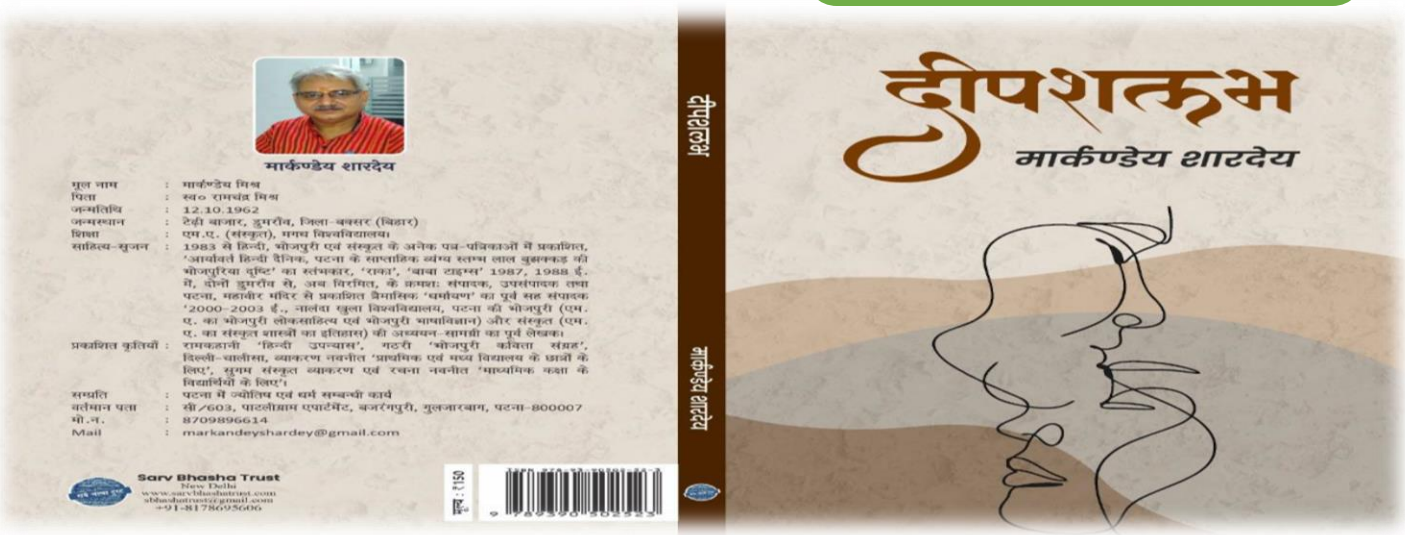

एह अंक में दीपशलभ के चउथा सर्ग प्रस्तुत बा।एमें काव्यनायक सुरनाथ शर्मा गयासुबेग से बिदा लेके आगरा से अपना घर जाए के तत्पर बाड़ें।एह बीच गयासुबेग के वात्सल्य के साथे नायक के पश्चात्तापो विशेष देखल जा सकेला।अन्त में विक्षिप्त नियन ऊ घर पहुँच जाततारे।गरीबी में आइल धन देखि के सभे ओही में मगन हो जाता।शर्माजी के हालत प केहू के ध्यान नइखे जात।एह सर्ग में साजिकता के वास्तविक दर्शन होता-सम्पादक

चउथा सर्ग

तन के कवच पहिर के मन विचरेला, तन के अंध गुहा में वास करेला।
तन के सिवा कहाँ बा भला बसेरा, मन एही से तन के साथ रहेला ॥1 ॥
कार्य रूप तन हऽ आ कारण मन हऽ, रूपहीन मन रूपवान ई तन हऽ।
तन-मन के संयोग बिना का होई तन के मन धन आ मन के धन तन हऽ ॥2 ॥
कमजोरी कवनो में तनिको आई सुबहित कवनो काम कबो हो पाई!
दूनो मिलि के कठिन सुलभ कर दीहें, दूनों के जरिये सब कुछ हो जाई ॥3 ॥
दसो इन्द्रियन पऽ नित धाक जमावे, जब जइसे ई चाहे नाच नचावे।
दसो इन्द्रियन के ई सहकल मालिक, दसो इन्द्रियन से नित स्वार्थ सधावे ॥4 ॥
नेता हऽ पर तनिको लाज न लागे, करुणा दया कबो ना इचिको जागे।
जागेला तऽ स्वार्थ-सिद्धि के लेके, बिना स्वार्थ के डेग न लावे आगे ॥5 ॥
जवने पत्तल खाला छेद करेला, जवने डाढी बइठेला काटेला।
बहक-बहक के मूढ़ कटा देला गर, सबहरिये ई सत्यानाश करेला ॥6 ॥
महदाकांक्षोत्तुंग शिखर ई हटुवे, महामनस्वि-वरेण्य-प्रवर ई हटुवे।
अवगुण-गुण दूनो के खिचड़ी लेके, बाँटे खातिर निशि-दिन तत्पर हटुवे ॥7 ॥
जनक काम के प्रेमी सुन्दरता के, मित्र वायु के आउर चंचलता के।
उत्कंठा कल्पना शयन-शय्या हऽ, शंका-भ्रम-निधि गति हरि-नागरता के ॥8 ॥
पापी लोभी मोहवान हत्यारा, द्रोही घाती झूठा आ आवारा।
धर्मी सदय अलोभी मोहविरत बड़, अद्रोही सच्चा जन-जन के प्यारा ॥9 ॥
****
मनोनियन्त्रण कइल जरूरी बाटे, कहत चलल ई आइल बाड़ें मुनि-गण।
जब ई शासित हो जाला तनिको तब, मानवता के होला सुभग निरूपण ॥10 ॥
बेलगाम घोड़ा उद्दण्ड रहेला, बिन अंकुश भय हाथी ना मानेला।
बिन मालिक घर, राष्ट्र बिना राजा के, सभ्य शिष्ट कबहूँ ना बन पावेला ॥11 ॥
बिन शासित मन कुछो समझ ना पावे, एसे दोष-सुगुण के ना हिगरावे।
शासक जेने मोड़ी झट मुड़ि जाई, मुड़ि के चाह नियन ई राह बनावे ॥12 ॥

कबो स्वर्ग के ओर स्वयं ले जाला, कबो नरक के ओर घसेटत जाला।
सब कुछ करिके दोष न लीहल चाहे, नरक-यातना पइले पऽ घबराला ॥13॥
****
पंडित जी के मन ना होखल शासित, एही से न विरक्ति भइल उद्भासित।
अनूचान बस कहे-सुने के भइलें, ज्ञानदीप ना रह पावल सुप्रकाशित ॥14॥
चोथा अस मुँह लटकइले घर चललें, मनोरोग अपना अन्तस् में पललें।
सगरे लउके इच्छित मोहक मूरत, दिशा-दिशा से ओकर स्वर ही सुनलें ॥15॥
कइसों रथ पऽ बइठा धनाधिकारी, दिहलें बहुते द्रविण सदा सुखकारी।
जाये के ऊ मुख्य हेतु ना जनलें, हुटहुटी रहल उनुका मन में भारी ॥16॥
आँखिन से वात्सल्य स्नेह आ छलकल, अँकवारी में बान्हें माया सरकल।
होके लोर-झोर सुरनाथो टटके , पैर पकड़िके चहलें खूबे रोअल ॥17॥
क्षण भर मायाजाल-बद्ध हो गइलें, दूनो जाना गूँगी साध चुपइलें।
जीभ हिले ना डोले जड़ता आइल, मूढ़ मतिन टकटकी बान्हि के भइलें ॥18॥
मनस्ताप से शर्मा जी पथरइलें, खूब तरस अपना करनी पऽ खइलें।
प्रायश्चित कइसे होखी दुष्कृति के, भीतर-भीतर ईहे सोचत गइलें ॥19॥
कबो कहे मन सब कुछ परगट कर दीं, कबो कहे कवना मुँह से ई धर दीं।
का बीती गयासु जी पऽ कहला पऽ, उनुका में का जहर घोरि के भर दीं ॥20॥
एही तरे विचार वेग बढ़ियाइल, खड़ा न होखल चाहे मन शरमाइल।
बद्धांजलि हो प्रणति-निवेदन कइलें, कहलें, 'आज्ञा दीं चाहींला जाइल" ॥21॥
रथ के निकट घुसुकि गयासु जी अइलें, भावुकता से ओतप्रोत हो गइलें।
काढ़ि करेजा दे दिहलें उनुका के, अइसन बात सामने लेके धइलें ॥22॥
'बबुआ जी! रउरा जातानी जाईं, खुदा करसु जिनिगी के सब सुख पाईं।
लमहर उमिर मिलो जस फइले सगरो, बर के फेड़ नियन खुद के पसराईं ॥23॥
एहू नाचीज गयासु बेग के मन में, करबि याद तनी आत्मजीवन में।
हथजोरी बा कवनो गलती होखी , माफ करबि, मत राखबि कबहूँ मन में ॥24॥
रउरा के आपन लरिके अस मनलीं, अनगँइया अस कबहू ना हम जनलीं।
ना बुझात का कारन बा जातानी, कवन चूक से जाये खातिर ठनलीं ॥25॥
आसिफ हउवन पुत्र सभे जानेला, रउरो के मन दोसर ना मानेला।
गजब बन्हाइल बा अपनापन पुरकस, आँखिन से अन्ह ना सोचल चाहेला ॥26॥
हमरो दशरथ-अइसन प्राण सुखाता, पुत्र-शोक से पीड़ित मरबि बुझाता।
रउरा जाइबि तऽ भले प्राण ना भागे, रितुपति-अस मन ग्रीष्म-नियन छपिटाता ॥27॥
बरफ नियन सुरनाथ-हृदय सुनि पिघलल, दिनकर के कर गिरि-गह्वर में पसरल।
भरल कलश आँखिन से आके ढरकल, धार बनाके भेंवे खातिर बहकल ॥28॥
कहलें, 'मानवता के सत्य पुजारी! दीन-हीन के पिता-नियन हितकारी!
दया प्रेम ममता के निर्मल मूरत! लोगन के उपकार हेतु तनधारी!!29 !!
बेवकूफ हमरा अइसन के होई, कल्पवृक्ष तर रहि के भागी, रोई।
मन के ना राखी अपना कबजा में, पागल कूकुर काटी सब कुछ खोई ॥30॥
नमकहराम हईं हम समझ न पवलीं, एही से श्रीमान! स्नेह बरसवलीं।
जइसे सुग्गा पिजर तजि उड़ि जाला, तइसे हम उपकार तनिक ना मनलीं ॥31॥
बहुते दुष्ट स्वभाव हमारो बाटे, घीव देत हा! घोड़ा नरियाटे।
आश्रय-दाता! क्षमा भीख माँगीला, दे दीं जाईं मन अति घबराटे' ॥32॥
'जाईं रउरा हँसी-खुशी से जाईं, द्वार खुलल बा, जब मन होखे आइब।

जे कहि देलीं रउरा के अरियातत, कहल-सुनल मन में तनिको ना लाइब' ॥33 ॥
साटि करेजा से दुलार बरिसइलें, बग्घी पऽ ऊ हँसी-खुशी बइठइलें।
बढ़ल यान धनपति तिकवसु उनुका के, हाथ जोड़ि मुँह लटकइले ऊ गइलें ॥34 ॥
कई दिनन के बाद गाँव नगिचाइल, शर्मा जी के भखटल घर अब आइल।
गाँव, महल्ला-टोला देखि धधाइल, सभ में प्रेमनदी बहुत बढ़ियाइल ॥35 ॥
जइसे सपना से जागल व्यक्ति रहेला, तइसे उनुका गजिबे सब लागेला।
भकुअइला अस सगरे हिरि-फिरि ताकसु, चंचल मन के कुछुओ ना भावेला ॥36 ॥
मिलल सभे आ मिलस सभे से आके, रहल न रस नैसर्गिक तनिक हिया के।
चाल देखिके सभके बाउर लागे, सभे कहे जे बदल गइल ई जाके ॥37 ॥
रहसु दार्शनिक अस अपने में नित-नित, बिसरल-बिसरल स्पप्रिल रहल सदा चित।
खाइल पीयल सूतल कुछो न भावे, स्वजन समझ ना पवलें रोग उपस्थित ॥38 ॥
****
सूखल सरि में वारि यथा बढ़ियाइल, बूड़त निर्धन कर में मोती आइल।
सूखत धान-खेत में बरिसल पानी, तइसे सबके सब बहुते अगराइल ॥39 ॥
एक महासाधन हऽ धन जीये के ,तन के चेथर-गूदर के सीये के।
तरसेलें छछनेलें कुछुओ खातिर भौतिक सुख ना मिल पावे पीये के ॥40 ॥
तन मन एही खातिर बेच दियाला, बन्हकी इज्जत आ ईमान धराला।
युद्ध महाभारत के ई करवावे, भाई से भाई के गर कटि जाला ॥41 ॥
धन-महत्व जब से मानव पहचनस, तब से ओकर पीछा-पीछा चललस।
जब केहू के सूखल सुधा-सुराही , आपन के आपन अइसन ना जनलस ॥42 ॥
धनियन के धन से सम्मान बढ़ेला, सब केहू तरवा तर आ लोटेला।
कतने सुधी जनो गुलाम हो जालें, धन जादूगर अपने ओर खिचेला ॥43 ॥
शर्मा के परिवार गरीबी जियलस, आजु बहुत धन अपना आँखी देखलस।
छोट नदी बढ़ियाइल पाके पानी, धरे-ओसारे में बस समय लगइलस ॥44 ॥

मार्कण्डेय शारदेय

जिनिगी हवा के झोंका ह

जिनिगी हवा के झोंका ह
जिनिगी हवा के झोंका ह, झपकत आइ आ जाई,
आवेला अचके सोझा ई, फिर खोजलो प ना भेंटाई।
करे ना इन्तजार केकरो ई, ई त अपने मती के होला,
चली भनक ना आवे के, अचके में ई त जाई।
करी जतन कतनो केहू, चाहें कतनो करी सिगार,
हो चली मस्त जहाँ ई, बस इचिका भर बुझाई।
जवन अँखियाँ में बा तोहरा, सभे देखते भर रही,
सपना के जइसन आवेला, अँखियाँ खुलल त जाई।
पानी में पनपल ह ई छाया, थीरे प खाली लउकी,
फेंकल जे केहू रोरी राय, देखते देखत बिलाई।

◆ ◆ ◆

गाईं कइसन लोरी

गाईं कइसन लोरी
आगि लागल बा मन में बुताईं कहाँ,
सुतल हियरा के फेरु से जगाईं कहाँ।

कुछ कहला प छन दे छनकि जाले ऊ,
साँच बतिया के लोरी गवाईं कहाँ।

ऊ पवलें का पद भूलि जा तारे हद,
अइसन दरद प मल्हम लगाईं कहाँ।

देवे के उपदेश उन्हका आदत परल,
हिम्मत रउवे बताईं कि पाईं कहाँ।

देखीं जेकरा के फफकल उताने भइल,
भाव के भरल ई खटिया बिछाईं कहाँ।

करीं कतनो हम आस मिले केहू ना खास,
दिल में उगल अँजोरिया देखाईं कहाँ।

पवनीं जेकरा के ले उहे लुआठी चलल,
उन्हका खोरना से जरल बचाईं कहाँ।

जाने दुनिया में गरिमा गरम काहे बा,
राय के भुभुरी के अँचिया सेराई कहाँ।

◆ ◆ ◆

देवेन्द्र कुमार राय
ग्राम+पो०-जमुआँव,
थाना-पीरो,
जिला-भोजपुर, बिहार

भुलात कहाउति

अपना भोजपुरी के विशेष समृद्धि ओकरी लचीला स्वभाव से बा जवन कि सब भाषाई शब्दन के अपने रंग में ढारि लेले। एह में लिखल पढ़ल भलहीं अबले सीमित बा बाकिर अब सब भोजपुरिया के कोशिश रंग लियावता कि किताब पर किताब हर विधा में लिखा रहल बा । एसे, पहिले भलहीं लोग अनपढ रहे बाकिर बोलचाल में तनिको दब ना रहे। तबे त केतने-केतने दँतकथवा, कहानी सुने-गुने के मिलेला। एकरी आम बोलचाल में मुहावरा/लोकोक्ति जवना के लोग किस्सा भा खिस्सा कहेला, सुने के मिलेला। जवना से बाति अउरी फरछियाह आ रसगर हो जा। एकर परयोग बूढ पुरनियाँ अजुओ करेला बाकिर आजु के नवकी पीढ़ी ए से कोसो दूर बा। काहें कि जे सोझ भोजपुरी ना बोल पाई ऊ किस्सा कहाउत का कही? जवने के असर ई बा कि ऊ किस्सा-कहाउत हमनीं के बीचे से अलोप भइल जाता। ए से,अब हमनीं के ई बड़हन जिम्मेदारी बा कि भरसक कोशिश क के ओ के जोगावल जा, जियवले रहल जा। एही सब के ध्यान में राखत हम ऊ भूलल बिसरल कहाउति/किस्सा अरथ बतावत रउरी सब की सोझा ले आवत बानीं:-अगिला दुसराका भाग देखीं जा.....

१-अन्त भला त सब भला----बढ़िया कार के बढ़िए फल मिलेला।

२-अन्धेर नगरी के चउपट राजा--जहवाँ के मालिके नालायक रहेला तहवाँ कवनो नियम धरम ना चलेला।

३-अधजल गगरी छलकति जा---कुछ लोग तनिके में ढेर घमण्ड करे लागेला।

४-अपने दुवारी पर कुकुरो शेर होला---अपने घरे कमजोरको बरियार होला,फँउकेला।

५-अब पछता के का होई जब चिरई चूँडिले खेत---बर्बाद हो गइला पर केहू पछता के का करी।

६-आपन-आपन डफली आपन-आपन राग----जेतना लोग रहे सभे अपने विचार दे।

७-आम के आम अँठुली के दाम---एगो काम भा समान से दोहरा लाभ पावल।

८-सब धन लूटि जाव कोइला पर छापा परे---तनकी बचावे खातिर ढेर खरचा कइल।

९-आधा छोड़ पूरा पर धावे, आधा रहे ना पूरा पावे----लालच में परि के सगरो गँवावल।

१०-आगि लगले पर कुँआ खोनाई----कवनो बाति पर पहिले से ना विचार कइल।

११-उल्टा चोर कोतवाल के डाँटे---दोषी आपन दोष न मानि के उल्टे पूछे वाला के दोष मढ़े।

१२-ऊँट के मुंह में जीरा---जहाँ ढ़ेर के जरुरत तहाँ थोर।

१३-ऊँच दोकान फीका पकवान---देखत के बढ़िया बाकिर सही में ना।

१४-एगो अनार सौगो बेमार---एगो समान के कइगो हिस्सादार।

१५-एक हाथ से थपरी ना बाजेला---कवनो विवाद एगो पक्ष से ना होला।

१६-एक पंथ दुइ काज-एके उपाइ से दूगो काम भइल।

१७-काठ के हाँड़ी बेर-बेर ना चढ़ी---बेइमानी हर बेर ना रसी।

१८-कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली---आकाश पाताल के अन्तर।

१९-करवे कार के सिखावेला---काम कइला से अनुभव बढ़ेला।

२०-का बरखा जब कृषि सुखाने-समय बीति गइला पर गरज चलि के का होई।

२१-खोनाइल पहाड़ निकलल चुहिया--मेहनत के बराबर फल ना मिलल।

२२-खरबूजा के देखि के खरबूजा रङ बदलेला---देखा देखी कइल।

२३-खीरा खा के भेंटी तीत कइल--जेसे सहयोग ले ओही के निन्दा बतियावल।

२४--घर के मुर्गी साग बराबर---घर के समान के कवनो महत्व ना दिहल।

२५-घर के भेदी लंका ढाहे---जाने पहिचान वाला हानि पहुँचावेला।

२६-घीउ के लड्डु टेढ़ो भला---मनपसन्द सामान हर हाल में बढ़िया।

२७-चोर-चोर मउसेरा भाई---एगो काम करे वाला आपस में सम्बन्ध राखेला।
२८-चमड़ी जा बाकिर दमड़ी जनि जा---बहुते कंजूसी कइल।
२९-चार दिन के चाँदनी फेरु अन्हरिया राति---तनिके सुख की बाद दुख आइल।
३०-चोर चोरी से जाई हेराफेरी से ना---जेकर जवन बानि रही कमोबेस करबे करी।
३१-छछुनरी के मूड़ी पर चमेली के तेल---गलत हाथ मे बढ़ियाँ सामान परल।
३२-छाती पर साँप लोटल---आन के तरक्की देखि के इरिखा कइल।
३३-जइसन राजा तइसन परजा---मालिक जइसन रही बाकियो ओइसने रहिहें।
३४-जहाँ गइली डाढ़ो रानी तहाँ परल पत्थल पानी---दुखिया के दुख पिठियावत फिरेला।
३५-जइसन काँकरि ओइसन बीया,जइसन माई तइसन धीया---हर औलाद पर ओकरी माई बाप के छाप रहेला।
३६-जइसन करनी तइसन भरनी---जे जइसन करी ओइसने भरी।
३७-जबले साँस बा तबले आस बा--हमेशा हिम्मत बनवले रहल।
३८-जाने जाँत जाने पिसनहरि- काम करावेवाला आ काम करेवाला जिम्मेदार होला।
३९-जेकरा घेघ ओकरा उदबेगे ना दुसरा के कवन उदबेग---दुसरा के फेर में परल ठीक ना।
४०-जेके भगवान ना मरिहें ओके केहू ना मारी---भगवान सबके रक्षा करेलें।
४१-जेकर लाठी ओकर भँइस---हमेशा बरियार के जीत होला।
४२---जे गरजे से बरसे ना---ढेर बोले वाला कुछ क ना पावेला।अगिला कड़ी में फेरु .....

◆ ◆ ◆

माया शर्मा
प्रबन्ध सम्पादक- सिरिजन
पंचदेवरी, गोपालगंज बिहार

बिहार के मोतिहारी में दिनांक 26 आउर 27 फरवरी , 2022 के सम्पन्न भइल दू दिवसीय अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के 26वाँ ऐतिहासिक अधिवेशन में नव निर्वाचित सर्वोच्च अधिकार प्राप्त 'प्रवर समिति आ ओकरा द्वारा चयनित 'राष्ट्रीय कार्य समिति' के चयन भइल।

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के महामंत्री डॉ. जयकान्त सिह ' जय ' बतवनीं की अबकी के अधिवेशन में सर्वसम्मति से भोजपुरी भाषा के विकास आ उत्थान के संगे एकरा के संवैधानिक मान्यता दियआवे खातिर भोजपुरी के सेवा में जुटल नया आ पुरान पीढ़ी के मिला के एगो नया टीम बनावल गइल बा। एह टीम के प्रवर समिति आ राष्ट्रीय कार्यसमिति के नाँव से जानल जाई। एह दूनू समितियन में क्रमशः नीचे दिहल सूची के अनुसार माननीय भोजपुरिया सेवी लोग के स्थान दिहल गइल बा।

प्रवर समिति :

सर्वश्री डॉ. अर्जुन दास केसरी (राबर्टगंज, उ. प्र.),

सूर्य देव पाठक 'पराग'(लखनऊ, उ. प्र.), डॉ. रिपु सूदन श्रीवास्तव (मुजफ्फरपुर , बिहार), भगवती प्रसाद द्विवेदी (पटना, बिहार), कनक किशोर (राँची, झारखंड), महेन्द्र प्रसाद सिह (नई दिल्ली),

सुभाष चंद्र यादव (गोरखपुर, उ. प्र.), डॉ. गुरु चरण सिह (सासाराम, बिहार), डॉ. सुनील कुमार पाठक (पटना, बिहार), गंगा प्रसाद ' अरुण ' (जमशेदपुर, झारखंड), डॉ. राम निरंजन पाण्डेय (मोतिहारी, पूर्वी चम्पारण), डॉ. नीरज सिह (आरा, बिहार), डॉ. कमलेश राय (मऊ, उ. प्र.), डॉ. ब्रजभूषण मिश्र (मुजफ्फरपुर, बिहार - संयोजक)

राष्ट्रीय कार्य समिति के अध्यक्ष आचार्य हरेराम त्रिपाठी त कार्यकारी अध्यक्ष बनलें डॉ. महामाया प्रसाद विनोद

अध्यक्ष - आचार्य हरेराम त्रिपाठी (राँची, झारखंड) कार्यकारी अध्यक्ष - डॉ. महामाया प्रसाद 'विनोद' (पटना, बिहार), ई. राजेश्वर सिह (गोरखपुर, उत्तर प्रदेश) डॉ. बलराम दूबे (बोकारो, उत्तर प्रदेश), डॉ. विष्णुदेव तिवारी (बक्सर, बिहार),

कोषाध्यक्ष - सर्वश्री जितेन्द्र कुमार (आरा बिहार)

महामंत्री - डॉ. जयकान्त सिह ' जय ' (मुजफ्फरपुर, बिहार)

साहित्य मंत्री - सुनील कुमार श्रीवास्तव ' तंग इनायतपुरी (साहित्य मंत्री)

प्रकाशन मंत्री - ज्योतिष पाण्डेय (छपरा, बिहार), संगठन मंत्री - कौशल मुहब्बतपुरी (मुजफ्फरपुर, बिहार),

प्रचार मंत्री - अजय कुमार ओझा (जमशेदपुर, झारखंड),

प्रबंध मंत्री - मार्कंडेय शारदेय (पटना, बिहार), कला मंत्री - गुलरेज शहजाद (मोतिहारी, बिहार), कार्यालय मंत्री - दिलीप कुमार (पटना, बिहार), विधिक सलाहकार - चन्द्रशेखर सिह अधिवक्ता - उच्च न्यायालय, पटना,

मीडिया सेल - शिवानुग्रह नारायण सिह, मनोज भावुक आ जलज कुमार अनुपम (मीडिया सेल)

भोजपुरी के सेवा में लागल जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया परिवारो के मिलल सम्मान सुभाष पाण्डेय के संगे-संगे मधुबाला सिन्हा के मिलल अहम जिम्मेदारी

कार्यकारिणी के सम्मानित सदस्य - सर्वश्री विश्वनाथ शर्मा (छपरा, बिहार), ब्रजकिशोर दूबे(पटना, बिहार), मधुबाला सिन्हा (मोतिहारी, बिहार), प्रो. ओम प्रकाश पंडित ओम (मोतिहारी , बिहार), डॉ. रवीन्द्र शाहाबादी (बेतिया, बिहार), विनय कुमार सिह (पूर्वी चम्पारण),डॉ. राजेश कुमार माँझी (नई दिल्ली), डॉ. ओम प्रकाश राजापुरी(मशरक, बिहार), नीतू सुदीप्ति नित्या(बिहियां,भोजपुर, बिहार)

डॉ. विक्रम कुमार सिह (मोतीपुर, मुज., बिहार) आ प्रकाश प्रियांशु (कोलकाता, पश्चिम बंगाल)।

प्रदेश इकाई संयोजक :

डॉ. शंकर मुनि राय 'गड़बड़' (छत्तीसगढ़), डॉ. हरेश्वर राय (मध्यप्रदेश), मनोकामना अजय (झारखंड), डॉ. जनार्दन सिह अमन (उत्तर प्रदेश), केशव मोहन पाण्डेय (दिल्ली) और डॉ. प्रमोद कुमार तिवारी (गुजरात)।

भोजपुरी संघर्ष वाहिनी संयोजक :

सर्वश्री सुभाष पाण्डेय (उत्तर बिहार), शैलेन्द्र सिह (दक्षिण बिहार), लाखन सिह (झारखंड), कुमार अभिनीत (उत्तर प्रदेश) और अशोक सिह अकेला (दक्षिण भारत)।

सम्मेलन के मुख्य पत्र ' भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका ' के संपादन आउर प्रकाशन के दायित्व :

डॉ. महामाया प्रसाद विनोद (कार्यकारी अध्यक्ष), जितेन्द्र कुमार (सदस्य, प्रवर समिति) एवं दिलीप कुमार (कार्यालय मंत्री)

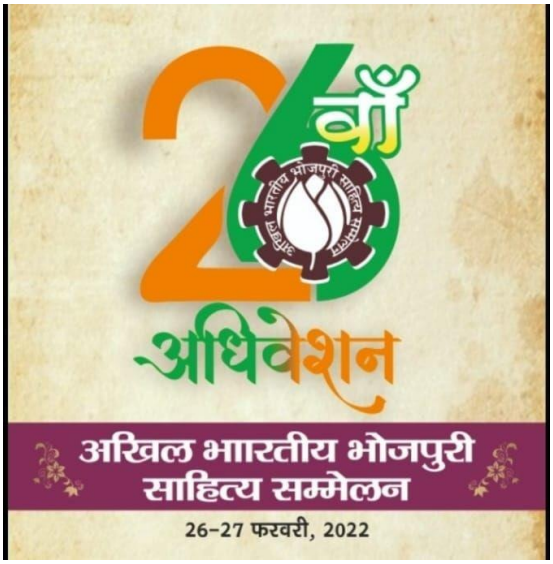

◆ ◆ ◆

लघु कविता

१. ख़ामोशी
जुबाँ बोल न पावेला
न करेला मनाही कवनो निहोरा के
जाने कइसन माटी देह में लागल बा
आँखिन में कवनो हैरानी ना लउके,
लउकेला बस सबकर हँसत-खेलत दुःख

◆ ◆ ◆

२. दुःख
जब हमनी के मिलेलीं जा
एक अरसा बाद
वोह मिलन में हमनी के
पहिले आके मिले ला
समय से न मिल पवला के दुःख।

◆ ◆ ◆

३ राजधानी
राजधानी के भाषा
जब चढेला केहू के जुबान प
त ऊ समझावेला
फ़रिछ-फ़रिछ के एकर अरथ,
घोर के पियावे लागेला
राजधानी,
अपना जवार के लोग के
आ राजधानी के अपना जवरे
मिलावे में चुपा जाला ।

◆ ◆ ◆

दीपक सिंह
कोलकाता

हमार गाँव

भोजपुरी त हमनीके मादरी जुबान हिय। ई हमनीके घुटिये में पियावल गइल बा लेकिन एके बोले में ढेर लोग के लाज लागता लेकिन अपवाद स्वरूप कुछ लोग जरूर बा जे एके शान से बोलता लिखता आ एके जोगावे खातिर प्रयासरत बा | एहीसे जइसे मौका मिलता गाँव से जुड़ल हर चीझ के उतार के फेके खातिर उतावला बा चाहे ऊ भाषा होखे चाहे होखे खान पान, भेष-भूषा, रीति-रिवाज, शहर ओकरा के गँवार कहता आ ऊ गाँव से नजर चोरावता। इहे दुविधा में भोजपुरिया समाज जिए के मजबूर बा। हरियाणा हमार कर्मभूमि ह जब हम इहाँ के गाँव देखिना त पाइला कि इहाँ के लोग बड़ा शान से कहता कि हम गाँव में रहिला। उनका अपना बोली आ संस्कृति पर नाज़ बा। लोग सुखी सम्पन्न बा। यथार्थ आ कल्पना में कवनो अंतर् नइखे। एहि से संस्कृति फलत फुलत बिया, गाँव आबाद बा, गाँव के भाषा आबाद बिया, बोली आबाद बिया। संस्कृति लपकत-चमकत मजगर बढ़न्ती प बा।

पुरनका गाँव जवन हमरा जेहन में बा ऊ देखावा से बड़ी दूर रहे। तबो कुछ लोग शहर में नौकरी करत रहे लेकिन उहो लोग प शहर कवनो खास प्रभाव ना डलले रहे। उहो लोग जब गाँवे आवे त ढले में ढेर टाइम ना लागे भोजपुरी के अलावा दोसर भासा में बोलला बतियवला प बिदेशी क उपमा पावे। रेलगाड़ी हवाई जहाज प चढ़े के शौक तबो रहे लकिन गोड़ जमीन प राखे के शौक बीस पड़त रहे। हमरा याद नइखे दुवार प चारदिवारी रहे आ ओकरा में लोहा के गेट लागल होखे। ओहू समय गाय-बैल खोला स लेकिन तबो दुवार खुला रहे।

अब माटी के घर पका हो गइल चारु ओर से छरदेवाली दिया गइल लोहा के गेट लाग गइल। पहिले गाँव एगो घर रहे, अब घर एगो शहर हो गइल बा। एह बदलाव क नाँव बिकास धराइल। बिकास के नाँव प गाँव के जवन लेमनचूस देखावल गइल ऊ जहर के काम कइलस। गाँव क़े हावा में अपनापन वाला खुशबु ओरा गइल बा। लोग एक दोसरा से मिलले नइखे चाहत समाजिकता दरक रहल बा। गाँव के पानी खराब हो गइल बा जनता ओरा गइल बा। खराब पानी खातिर त आरो लाग गइल बा। लेकिन ओराइल पानी फिर गाँव प चढ़ी एकर उम्मीद कमे लउकता। गाँव ऊ नइखे रह गइल जवन हमनीके मानस में बा। आदमी जब गाँवे जाला त आँख सुखल आ दिल रोवत रहेला। तब के गाँव में लपेटाइल हमनीके देह आज के गाँव के बिखरत-छिटाइल, ओरात देख बेचैन बा। सवाल जइसे तीना होखे के पूछता का गाँव बाँची? एह सवाल से भागे के कोशिश जारी बा। जब आदमी आगे बढ़ेला त ऊ जरूर एक बार पाछे मुड़ के देखेला आ सोचेला कुछ गलती त नइखे होखत? जर से कटे के पीड़ा लेके ऊ पलायन करेला। मजगर सवाल इ बा कि ऊ कट पावेला? एकर जबाब खातिर हमनीके आपन मन के टटोरे के परी। शहर की ओर पराये के गाँव छोड़े खातिर आदमी के लगे कतनो बहाना होखे, मजबूरी होखे, लेकिन ई त मनहि के परी के हर भोजपुरिया के दिल में गाँव बसेला। ऊ देश में रहे भा बिदेश में जेहन के गाँव क इयाद के खाद पानी देत रहे, गाँव कबो ना मरी। देश दुनिया में केहू कहीं रही ओकर पहिचान ओकरा गाँव से होला। आदमी गाँव से त कट सकेला लेकिन एके अपना से अलग नइखे क सकत, ना त पहिचान पर संकट आ जाई।

ई त खाली हमरे गाँव के राम कहानी नइखे हर भोजपुरिया गाँव के कमोबेश इहे कहानी बा। एकरा बादो हमार गाँव में हर बिरादरी के लोग बा खेती त मुख्य पेशा बड़ले बा लेकिन प्राय हर घर के लोग कमाए खातिर बाहर बा, कमाइल पइसा गाँव के बिकास में भरपूर सहयोग करत लउकेला। बिकास क हवा से हमरो गाँव अछूता नइखे, सरकारी इस्कूल के अलावा छोट-मोट कइगो अंग्रेजी इस्कूल बान स, माटी के घर आ पलानी तूर के पक्का के घर बन गइल बा भा बन रहल बा। गाँव के खोरी पक्की त बड़ले बाली स बिजली के अलावा सौर ऊर्जा के रौशनी से भी हमार गाँव रोशन रहेला। नवका त कीपैड के मोबाइल के बदलें इंटरनेट लागल स्मार्ट मोबाइल फोन में खुबूर-खुबूर कुछ खोजते लउकेला, सेल्फी आ कान में लिड लगा के गाना सुने के बीमारी से हमार गाँव भी अछूता नइखे। स्मार्ट मोबाइल के अलावा करिया-उज्जर टीवी के साथे साथ रंगीन टीवी भी गाँव के मनसाइन कइले रहेला। मर्दाना लोग के अलावा आधी आबादी के पसंदीदा चीज ह ई टीवी। डिश एंटीना भी गाँव के घर के छत्त प आम बात हो गइल बा। एकरा चलते टीवी प चौबीसो घंटा प्रोग्राम चलते रहेला। एह डिजिटल युग से गाँव भी अछूता नइखे। फेसबुक, व्हाट्सअप, यूट्यूब जइसन चीज़ में बाझल लउकेला गाँव के युवा वर्ग। साइकिल क जगह मोटरसाइकिल आ चार चकवा गाडी भी सड़की प खूब दौरत लउकता। चरनी से पहिले बरध, एकरा बाद गाय भईस बकरी भी बिला रहल बा। एकरा जगह ट्रेक्टर, हार्वेस्टर, थ्रेशर जइसन मशीन से खेती आसान हो गइल बा। महीनो के काम अब घंटो में निपट जाता गाँव में।

लाखन अभाव के बादो समाजिकता ज़िदा बा गाँव में। ई समाजिकता कवनो बियाह ख़ुशी के समारोह भा दुःख तकलीफ में खूब लउकेला। हमरा गाँव में नाउ क भूमिका निभावेला मुसलमान परिवार। पूजा पाठ भा कवनो हँसी-ख़ुशी भा दुःख तकलीफ के समय होखे इनकर बढ़-चढ़ के हिस्सेदारी साफ़ लउकेला। पूजापाठ में भी उपरोहित लोग के साथे साथ लागल रहेला ई लोग, कहीं भी आड़े ना आवेला गैर मजहब। कवनो तरफ के भेदभाव ना महसूस होखेला न मेहमान के ना मेजबान के। ई परम्परा हमरा गाँव में सदियों से चलल आ रहल बा। हमरा गाँव के बन में काली माई, सिद्धि बाबा के अलावा शहीद बाबा भी बान। सिद्धि बाबा के दर्शनार्थी के शहीद बाबा के दर्शन जरूरी होला आ ई बात शहीदो बाबा के दर्शनार्थी प लागू होखेला। जब देश मजहबी लड़ाई से परेशान बा लेकिन हमार गाँव के दुनो मजहब के लोगे मिलजुल के गंगा-जमुनी तहजीब के जिया के रखल बा । हमरा गाँव के नाम सोनहरिया धरा गइल बा त एके रहे देहला के काम। हमरा त ई नाँव बड़ा प्रिय ह। सोना गाँव में नइखे त का भइल नाँव में त बा न। एके ना केहू चोराई ना कवनो ड़कइत एके छीन सकता हमनी से। हमार गाँव हमरा खातिर सोना से कवनो माने में कम ना ह।

तारकेश्वर राय "तारक"
उप सम्पादक- सिरिजन
ग्राम+पोस्टःसोनहरिया,भुवालचक
गाज़ीपुर उत्तर प्रदेश

बतकूचन

'बाबा हमरा के आशीर्वाद दिहीं आज फस्ट जनवरी ह', रघुनाथ काका के लड़िका झुलफनवा बटेसर बाबा के बड़ी सरधा से गोड़ छू के आशीर्वाद मंगलस।बटेसर बाबा आदिम जुग के मनई ठहरलन। खाँटी सनातनी फगुआ, रामनमी आ दशहरा के मानेवाला। फस्ट जनवरी के नाम सुनते भीतरे-भीतर कनमनइलन। मने -मने दाँत पीस के कहलन- 'हइ देखऽ ना। बाप दादा ना खइलन पान, दाँत बिदोर के गइल जान। ई चललन ह फस्ट जनवरी मनावे?' बाकी करस त का करस? केहु गोड़ छूवे त आशीर्वाद त देवहीं के पड़ी। एही से ऊपरा के मन से कहलन - 'खुश रहऽ, एसों माथे मउर चढ़ जा।'

बाबा के आशीर्वाद सुनके झुलफन बड़ा खुश भइलन। खुश होखेवाला बातिए रहे। चार साल से तिलकहरु कचरकूट उड़ा के रफूचक्कर हो जात रहन सँ।अंगना में अभी तक शिवशंकर हरी ना गवाइल। कबो -कबो त बुझाए कि अबकी भाँवर घुमिए के रही बाकी बियाह कटवन के मारे चढ़ल भँड़ेसर उतर जात रहे।सँउसे गाँव बांडा-बांडा कहे से अलग। बियाह के बात सुन के मुर्दो में जान आ जाला। एह से झुलफन के बुझइबे ना कइल कि बटेसर बाबा साँचहूँ आशीर्वाद देलन ह कि चउल कइलन ह?

हर आदमी के जीभ प कबो-कबो सरस्वती सवार हो जाली आ ऊ जवन कहेलन तवन साँच हो जाला।ओह दिन बटेसर बाबा के जीभ पर साक्षात सरस्वती सवार रहली। जब झुलफन घरे गइलन त देखत बाड़न कि उनकर बाबूजी उनका माई से कहत रहन कि अब का नाक चुववले बारु? मन हरियर करऽ, आजे तोहरा भाई खदेरन के फोन आइल रहे। ऊ लगभग झुलफन के बियाह ठीक कर दिहले बा। जानऽ तारु कहाँ? ...लापतागंज, अपना साला की लइकी से।

पतोह परिछे खातिर एकदम मटरमाला ले के तइयार रहऽ। अबकी बियाह टांगियो से केहू काटी त ना कटाई। बस खरवाँस उतरला के देर बा। अतना सुनते झुलफन की माई के गोड़ अब भुँइया धराते ना रहे।मन में सैकड़ों लड्डु फूटे लागल। कहली, 'अजी अब खरवाँस उतरे कव गो दिन रह गइल बा। गइल माघ दिन उनतीस बाकी। आरे अगिला सोमार के सकरात ह चुरा दही खा आ खरवाँस खतम।'

लइका की माई के पतोह उतारे के आ बाबूजी के समधी बने में जवन खुशी मिलेला ऊ खुशी लइका के जनमो लेला प ना होला। गाछे कटहर ओठे तेल। तिलकहरु के आवे की आशा में रघुनाथ सबसे पहिले सँउसे किता के चूना से फेरवारी करवइलन। फेर सोचलन कि काहे ना दूगो नया तोसक तकिया भरवा दीं कि हेने-होने मांगे के ना परे। बस का रहे, एक दिन फजिरहीं उठलन आ सीधे रफीक मियाँ के घर के रहता ध लिहलन। रहता में फिरंजी बाबा मिल गइलन। सुभाव से बड़ा मजकिहा। भेंटते रघुनाथ से पूछलन, 'का जजमान असवों बाजा बाजी कि ना? आरे मर्दे लइका बोका लेखा महके लागी त केहू बियाह ना करी। ना दू पइसा ऊँच नीच क के बियाह तय कर लऽ!' फिरंगी बाबा के बात रघुनाथ के तनी अटपटाह त लागल बाकी करस का जब आपने सिक्का टलहा रहे त बियाह के बाजार में ओकर का मोल रही? मन मसोस के रह गइलन। बाकी अबकी बेर उनका सवाल के जबाव देवे के खेमाता उनकर साला उनका में डाल देले रहे। गाँव गिरान में लोग पंडितजी के बड़ा आदर करेला। मान के चलेला कि शुभ काम में अगर पंडितजी के आशीर्वाद के पवित्ती पड़ जाय त शुरु से अंत तक सब शुभ होत चल जाला। एही से रघुनाथ बड़ा विनम्र भाव से कहलन,"अबकी त पुरहर उम्मीद बा, बस रउरा आशीर्वाद के दरकार बा।" "आरे रे ....रे...का कहत बानीं जजमान? हमनीं के पुरोहित ठहरनीं, सबेर से साँझ तक आशीर्वाद लो दही..लो दही करत सँउसे गाँव घुमत रहिला।"

'बाबा हमरा एकरे जरुरत बा', कह के फिरंगी बाबा के गोड़ धर लिहलन। बबो आशीर्वाद देवे में तनिको देर ना कइलन। हाथ धर के रघुनाथ के उठाके पीठ ठोक के गरब से कहलन, "जो बिरथा ना जाए देवऋषि बानी।"

अइन सकरात के बिहान भइला झुलफन के मामा तीन चार गो आदमी के ले के आ धमकलन। दुआर प नया तोसक तकिया आ चद्दर बिछावल गइल। तिलकहरु लोगन के खूब आवभगत भइल। अमूमन गाँवन में ई देखल गइल बा कि तिलकहरु लोगन के जाल में फँसावे खातिर गाँव के सबसे बोलता आदमी के बोला लिहल जाला। एह मामला में फिरंगी बाबा एकदम फेरहा रहीं। उहाँ दुआर प से भागलो तिलकहरु के मति फेर दिहिला। अबकी कवनो दाव खाली ना जाए एह खयाल से रघुनाथ तुरंत फिरंगी बाबा के सहारा लेलन। फिरंगी बाबा आवते कहलन, 'का हो रघुनाथ! अब कइसे तिलकहरु से सट-सट के बियाह के बात बतियावतारऽ। हम लफुसपुरवालन से पाँच लाख दियवावत रहीं त तहरा अँटकत रहे।" तिलकहरुअन के एक दम तार प चढ़ावे वाला बिरह बानी सुन के रघुनाथ मनहीं मन गाजत रहन। बाबा, " हीत लगाहे में बियहवा होता। का करीं, हमार सरवा आ के गोड़े छान लेलस।' अच्छा चलऽ, एगो गरीब के उद्धार हो जाइ आ हमरा के ई बतावऽ लइकी के बाप का करेला?'

'लइकी के बाप त डकमुशीं ह। देखीं ना ओकरा छुट्टी कहाँ मिलल। लइका देखे खातिर कहाँ आइल, छोट भाई के भेजले बा।'

'अच्छा ई बात बा, एहिजे हमरा तनी गड़गबड़ी लउकता। आ जाइत त आजुए नव छव हो जाइत। अच्छा चलऽ सब रामजी पार लगा दिहें।'

खदेरन आ फिरंगी बाबा दुनो जोड़ी के नगाड़ा बरतुहार लोग के आगे-पीछे एकदम परछाहीं लेखा चउबिसो घंटा लागल रहलन। शादी-बियाह एकदम टुनकाह चीज ह। जहाँ केहू तनिको एने-ओने कइलस कि धोवल धावल भँइस लेवाड़ ले लिही। एने खदेरन आ फिरंगी बाबा अपना काम में लागल रहन ओने रघुनाथ ताबड़ तोड़ चाह-नास्ता धुकले रहन। लइकी के चाचा छिपा-तिरिथ मिजाजवाला आदमी रहस।हितई-नतई जहाँ पेटपूजा के बहार होखे त गाँवे कतनो काम आकाज काहें ना होखे बिना अठहरिया लगइले ओहिजा से डिगत ना रहस। एहिजो रघुनाथ मुरुगा-मछरी के धुरछक उड़वले रहन। अब ई सुखवा छोड़ के कहाँ जइबे मनवाँ? अइसन सुख त लोग के किया त अगुअईए में मिलेला आ किया त खेत लिखाइए में मिलेला।

तीन-चार दिन तक खूब कचरकूट रहल। कहल जाला नू लइकवा के बहाने लरकोरिया जिएले। फिरंगियो बाबा बहत गंगा में जम के हाथ धोवलन। अब तिलकहरु के बिदाई के बेरा आइल। खूब चढ़-बढ़ बिदाई कइल गइल। जाते जात लइकी के चाचा कह गइलन कि उनका तरफ से एकदम हरी झंडी बा। बस लइकी के बाप के खाली हँ कहला के देर बा। फेर त चट मंगनी पट बियाह होत देर ना लागी। खदेरनो रघुनाथ के पूरा ढाढ़स दे के कहलन कि पाहुन मन में इचिको संशय नइखे राखे के। अबकी त झुलफन के हाड़ में हरदी लागिए के रही। आपन साटा-बाजा के तइयारी करऽ। बाद में जोहला प गोड़वो के नाच खाली ना रहेला।

तिलकहरु के जाते रघुनाथ गाँव के हलुआई आ गैसबत्ती बारेवालन के चेतावे लगलन। देखिहसँ रे! हमरो घरे एसों लगन लागेवाला बा। एगो दूगो दिन खाली रखिहऽ लोग। काहे से कि जसहीं दिन धराई त तोहरा लोग के गर्दन धरम। हम फेर कुछुओ ना सुनम कि फलनवाल के साटा ले ले बानीं। रफीक मियाँ लोगन के कथा-पूजा आ शादी-बियाह में भर गाँव घूम-घूम गैस बारत रहन। ऊ तनी मुँह के फटहा रहन। जवन कुछ होखे साफ-साफ लोगन के मुँहे प ओसा देत रहन। रघुनाथ के बात सुन के उनका से रहल ना गइल। कहलन, 'सुनऽ हो रघुनाथ, तोहर झुलफन के त चार साल से बियाह हो रहल बा। तू त चार साल से असहीं बिना बेयार के तिलंगी उड़ा रहल बाड़ऽ। हमरा त बुझाता कि तोहरा झुलफन के अभी सासे जनम नइखी लेले। अतना सुन के रघुनाथ ओहिजा से चुप-चाप रहता नापे में ही आपन भलाई समझलन।सोचलन कि ना हटम त मियाँजियवा कुछ आउर सीताचार उतारे लागी।

आशा प संसार टिकल बा। ई अइसन चीज ह कि आदमी पीछे के सब गाढ़-बिपत भुला जाला आ सोचे लागेला कि जइसे रात के पाछे दिन ह, जाड़ा के पाछे बसंत ह ओसहीं कुदिन के पाछे सुदिन ह। रघुनाथ के परिवार एही आसा के भँवर में रोज डूबत-उतरात रहे। घरे रहस चाहे घर से बाहर सगरो एके चर्चा। घरे उनकर पत्नी कहस कि देंखीं हम कहिए से सोचले बानीं कि पतोह उतारब त ओकरा के मुँहदेखाइ में कम से कम सात भर के सिकरी देहम। आखिर सुकर के एके पुतर झुलफनें नू बाड़न, हमरा दू चार गो बेटा नइखे नू बियाहे के?

सँझिया दलान प बइठेवालन लोग में सलाहचंदन के कमी ना रहे। बियाह के एकदम ठटइल बनावे खातिर लोग तरह-तरह के सलाह देवे लगलन। कोई कहे कि चाँद बिजली के नाच कर दिआइ। कोई कहे कि कुछो होखे चाहे मत होखे बाकि बाजा अइसन होखे कि दुअरा लागे त बुझाए कि एगो बाजा बाजता। कोई कहे कि बरियात कम से कम एक हजार से कम ना जाए के चाहीं। अवार-जवार के एको घोड़वाह छूटे के ना चाहीं आ दू चार गो हथियावाला चल चलतनसँ त का कहे के रहे, सोना में सोहागा। केहे कहे कि जतना असवारी मुसटोली में बा सभन के ले चलल जाई। गाँव के सर- सरदारन के पैदले ले गइल ठीक ना रही।आरे का लागे के बा मुसहरवन के एगो धोती आ ताड़ी पिया द ओतने में पड़के लगिहनसँ। जब सज-धज बरियात बेटिहा के दुअरा पहुँची त सँउसे गाँव त का अवार-जवार डगडगा जाई। अतना बात होते रहे कि केनहूँ से देवकुवर मुसहर आ गइलन। ताड़ी के बात सुनते कहलन, "सुनऽ रघुनाथ मालिक, हें त भाई ले के खाली धोती से काम ना चली। ओकरा साथे कुर्ता गंजी आ गमछा ना मिली त हम एको डोलिए ना जाए देम।" फिरंगी बाबा देवकुवर के बात सुनते कहलन, 'हई देखऽ ससुरा के हो बाग लागल ना मंगरा डेरा डाले लागल।'

रघुनाथ के आशा रहे कि सिरपंचमी तक लइका के छेंका जरूर पड़ जाई। बाकि दिन देखते-देखते शिवरातो बीत गइल। लइकी के बाप ना आइल। ना अबहीं तक खदेरने कवनो जोह पाता देलख। जइसे-जइसे समय बीतत रहे वइसे -वइसे रघुनाथ के मन में किसिम-किसिम खयाल आवे लागल आ जेकरा साथे कईबार अइसन घटना घटल होखे ओकर बेचैनी के का कहे के बा? दिन भ त गेरुआरी- बछुआरी में लागल रहला प कुछ ना बुझात रहे बाकि रात के कटला ऊँख लेखाँ बिछवना प गिरस त सोचे लागस, बुझाता असउँवों सब गुड़ गोबर होई का? ससुरा चार दिन झम के गइलनसँ। मुलकी एसा पइसा खरच भइल। चीनी डालडा के पइसा खातिर अबहुओं धनेसर सहुआ ही असहीं ताकता। ओकरा के पइसा देवे के त परी , रोके दिहीं चाहे हँस के दिहीं। सबसे अखरता कि एक हपता से तिलकहरु के देखावे खातिर चार गो दोसरा के बैल खूँटा प बान्हल रहल आ उहो दम भ सानी उड़वलनसँ। ई सब के खरचा सोच-सोच के उनकर माथा टनके लागे। कसहूँ तिलकहरुआ आ जइतनसँ त सब कइल सवारथ हो जाइत।

धीरे-धीरे लगन आपन बोरिया-बसता बान्हे लागल। असाढ़ के लगन कवनो लगन ना ह। बेंग आ झींगुर के बियाह एह लगन में होला। पत्तल प बेंग कूदे लागेलनसँ। तबहूँ रघुनाथ आस ना छोड़ले रहन। एने उनकर पत्नियो के कहनाम रहे कि जब खदेरना लाग गइल बा त तिलकहरु के भागे के कवनो सवाले नइखे। बाकि बंस-बरखा देखते-देखते निकल जाला।कहीं ई मत होखे कि एसउओं के लगन खालिए चल जाय।

रफीक मियाँ भले उपर से नरियर नियर रुखर रहस, बाकि उनकर हृदय गड़ी नियर चिकन रहे। ओह दिन रघुनाथ प ऊ बोल काट ले ले रहन बाकि रघुनाथ खातिर उनका मन में बड़ा सरधा रहे। रघुनाथ के कहला अनुसार अबहुओं अंतिम दू-तीन लगन खालिए रखले रहन। अइसन ना कि लोग साटा खातिर आवत ना रहे बाकि ऊ लोगन के ई कहके फेर देत रहन कि रघुनाथ कहिए से एगो-दूगो दिन अपना लइका खातिर बचा के राखे के कहले बारन। लेकिन उहो रोकस त कब तक रोकस। जब लोग साटा खातिर एकदम दुआर के माटी कोड़े लगलन त उनका से ना रहाइल। आखिर केकरा-केकरा से कपड़ फुटउवल करस आ इहो बात रहे कि अगर रघुनाथ के फेर में कहीं खालिए रह गइलन त हाथो तर के जाई आ गोड़ो तर के जाई। एही से सोचलन कि काहे ना उनका से साफ-साफ पुछिए लिहल जा कि एसो उनका लइका के बियाह बा कि ना। अगर ना कहिहे त लोग के साटा कर लिहल जाई।

सुझावन काका किहाँ हरदी के कथा रहे। आरती लगावे सभे जुटल रहे। रफीक मियाँ ओह दिन गैस बारे गइल रहन। ओहिजे रघुनाथ से भेंट हो गइल।ओने सभे, 'आरती कीजे राजाराम चनरजी की' में लागल रहे एने रफीक मियाल आ रघुनाथ दोसरे आरती में लाग गइलन। रघुनाथ से भेंटते रफीक मियाँ पूछ बइठलन,"का मालिक एसउओं के लगन गुड़ा जाई का? रउए चलते हम कतना लोग के टिटकार देहनीं। हमार सटावा खाली राख के घाटा लगाइब का? "का कहीं रफीक, देखऽ ना लइकिया के बाबूजी सब तय तापर करे खातिर आवेवाला रहलें बाकि अबहीं ले अइलें ना। खदेरनो जब से गइल ससुरा एकदम दबकी साध लेले बा। मान लेतानीं कि लइकिया के बाप नोकरिहा बा ओकरा छुटी ना मिलत होई बाकि खदेरना के त साफ-साफ बता देवे के चाहीं। धीकला हमरा के ओह-जाह में डाल के रखले बा।"

'अच्छा त लइकिया के बाप सरबिस करेला ना? कवना बिभाग में बा? पलटन-उलटन में बा का?'

'ना ....ना....ना, आरे

पोस्टापिस के डकमुशीं ह। हमरा बुझाता कि डकमुशियन के रोज नू लोगन के चिठ्ठी-पतरी बाँटे के रहेला। हो सकेला ओकरा छुट्टी ना मिलत होई? अब ऊ ना आवता ना बियाह के दिन रखाता। ना त ओकर चचावा त सब देखसुन के गइले रहे।'

अतना सुनके रफिक मियाँ कुछ सोच में पड़ गइलन। 'का सोंच में पड़ गइलऽ रे मर्दे, अगर तोहरा घाटा लागे के डर सता रहल बा त साटा आपन क लऽ। बाद में देखल जाई, जवन होई तवन होई।'

'ना...ना...हम ई कुल्ह नइखीं सोचत बाकि तू जब डकमुशीं के बात कहतारऽ त हमरा जहाँ तक खेयाल बा दू महीना पहिले एगो डकमुशीं के बटेसर बाबा के दुआर प बइठल देखले रहीं, उनका से बतियावत।निकहा ढेर देर तक रोकल रहे।'

'आरे, ऊ अपना गाँव के डकमुंशिया होई। हँ नू? हमरा आँख में बटाम लागल बा, ना? हम अपना गाँव के डकमुंशिया के चिन्हत नइखीं? ई कहाँ खरकटल, कहिया के रोगी,क्षदेखे में लागेला कि कहिया के बरमदुखी ह आ ऊ कहां गोर बुराक, तरकुल लेखाँ लामा, छरहर। देखते पाप-पुन्न झरत रहे आ ना जाने बटेसर बाबा से एकदम मुँह में मुँह सटा के का बतियावत रहे?'

ई कुल्ह सुन के रघुनाथ के साँप सुंघ गइल। अब भला आरती में उनकर मन लागो? जसहीं कथा खतम भइल झटपट परसादी ले के घरे भगलन। रात भ नींद ना आइल। बटेसर बाबा के रग-रग से वाकिफ रहन आ ईश्वरी माया अइसन कि उनकर घर गाँव के अइन मोहान प रहे। जहाँ कोई तिलकहरु आवस कि उनका के ओहि जे से धाहो मैना कर देत रहन। का गरांन्टी बा कि ऊ झुलफनवा खातिर ना कइले होइहें? रघुनाथ के समझते देर ना लागल कि उनकर झुलफन के एसवों हाड़ में हरदी लागे से रहल। हलाँकि तिलकहरुअन के ठकुरसोहाती में कवनो कसर बाकी ना छोड़लन लेकिन बटेसर बाबा लेखा उलटा खँजरी बजावेवालन के का दवाई बा? एकरा खातिर त केसो फउदारी ना हो सकेला। अब भीतरे-भीतरे कपसला के सिवाय कवनो चारा ना रहे। इहे सोचत-सोचत बिहान हो गइल। गाय-गेरु के बाहर निकाल के जल्दी से सानी गोत देलन। सोचलन कि फर- फराकत से अइला के बाद खरहारा कइल जाई। घर से निकल के अबहीं भूतहवा पीपर तक पहुँचले रहन कि रास्ता में बटेसर बाबा के बड़का लइका बकेसर भेंटा गइलन।बेचारा सुभाव से एकदम गऊ, तनिको पुरुब-पछिम ना ताकेवाला। आउर लोग लेखा तेलहा-मेलहा एकदम ना रहन। रघुनाथ के मन में आइल कि उनका के उनकर बाबूजी के करनाम के दस्तान सुना दीं बाकि फेर सोचलन कि बकेसर के सामने अब ई कुल्ह मल्हार गवले से का फायदा होई? अब त छापल-छोपल भीति ढह गइल। ई सब सोचते रहन कि उनका से ना जाने कइसे कहा गइल, "का रघुनाथ भइया! एसो बरतिया ले चलबऽ नू? अबहीं तक ले कवनो सुरसार नइखे बुझात रे मर्दे?" अनजाने सही, बकेसर एकदम रघुनाथ के दुखत रग प हाथ राख दिहलन।उनका देह में पहिले से ही तितकी लेसले रहे आ बकेसर ई बात पूछ के आउर आग में घीव डाल दिहलें। अब रघुनाथ भला कहाँ रोकेवाला रहन। छुटले मुँह तपाक से कहलन, "तहार बपसी केहू के भला चाहस तब नू केहू केहू के बरियात ले जाई?" 'आँय हमार बपसी? ऊ का तोहरा के कइले बाड़न? का कइले बाड़न?'

'आरे ई पूछऽ कि का ना कइले बाड़न! बुझाता कि लोग के बियाह काटे खातिर सतुआ बान्ह के बइठल बाड़न। उनका मारे गाँव में एको बरतुहार टिटकऽ तारनसँ? रघुनाथ के बात सुन के बकेसर के एकदम ठकमुरकी मार देलस। एही बकझक में दुनो आदमी खरिहानी पहुँच गइलन। बटेसर बाबा जतरे प धरा गइलन। बकेसर का अपना बाबूजी के ई लकुराधी वाला लुफुत एक दम अच्छा ना लागल। ऊ तुरंत अपना बाबूजी से सवाल दाग देलन, "का बाबूजी हम ई का सुनत बानीं, रउआ झुलफनवा के बियाह काट देनीं?"

'हम... आ बियाह... ई के तहरा से कह दिहलस?'

अतना सुनते रघुनाथ के चेहरा जरत अंगोरा हो गइल। हम कहतानीं। दू महीना पहिले तोहरा से एगो डकमुंशी आ के ना मिलल रहे?... ओकरा से बइठ के गदबेर तक का बतिअइले रहऽ?'

बटेसर बाबा के बुझा गइल कि रफीकवा झगरा लगा देले बा। ठीक सरस्वती पूजा के बिहान भइला डकमुंशिया आइल रहे। सरस्वती पूजा के दिन ताल ठोकाइल रहे। रात भर खूब फगुआ भइल ओही में रफीकवा गैस बरले रहे। ओकरे पइसा लेवे जब आइल रहे त ऊ डकमुंशिया से बतियावत देखले रहे।बटेसर बाबा समुझ गइलन कि अब भागे के कवनो रास्ता नइखे। मने मन ओकरा के खूब कोसलें,"ई रफीकवा ससुरा जवन ना करावे ना त अतना बियाह कटनीं केहू कानो कान ना जनलस आ एह में रफीकवा के चलते हाथ धरा गइल। अच्छा अबकी सारे के गाँव से बिदाइए बा। भोलवो गैस ले आइल बा, इनका से लाख दर्जा नीमन। सब सटवे ओकरा के लिखवा देम, सारे अपने भूखे पटपटा के मर जइहें।"

अमूमन ई देखल गइल बा कि गलती करेवाला कबो आपन गलती ना मानेला। काहे कि ई ओकर स्वभाव हो जाला। ऊ सोचेला कि अपना हिसाब से ऊ जवन करऽता ठीके करता। बटेसर बाबा एह ओछ मानसिकता से अछूता ना रहन। उ रघुनाथ के किरोध से तमतमाइल देख के कहलन कि, "हमरा प अनेरे नू लाल पीयर हो तारऽ, हम ओकरा के का कहले बानी?"

अतना प बकेसर से ना रहाइल," बाबूजी ई कवनो बात भइल, केहु के बियाह काट के कहत बानीं कि हम का कइले बानीं? एगो त असहीं गाँव में कतना लइका मारल चलत बारनसँ।.झुठहुओं कवनो पोंछ नइखन स उठावत। बड़ा भाग से एगो बियाह सेट भइल रहे ओकरो के काट दिहलऽ? तहरा का मिलेला ई सब करे में।"

'अरे ... हम कहाँ बियाह कटले बानीं? हम का जानत रहीं ओ डकमुंशिये के लइकी से इनका लइका के बियाह ठीक होता? ऊ आ के हमरा पूछलस कि रघुनाथ सिह के जानिला? उनका कतना खेत बा? हम कहनी कि हँ जानिला। कवनो जादा खेत बधार नइखे बँटइया प खेती करेलन। फेर पूछलस कि उनकर लइकवा कइसन ह? हम कहनीं कि लइकवा छोटे-नाटा ह। बढ़ी उढ़ी ना, एकदम समझऽ कि बैगन के गाछ में लगी लगा के बैगन तुड़े वाला। फेर पुछलस कि काम धंधा कुछ करेला? हम कहनीं कि तनी कद के हीन बा ओकरा से काम धंधा ना होई। फेर पुछलस कि कवनो गलत लत नइखे नू? ए प हम कहनीं कि गलत लत का बा कबो-कबो दियरी में काँत प बइठ जाला। एक बेरा माई के छागल बेंच देले रहे। अब तूहीं बतावऽ, का गलत हम बतवले बानीं? कहाँ हम बियाह काट देनीं? का साँच-साँच बात कहल केहू के बियाह काटल हो गइल? हमरा त नइखे बुझात कि एह में बियाह काटेवाला कवनो बात बा।"

सुन के बकेसर आपन कपार पीटे लगलन। खींस से एकदम तमतमा के कहलन, 'अब का गँड़ासी से बियाह कटबऽ त काटल कहाई? ऊमिर के ढलान प आ गइलन बोले के सहूरे नइखे, चलऽतारन लोग के बियाह काटत।'

बकेसर के अपना बाबूजी के एह तरे ओदबाद करत देख रघुनाथ के दया आ गइल। सोचलन कि अब त जवन होखेवाला रहे हो गइल। केहू के बेदिन कइला से ऊ चीज लवट के त ना आई?

का करस आसा प त पानी फिरिए गइल रहे, बकेसर के कसहूँ समझा बुझा के ओहिजा से हटइलन।

मन में भारी निराशा के बोझ लेके जसहीं अपना घर के गली के राह धइलन कि बीच में मार खानी मेहरारुन रहता घेर के थपरी पीट-पीट गावत रही स,"चार ही घाट के पोखरवा हो सुनर गोरिया नहाय, लौंडन के फाटे करेजवा हो गोरी डुबियो ना जाय।"

पता लागल कि गोपालजी बाबू के भगेरना के पंचमगरा माटी कोड़ाता। रघुनाथ के मुँह से आह निकल आइल, मन ही मन सोचलन, ना जाने गढ़भवानी हमरा झुलफन के कहिया दिन फेरिहन।कब उनकर बियाह होई?

◆ ◆ ◆

विनोद सिंह गहरवार

मंगलमाया आधारित गीत

आइल नवकी भोर, मिटे आलस सगरी।
लउके लगल अँजोर, चलल जाई डगरी॥

किरिन भइल टहकार, चिरइया बोल गइल।
शीतल मन्द बयार, पतइया डोल गइल।
मह-मह करे सरेह, बाग के अमरइया।
लह-लह लहके खेत, झनर-झन सरसइया॥

फरहर लउके पेड़, खेत के बा कगरी।
आइल नवकी भोर, मिटे आलस सगरी॥१॥

आलस जिउ के काल, तजल बाटे हितकर।
काहे करीं मलाल, असर होई चित पर॥
नदिया बीचे नाइ, मारि के हिल्कोरा।
देत सुघर संदेश, पहुँच जाले ओरा॥

गावत गीत मल्हार, बटोही चल नगरी।
आइल नवकी भोर, मिटे आलस सगरी॥२॥

चलल समय के साथ, हवे बढ़िया जग में।
भले मिले व्यवधान, जिन्दगी के मग में॥
सुख-दुख माया जाल, काटि जे पावेला।
सेही बने महान, कीर्ति फइलावेला॥

पावेला जग मान, ऊँच होला पगरी।
आइल नवकी भोर, मिटे आलस सगरी॥३॥

◆ ◆ ◆

माया शर्मा
प्रबन्ध सम्पादक- सिरिजन
पंचदेवरी, गोपालगंज बिहार

माई सब जानेली

माई सब जानेली
पोंछि के लोर संकट के
सब त सह लिहल जाला।
दुख दर्द के हरदम माई से
कह दिहल जाला।
मन हलुक होइ जाई
माई त सुनबे करिहें नू
श्रद्धा के डोरि बाँधि के
जिनगी जियल जाला।

पथ में रोड़ा आवेला
कबो काँट कुश गड़ि जाला
तबो का हारि जिनगी से
कहियो जियल जाला?
राहि निकली त जरूर
तू बिचार करS नू
संग होइहें माई काहें ना
तनी धीर धरल जाला।

माटी के मूरत शरीर
कबो टूटि गलि जाला
कहि सुनि सोचि समझि के
सब भुला दिहल जाला
देह बरदान ह सृष्टि के
केहू के काम आइब नू
करे बिनती "माया" माई से
दृष्टि सभपे फेरल जाला।

◆ ◆ ◆

आवS हे मुरारी

आवS हे मुरारी
भरल सभा में द्रुपदसुता
श्री कृष्ण कृष्ण गोहराई।
दुशासन मोरे चीर खींचत बा
अब के लाज बचाई?

पाँचो पति सभा के भीतर
बइठे सिर झुकाई।
बन्हल पितामह शपथ लेके
सिहासन के बचाई।

रोवे कलपे विदुर काका
मन ही मन अकुलाई।
नेत्रहीन बाबूजी के भी
मन से दिहल ना देखाई।

चारूओर भइल अन्हार
अब कहाँ हम जाईं।
भरतवंश के मरजादा के
धूल में लोग मिलाई।

देर करS मत हे गिरधारी
बहिनी रोइ बोलाई।
चौबे चीर बढ़ावS मुरारी
बिन तोहरा के सहाई?

◆ ◆ ◆

माया चौबे
तिनसुकिया,आसाम

1. एगो चिड़ियाघर में तोता का पिजड़ा का बाहर लिखल रहे-"ई करामाती तोता अंग्रेजी, हिंदी आ भोजपुरी तीनों भाषा बोलेला।"
एगो आदमी का बड़ा अचरज भइल। जाँचे खातिर ऊ पिजड़ा का लगे खड़ा हो के तोता से पुछलस-"हू आर यू?"
तोता-"आई एम पैरेट।"
ऊ आदमी फेरु पुछलस-"तुम कौन हो?"
तोता-"मैं तोता हूँ।"
आखिर में ऊ आदमी भोजपुरी में पुछलस-"तू के हव?"
तोता-"तोर बाप हईं रे सारे! एक्के बतिया के चार बेरु पूछत बाड़े। पटक के लतिआइए देब।"

2. राय जी डाक्टरनी से शिकायत कइलें-"ए डाक्टरनी जी! रउआ हमार नसबंदी कइसे कइनीं? हमरा मेहरारू का फेरु लड़िका होखे वाला बा।
डाक्टरनी-"सुनीं रायजी, हम राउर नसबंदी नू कइले रहीं। सँउसे टोला आ गाँव के ना नू।"

3. रायजी से उनकर दोस्त पूछलें-"राय जी, जतरा आनंद से कटल नू?"
राय जी-"आरे का कहीं। ऊपरकी बर्थ मिलल रहे। धब्ब से नीचे गिरे का डर से रात भर एक्के करवट रहनी।"
दोस्त-"त केहू से निचलका बर्थ बदल लेतीं।"
राय जी-"केकरा से बदलतीं? निचलका बर्थ पर केहू रहले ना रहे।"

निरंजन श्रीवास्तव

जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया

नवकी कलम

जिन्दा बा इंसानियत

जिन्दा बा इंसानियत जियत रही
नारा मानवता के जोत जलत रही!

सवाल करते दफन हो जइबऽ तू
जहाँ के कारवाँ आगे बढत रही!

केतनो चिकनाई चाहे निकाली
दिल आदत बा उनके कहत रही !

बिघ्न त मुनि जग में दानव कइले
चटुकारी कहियो हरदम करत रही!

केतनो कुछ केहू कहो कहिले
चल देले आँधी सेवा के बहत रही!

बड़ी भागे इहो साधु रूप मिलल
सब गरीबन में मुस्काँ बँटत रही।

◆ ◆ ◆

शैलेंद्र कुमार साधु
मिश्रवलिया, जलालपुर, सारण, बिहार

किसान बाटीं हम

देश के किसान बाटीं हम
खेतवा में जाइ के अन्न उपजाइला हम
हाथ में कुदार, खुरपी अउर हल उठाइला
कड़ी धूप में जा के खून पसीना बहाइला
बरसात में भी आराम नाहीं कर पाइला
तब जा के लइकन खातिर दू रोटी के व्यवस्था कर पाइला

सब के लागेला किसानी कइल बहुत आसान बा
बीज डाल के खेते में, घर में करे के आराम बा
केहू काहें ना समझ पावता कि किसानी में भी नाहीं आराम बा
लगा के भविष्य दाँव पर कर्ज उठाइला
तब जा के खेतवा में खाद पानी के इंतजाम कर पाइला

भइल बरसात भारी, होखे धूप कड़ी त फसल बर्बाद हो जाला
रोटी के आस भी फिर न रह जाला
केहू काहें नि समझत बा कि किसानी नाहीं एतना आसान होखेला
नाहीं किसानी में भी आराम होखेला

लइकन के बिआह भी दुर्भर हो जाला
फसल पर ही बियाह के तारीख़ रखाला
फसल के सही कीमत मिलला पर
परिवार के कुल सपना पुराला

ओहि फसल से त हम सभी के भूख मिटाइला
तब जा के हम किसान कहलाइला।

◆ ◆ ◆

नेहा त्रिपाठी
दिल्ली

बेटीआत्म पीहरे

-अभियंता सौरभ भोजपुरिया

शायद रउवा यकीन ना होई, हमरा आजो फूस- छप्पर के घर में से निकलल धुँवा से एगो खुशबू आवे ला । जी, ई खुशबू ह चूल्ही पर पाकल रोटी के । जब हम छोट रहनी ता हमरा घरे खायेक चूल्हे पर बने । खाना बनावे के जिम्मा ज्यादातर हमार बड़ बहिन के रहे कबो-कबो माई हाथ बटा देव । बहिन के खायेक बनावत देख के हम एक दिन आजी से पूछनी कि आजी ई .... ई दीदी काहे अतना काम करेले ले हो ? काहे ना ईं हमरा नीयन रहेले ले ? ईं रोवत-रोवत खायेक पकावेले आ सब लोग आराम करेला।

आजी कहली कि ई खाना ना पकाई ता का करी? कवनो पढ़ के कलेक्टर थोड़ी बनी, बेली ता रोटीए ।
हमरा समझ आवे लागल कि ईं भेद भाव ए से होता कि दीदी लइकी (बेटी) आ हम बेटा हईं ।

धीरे-धीरे हमरा के समय से उठावल, स्कूल खातिर त्यार कइल, ई सब दीदी के जिम्मेदारी सँउप दिहल गइल आ ऊ पिटाये भा डाँट सुनला के डर से हमरा के बहुत ज्यादा प्यार दुलार देबे लगली । हमरा उनकर प्यार-दुलार तनिक ना सुहाय। रोज सबेरे-सबेरे बाबू उठा .....देर ले सुतल ठीक बात ना ह। अगर तू ना उठबा ता हम पानी डाल देम। पूरा खाना खा के उठीहऽ। पढ़े में आनाकानी जन करा। जदि पढ़बा ना ता बड आदमी कइसे बनबा? दुपहरिया में बहरी नइखे जाएके। इ सब रोज-रोज सुन-सुन के हम थाक गइल रहनी ।

एक दिन आजी से कहनी कि आजी भगा दा एकरा के बड़ी डाँटत बिया दीदी हमरा के ।
"अच्छा हमार राजा बेटा ई तहरा कहे के नइखे, ई खुदे चल जाई बियाहे के बाद। एकर बियाह के बात चलत बा ठीक हो जाई ता ई आपन घरे चल जाई।" - ई आजी कहली ।

हम रात भर खूब खुश हो के सोचत रहनी कि हे भगवान जल्दी से दीदी के शादी हो जाव...
जब ई चल जाइ ता हम आराम से खूब देर ले सुतेम, ठंढा में नहाइब ना। आपन किताब लुकवा देम आ दिन भर बाहर खूब खेलेम..... इहे सब सोचत हम कब सुत गइनी ना मालूम भइल ।
" उठबा कि हम पानी डाली। पाड़ा नियन हो गइल अभी ले कवनो सहूर ना आइल।" दीदी के आवाज सुन के हम बिछवाना से कूद गइनी पानी के डरे ।
एक दिन उहो आ गइल कि दीदी के बारात आज रात आवे वाला बा। अउर केहू के बारे मालूम ना लेकिन दीदी के शादी के दिन हम बहुत खुश रहनी । हमरा आजादी मिले वाला रहे । धीरे-धीरे शादी के सब रस्म पूरा होत गइल । सुबह दीदी के रोवला के आवाज सुन के हम डेरा के उठनी की दीदीआज ले अतना जोर से काहे रोवत बाड़ी ? आजी ता कहत रहली कि शादी भइला के बाद बेटी आपन घरे चल जाले ता ईं रोवत काहे बाड़ी दीदी ? ई हम काहे सोचत बानी ओ ओ .. से हमरा का ऊ कहीं जास हमरा ता आज से छुटकारा मिल गइल। बड़ी आइल रहली ह हमरा पर शासन चलावे, 'हुँ ह्न ह्न' हम झुंझला के कहनी ।

उनकर घोड़ा-गाड़ी हमरा आँख के सोझा से धूर उड़ाव चल गइल। हम आपन बगइचा से निहारत रह गइनी जब ले आँख से लउकत रहे । खुशी के मारे हम जोर से चिलाये के सोचनी हम आजाद हो गइनी। तबले हवा के एगो तेज झोका आइल आ हम जमीन पर गिर गइनी लागल कि केहू थप्पड़ मार के कहत बा - "रे बुड़बक, अब तोर ख्याल के राखी रे ? के उठाई सबेरे-सबेरे ? तोरा के ठहरी पर के खायेक पानी दी ?" ई सुन के

हम जोर जोर से रोवे लगनी । आँसू के मोट-मोट धार से हमार कमीज भीज गइल। हिचकी पर हिचकी आवे लागल । हम घरे काहे खातिर जाएम, हमार के राह देखत होइ ? के आज हमरा के चुप कराई ? ई दुलार अब के करी, केहू नइखे ऊऊहूऊऊऊ ।

बाबू जी के कहाँ फुर्सत बा हमार ख्याल राखे के। उनकरा ता आपन झूठा शान-सउक़त जमींदारी से फुर्सत कहाँ बा। बेटा जीयत बा कि ना, इहो खबर नइखे । बस जमीन रुपिया से मतलब बा। माई के बाते अलग बा उनकरा आजी से लड़ाई आ मुँह भुलावला से फुरसत कहाँ? जे हमरा के ..ई सोच-सोच के हमार आँख से आँसू ना रुकत रहे ।

अपना के सम्हारत घरे गइनी।

"आरे दीदी तू?"

"कहाँ रहला हा अतना देर से बहरी?" आवाज हमरा सुनाइल बाकिर ई त हमार भ्रम रहे। हमार भ्रम टूट गइल काहे कि दीदी के याद हमारा साथ बा। अपन रूम में गइनी सुत के उठनी ता शाम हो गइल रहे ।

कुछ अच्छा ना लागत रहे पढे बैठनी ता आवाज आइल- "मन लगा के पढ़ा, ना ता बड़ आदमी कइसे बनबा?" हम घबरा के एने-ओने देखे लगनी। दीदी ता कही बाड़ी ना, ता ई आवाज केकर ह ? काहे हर जगह-जगह ई दीदी के आवाज सुनाई देत बा ? ई शायेद दीदी, (एगो बेटी) के आत्मा के आवाज ह। भले बेटी पीहर से ससुराल चल जाली लेकिन उनकर आत्मा आज भी आपन घर आँगन में बसेला। आपन बेटा-बेटी के साथे साथे आपन भाई के भी याद सतावेला। याद सतावे ला ऊ आम के बगिया के, याद आवे ला राजा-रानी बनके खेलत खेल कोठरिया के, याद सतावे ला बचपन के हर टोला गलियन के।

अभियन्ता सौरभ कुमार,
सिवान, बिहार

बाँकुड़ा के बलिदानी

ठंढा खूनवा भी छनहीं में उबली-गरमाई।
सुतल गुमान छनही में अउजाई-अकुलाई।
फाँसी-गोली अब रउरा नजरी प नचिहें,
भगत-आजाद के जसहीं याद झिलमिलाई।

हाहाकार अउर भगदड़ शत्रुदल में भइलन।
जब टाप के सुर तेगा-तलवार से मिललन।
गंगा माई कटल बाँह बाँकुड़ा के थाम लेली,
कुँवर सिह तब आजादी साथ नाम जुड़लन।

खोरिया में लोगन के बतकुचन अगराइल ।
बतिया के छिउकी से खुशी हकाइल ।
नयका सबेरवा जयहिन्द से गूँजे लागल ,
हाथ में तिरंगा जयघोष साथे सँवराइल ।

लक्ष्मी,नाना, सुभाष के लोगवा बिसारल।
संघर्ष काल के कृति आजादी बाद बगादल
महल-अटारी से ऊँचा आपन शान करके,
ईमान, रीति, नीति के छनिक लोभे हेरावल।

अकिल के नकल प बा सभे केहू अझुराइल।
सत्य-अहिसा सब नेताजी लोग भुलाइल।
अंजू-पंजू मिल देश के खिल्ली उड़ावस।
देखि राजघाट से गाँधीजी के मति हेराइल।

◆ ◆ ◆

उमेश कुमार राय,
जमुआँव, भोजपुर,
(बिहार)

मर गइला अस चित्त के भितरी

मर गइला अस चित्त के भीतरी
एगो समइए बा
जवन साइकिल के पहिया नियन
घुमेला
बाकिर ऊ केहू के लउके ना
बस गते-गते
चलत जाला आ कहानी लिखत जाला
तू,! हँ हँ तूहीं हमरा से घरी के ओह किनार प
मिलिहऽ,
जहवाँ कवनो समय बतावे वाला जन्त्र
ना होखे!
भाग, काल आ नियति से दूर !
एकदम दूर।

जिनगी चाक ह आ आदमी चक्की
हमरा गोड़ में कबो कवनो तरह के बन्हन
ना पड़े,
तोहरा लवटे के आस में कबो जंग ना लागे
भले चाक प कई गो माटी के बरतन
बिगड़ जाए
भले टूट जाए साइकिल के पहिया के
सैकड़ो तिल्ली
तू बस रहिहऽ नदी के कलकल धार बनि के
तेज़ लहर मत बनिहऽ
काहें कि तेज लहर जल्दिए बुता जाला
बाकिर नदी के कलकल
धार हरमेस बनल रहेला
तू उहे नदी के धार बनल रहिहऽ

◆ ◆ ◆

सुधीर मिश्र

केहू रुठे त.....

कृष्णा श्रीवास्तव
हाटा, कुशीनगर,
उत्तर प्रदेश

केहू रूठे ते केहू मनावल करे।
नेह से पीर मन के मेटावल करे।

पीछे भागे के चाहीं न ओकरे कबो-
जानवर जस जे पगहा तुरावल करे।

गाँठ रिसतन में कबहूँ पड़ी ना सुनS-
जो समरपन से हरदम चलावल करे।

दोसती में फरक कवनो नाहीं पड़ी-
ओहके बिसवास से गर निभावल करे।

दादा-माई के गोड़वा में बाटे सरग-
बाति अनमोल सबके बतावल करे।

रात करिया ई लमहर भी जाई गुजर-
आस के जोत दिल में जरावल करे।

इहवाँ जिनगी के "कृष्णा" कई रंग बा-
कवनो दुख देला कवनो हँसावल करे।

◆ ◆ ◆

राउर बात

सिरिजन के सफर निर्वाध रूप से जारी रहो, इ भोजपुरी खातिर शुभ रही आ भोजपुरिया समाज खातिर दिशाबोधक रही। पूरा टीम के बधाई अइसन पत्रिका के प्रकाशन खातिर।

सुदामा यादव, गाज़ीपुर, उत्तर प्रदेश

जय भोजपुरी जय भोजपुरिया परिवार के त्रैमासिक ई पत्रिका" सिरिजन " के टटका अंक हमनी के बीच आ गइल बा।गीत,गजल,आलेख,कहानी के संगे एह जय भोजपुरी जय भोजपुरिया के साहित्यक आँगन में बहुत कुछ बा।सब से बड़ बात पत्रिका के पाठक के सोझा ससमय परोस देवे के बा जेकरा खातिर संपादक मंडल आ पत्रिका परिवार साधुवाद आ बधाई के पात्र बा। एगो सुझाव एह पत्रिका के संभव होखे त मासिक करे आ हार्ड कॉपी में लावे के प्रयास करे के बा। एक दू पन्ना पाठकीय प्रतिक्रिया के होखे के चाहीं। बहुत सुंदर अंक बन पड़ल बा । एगो हमरो कविता शामिल कइल गइल बा। हृदय तल से आभार संपादक मंडल के।

कनक किशोर, रांची झारखण्ड

प्रभावकारी सम्पादकीय,सुन्दर आवरण आ हरेक विधा में उम्दा रचनन से सजल एगो सुन्नर, सहेजे जोग बा सिरिजन के पनरहवाँ अंक । पतरीका के निरन्तर बिकास खाति शुभकामना बा।

ए. के. मिश्रा, कटनी, बिहार

सिरिजन के पनरहवाँ अंक में कविता सब बढ़िया बाड़ी सं, बाकिर मनोज भाई के कहानी "भुलेटना" आ अनिरुद्ध जी पर लेख त बेजोड़ बा । बधाई रचनाकार सभे आ संपादक जी के।

सुनील कुमार पाठक, पटना, बिहार

तिलवा-तिलकुट से सुरसती तक के सहेजले सिरिजन के पनरहवाँ अंक नीमन लागऽता । रचनन के साज-बाजो बढ़िया बा।धराऊं अंक बा। बधाई सभ केहू के।

मार्कण्डेय शारदेय, पटना, बिहार

समसामयिक चित्र से सजल, भोजपुरी के अमर गीतकार आ कवि स्व.अंजन जी के यादगार उहां के रचना के साथे,नवकी कलम आ शक्ति स्वरूपा देवी लोग के रचना के जगहि देत ई सिरिजन के पनरहवाँ अंक सचहूं भोजपुरी संवसार खातिर साहित्य के अमरित ढरकावत घइली बा।

मदन मोहन पाण्डेय, पडरौना, कुशीनगर, उत्तर प्रदेश

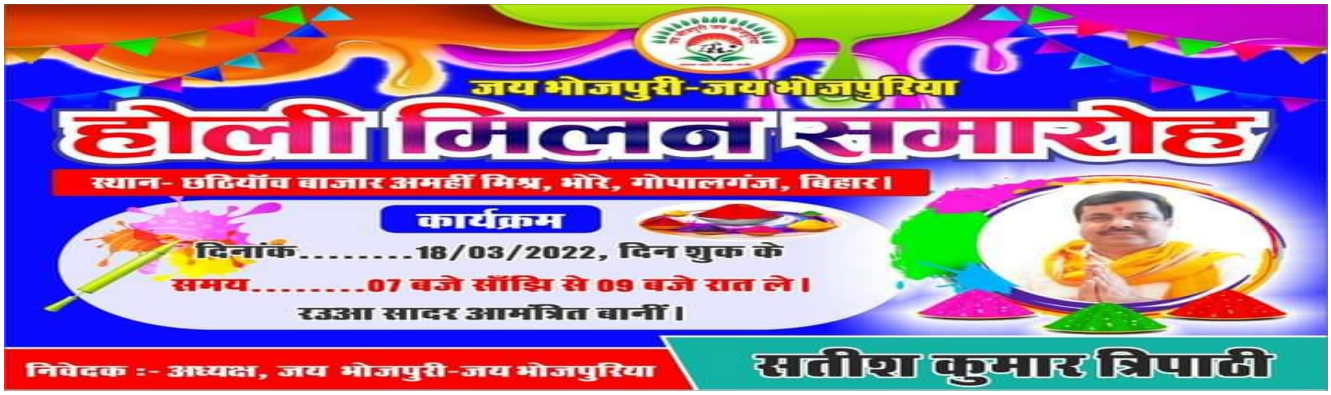

राग रंग मस्ती आ चिरकल, दरकल, टूटत, छिटात रिश्तन के सम्हारे, सुधारे, पोढ़ -बड़ियार करे के तेवहार होला फगुवा। हिदू पतरा के हिसाब से हर बरिस वसंत ऋतु में होली के तेवहार फागुन महीना के पूर्णिमा के ही मनावल जाला, एहू साल मनावल गइल । कोरोना के चलते पिछला दू बरिस से होली खाली कोरम पूरा करे खातिर मनावल गइल रहे, ओही कसर के पूरा करे खातिर जय भोजपुरी जय भोजपुरिया परिवार 18 मार्च 2022 शुक के छटियाँव बाजार,अमहीं मिश्र, भोरे, गोपालगंज, बिहार में होली मिलन समारोह के आयोजन कइले रहे। अपना संस्कृति संस्कार पर गौरव के भावना के जिन्दा राखे खातिर पारम्परिक रुप से गीत गवनई के साथ ई कार्यक्रम सम्पन्न भइल। एह कार्यक्रम में जय भोजपुरी जय भोजपुरिया परिवार के सवांग/सवांगी के साथे साथ स्थानीय गाँव के गणमान्य आम खास सब लोगन के भी भारी संख्या में उपस्थिति रहे। जमिके धमाल मचल। मौज मस्ती करत अबीर गुलाल उड़ल। लजीज व्यंजन के भी आनंद लिहल गइल। रकम रकम के रंगारंग प्रस्तुति दे के कलाकार लोग भी खूबे थपरी बटोरलन। संस्था के अध्यक्ष श्री सतीश कुमार त्रिपाठी सभे पधारल श्रोता गायक कलाकार लोग के होली के मुबारकबाद दिहनीं अउरी धन्यवाद ज्ञापन कइनीं। एकरा साथे कार्यक्रम के समापन भइल। जय भोजपुरी जय भोजपरिया । ◆ ◆ ◆

आपन प्रस्तुति देत कलाकार सब -1

आपन प्रस्तुति देत कलाकार सब -2

कार्यक्रम में उपस्थित स्थानीय गणमान्य लोग

कार्यक्रम समापन के बेरा के फोटो

◆ ◆ ◆

जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया

निहोरा

माईभाषा के सम्बन्ध जनम देवे वाली माई आ मातृभूमि से बा, माईभाषा त अथाह समुद्र बा, ओके समझल बहुत आसान काम नइखे। भोजपुरिया क्षेत्र के लोग बर्तमान में रोजी रोटी कमाए खातिर आ अपना भविष्य के सइहारे खाति अपनी माँटी आ अपनी भाषा से दूर होत चल जाता, ओहि दूरी के कम करे के प्रयास ह "सिरिजन" । जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया, आपन माँटी -आपन थाती के बचावे में प्रयासरत बिया इहे प्रयास के एगो कड़ी बा "सिरिजन" । भोजपुरी भाषा के लिखे आ पढ़े के प्रेरित करे खातिर एह ई-पत्रिका के नेंव रखाइल । "सिरिजन" पत्रिका रउवा सभे के बा, हर भोजपुरी बोले वाला के बा आ ओकरे खातिर बा जेकरा हियरा में माईभासा बसल बिया । ई रउरे पत्रिका ह, उठाईं लेखनी, जवन रउरा मन में बा लिख डाली, ऊ कवनो बिध होखे कविता, कहानी, लेख, संस्मरण, भा गीत गजल, हाइकू, ब्यंग्य आ भेज दिहीं "सिरिजन" के ।

रचना भेजे के पहिले कुछ जरूरी तत्वन प धियान देवे के निहोरा बा :

1. आपन मौलिक रचना यूनिकोड/कृतिदेव/मंगल फॉण्ट में ही टाइप क के भेजीं। फोटो भा पाण्डुलिपि स्वीकार ना कइल जाई।
2. रचना भेजे से पहिले कम से कम एक बार जरूर पढ़ीं, रचना के शीर्षक, राउर रचना कवन बिधा के ह जइसे बतकही, आलेख, संस्मरण, कहानी आदि क उल्लेख जरूर करीं । कौमा, हलन्त, पूर्णविराम प बिशेष धियान दीं। लाइन के समाप्ति प डॉट के जगहा पूर्णविराम राखीं ।
3. एकर बिशेष धियान राखीं कि रउरी रचना से केहू के धार्मिक, समाजिक आ ब्यक्तिगत भावना के ठेस ना पहुंचो। असंसदीय, फूहड़ भाषा के प्रयोग परतोख में भी ना दियाव, एकर बिशेष धियान देवे के निहोरा बा ।
4. राउर भेजल रचना सम्पादक मंडल के द्वारा स्वीकृत हो जा तिया त ओकर सूचना मेल भा मैसेज से दियाई ।
5. आपन एगो छोट फोटो, परिचय जइसे नाम, मूल निवास, बर्तमान निवास, पेशा, आपन प्रकाशित रचना भा किताबन के बारे यदि कवनो होखे त बिवरण जरूर भेजीं।
6. रचना भा कवनो सुझाव अगर होखे त रउवा ईमेल - sirijanbhojpuri@gmail.com प जरूर भेजी ।
7. रउरा हाथ के खिचल प्राकृतिक, ग्रामीण जीवन, रीति- रिवाज के फोटो भेज सकतानी। धियान राखीं ऊ फोटो ब्यक्तिगत ना होखे । ◆ ◆ ◆

जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया

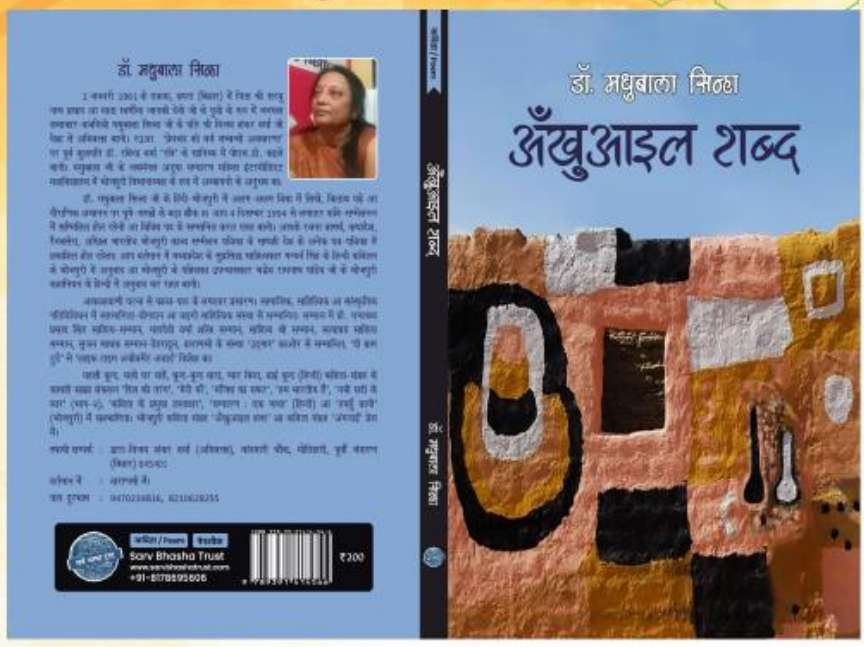

भोजपुरी साहित्य-संस्कृति के प्रचार-प्रसार, संरक्षण आ संवर्धन में भोजपुरी साहित्य के महत्वपूर्ण तारा डॉ. मधुबाला सिन्हा जी के अतुलनीय योगदान बा।

रउरा द्वारा भोजपुरी किताब किन के पढ़ल चाहे केहू के उपहार में देहल, भोजपुरी खातिर बड़हन योगदान रही।

किताब खातिर सर्म्पक करीं:

सर्व भाषा ट्रस्ट

मोबाइल नं.-+ 91-8178695606